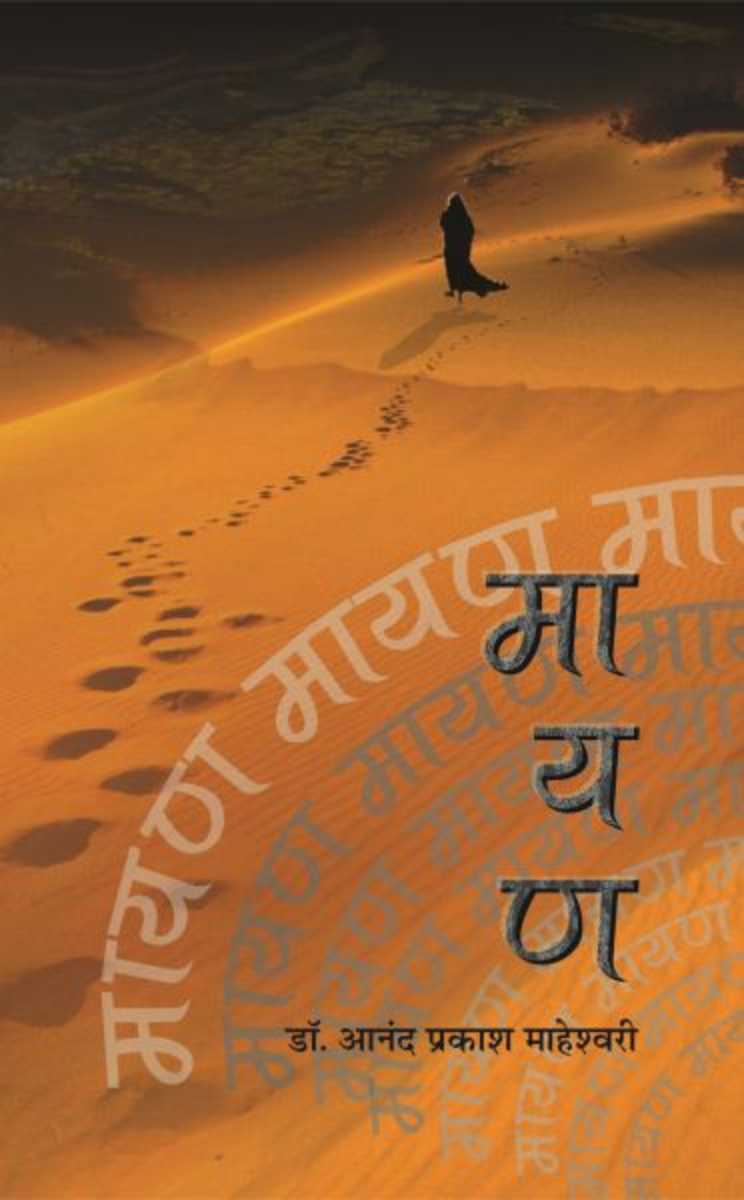
मायण
डॉ. आनंद प्रकाश माहेश्वरी

# मायण

# मायण

डॉ. आनंद प्रकाश माहेश्वरी

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
ISO 9001:2008 प्रकाशक

प्रकाशक • प्रभात प्रकाशन
4/19 आसफ अली रोड,
नई दिल्ली-110002
सर्वाधिकार • सुरक्षित
संस्करण • प्रथम, 2013
मूल्य • एक सौ पचास रुपए
मुद्रक • भानु प्रिंटर्स, दिल्ली

**MAYAN** *novel* by Dr. **A**nand Prakash Maheshwari Rs. 150.00
Published by Prabhat Prakashan, 4/19 **A**saf **A**li Road, New Delhi-2
e-mail: prabhatbooks@gmail.com ISBN 978-93-5048-270-4

‘माताश्री’ स्वर्गीया **कमला देवी** को
समर्पित, जो इस कथानक एवं इसमें
अंतर्निहित जीवन-दर्शन की सूत्रधार हैं।

# भाव समर्पण

जीवन के हर पल हर सोच की सबल साथी,
निराशा के क्षणों में भी ढाढ़स निरंतर बँधाती;
दीये और तूफान की अनोखी कहानी सुनाती,
हर काल में हर हाल में मुसकराना हमको सिखाती।

रूठ जाने पर मनाती कभी प्यार से निवाला बनाती,
संतृप्त होने तक हमारे हमको खिलाती खुद कुछ न खाती;
आँखों में रात काटकर भोर में हमको उठाती,
खुद रही वंचित वह किंतु हमको ज्ञानोदय कराती।

बाहरी खतरों से हमें ढाल बनकर वह बचाती,
अडिग रहने का हुनर शिल्पी सा भीतर तक गढ़ाती;
ओस की बूँदों सी ठंडक हर प्रभा के साथ लाती,
पाँव चादर में ही रखना पूर्ण निष्ठा से सिखाती।

गाँव की सीमाओं से परे जा शहर की शैली बताती,
भूल बचपन की अपनी व्यथाएँ हमको खेलों में रमाती;

जीतकर हम जब भी आते अपनी उमंग में झूम जाती,
जीवन के प्रत्येक पल में मयूरी सा उत्सव मनाती।

रुग्णता भुलाकर अपनी दूसरों का दु:ख बँटाती,
ढाँपकर सतत संताप अपने सबके अश्रु पोंछ जाती;
दूर करने को सभी की दिक्कतें बिन कहे ही जूझ जाती,
हो कितना भी बदरंग जीवन वृत्त उसको रंगों से सजाती।

तू क्या क्या न थी हम सबके लिए,
तू क्या क्या न बनी हम सबके लिए,
हाँ वो सबकुछ—
जो नहीं बन पाए हैं हम अभी तक
हे माँ!

**—बिमल**
**विनीता**
**सुरत**

# लेखकीय निवेदन

**मायण राजस्थानी में 'माँ' को कहते हैं। 'माँ' की व्याख्या किसी भी शब्द से परे है। यदि किसी रूप में अलौकिक शक्ति की दिव्यता अथवा प्रेम का इस पृथ्वी पर आभास संभव है तो उसका निकटतम स्वरूप 'जननी' ही हो सकती है।**

पूर्ण यथार्थ जानना बहुत ही मुश्किल होता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने आभास, दृष्टिकोण एवं विचारों के आधार पर तथ्यों को ग्रहण करता है।

वर्तमान कथानक परिदृश्यों के आधार पर यथार्थ को खोजने की एक कोशिश है। सुदूर गाँव में पली एक युवती कम उम्र में विवाह के उपरांत शहर आती है। जीवन के उतार-चढ़ाव झेलते-झेलते परिपक्व होती है, किंतु अंत में शारीरिक रूप से कई रोगों से ग्रस्त हो जाती है। जीवन की असली लड़ाई वह तब लड़ती है, जबकि उसको कैंसर हो जाता है।

कैंसर के उपचार से लेकर मरीज व उसके परिजनों की मन:स्थिति को छूती हुई यह कहानी एक जीवन-दर्शन तक पहुँचती है, जो कहानी के मुख्य पात्र का वजूद है। इसमें उसके कई परिजन निमित्त रहते हैं। सुख-दु:ख, सहयोग-असहयोग, आपा-धापी के सभी क्षण उसको निखारते चले जाते हैं। शारीरिक अक्षमता को वह दिमागी ताकत से और दिमागी शिथिलता

को अपनी अनन्य आस्था एवं भक्ति के सामर्थ्य से पार करती हुई मृत्यु-द्वार से आध्यात्मिक छलाँग लगाने में कामयाब होती है। यह वह अवस्था है, जिसके लिए हम सभी अपना जीवन परिपक्व करते हैं। जीवन की दौड़ के अंत में विजयी होने की चेष्टा करते हैं। यह अलग विषय है कि कौन व्यक्ति अपने लिए क्या लक्ष्य सँजोता है। इस कहानी के मूल पात्र ने अपने लिए जो एकमात्र सकारात्मक लक्ष्य निर्धारित किया, उसे पाने में उसने कोई कसर नहीं छोड़ी।

मायण राजस्थानी में 'माँ' को कहते हैं। 'माँ' की व्याख्या किसी भी शब्द से परे है। यदि किसी रूप में अलौकिक शक्ति की दिव्यता अथवा प्रेम का इस पृथ्वी पर आभास संभव है तो उसका निकटतम स्वरूप 'जननी' ही हो सकती है।

यदि आप मात्र मनोरंजन के लिए कोई कथा ढूँढ़ना रहे हैं तो यह पुस्तक कदाचित् खरी न उतरे। इस पुस्तक में विचार-मंथन का भी पुट है, जो इसे 'अकथा' बना देता है। इस अकथा में अपनी-अपनी रोचकता ढूँढ़ना पाठक के स्वयं के स्तर पर निर्भर करता है। मेरे इस निवेदन को यथोचित मान्यता प्रदान किए जाने का भी अनुरोध है।

इस 'अकथा' में ऐसे शब्दों का प्रयोग भी किया गया है, जो कि राजस्थान एवं उत्तर प्रदेश की स्थानीय भाषाओं में प्रायः बोले जाते हैं। चिकित्सीय दृष्टि से तकनीकी प्रकृति के भी कुछ अंग्रेजी शब्द उच्चारण के आधार पर देवनागरी में लिखे गए हैं। पाठकों की सुविधा हेतु चिह्नित शब्दों का निकटतम अर्थ पुस्तक के अंत में प्रस्तुत शब्दावली में निहित है।

यथार्थ को परिदृश्य के आधार पर लिखने में मैंने काल्पनिकता की कई हदों को भी छुआ है। किसी भी लेखनीय त्रुटि, विरोधाभास युक्त आकलन अथवा अभिव्यक्ति दोष के प्रति मैं अत्यंत ही दीनभाव से क्षमाप्रार्थी हूँ। आगे ईश्वर मेरी मदद करे।

लखनऊ
01 जनवरी, 2013

**—आनंद प्रकाश माहेश्वरी**

# एक

**जीवन कुछ नहीं, मात्र अहसासों का एक पुलिंदा है। किसी को किसी रूप में मिलता है, तो किसी को कोई और रूप में, सबकी सृष्टि अपने-अपने अंदर है। बाहर कुछ नहीं है। वही मकान 'घर' दिखता है और न मानो तो मात्र 'खँडहर'।**

वह घुप अँधेरी रात में अचानक घबराकर उठ गई थी। पसीने से तरबतर काँपती हुई। उसकी सुबकियाँ रात के सन्नाटे को चीरती हुई एक असीम वेदना को अपने चारों ओर लपेटे हुई थीं। उसके ओठों से बार-बार यही निकल रहा था, 'मालिक, किस बात की सजा दे रहा है मुझको?' उसकी बेसहारा चीत्कारों ने बगल में सो रहे उसके बेटे को झंझोड़ दिया। वह घबरा उठा। उसने पूछा, ''क्या बात है?'' इसके पहले कि वह कुछ समझ पाता, मायण उससे लिपट गई। उसकी सिसकियाँ अब तेज हो गई थीं। सहारा पाकर वह बिफरकर रो पड़ी। दिल्ली की एक सरकारी कॉलोनी की पहली मंजिल के इस कमरे से निकलनेवाली चीखों को शायद बाहर किसी ने नहीं सुना। सड़क पर चलनेवाले ट्रकों की आवाज में उसकी वेदना खो गई। जहाँ उसके और सगे-संबंधी रहते थे, वहाँ तक वह आवाज कदाचित् पहुँच ही नहीं पाई। वैसे भी महानगर

में रात में वातानुकूलित कमरों में बाहर से आवाज जाना मुश्किल है।

एक ही पल में किस प्रकार सारे अहसास, सारी संवेदनाएँ बदल जाती हैं। अभी दस दिन पहले ही तो खुशी-खुशी हरिद्वार गई थी। परमार्थ आश्रम में स्वास्थ्य लाभ के लिए पिछले 2-3 सालों से जा रही थी। मालिश करवाकर, अपना वजन कम करके अपनी कमर एवं घुटनों के दर्द से कुछ दिन निजात पा लेती थी। प्राकृतिक चिकित्सा से उसे लाभ हो रहा था। इस बार वह अपनी बिटिया अंजली के साथ गई थी। हरिद्वार का अपना एक महत्त्व है। गंगा किनारे प्रकृति के मनोरम दृश्यों से घिरा हुआ यह तीर्थस्थल प्रत्येक व्यक्ति को उसके स्तर के अनुसार अलग-अलग बोध कराता है। आस्था की इस नगरी में साधु से लेकर कपटी तक सभी पलते हैं।

मालिश करते-करते परिचारिका को मायण के स्तन पर गाँठ का आभास हुआ। मायण से पूछा—

''माताजी, यह गाँठ कब से है?''

''3-4 महीने से।'' मायण ने जवाब दिया।

''क्या आपने किसी को बताया?''

''नहीं तो, क्यों?''

''कुछ नहीं माँजी।'' परिचारिका चुप हो गई।

''अरे, रोज गरम पानी से सेंक कर लेती हूँ। ठीक हो जाएगी।'' मायण ने कहा।

परिचारिका के दिमाग में कई बातें कौंधती रहीं। इस 73 वर्षीय वृद्धा को मैं क्या बताऊँ कि इस उम्र में स्तन पर गाँठ का क्या मतलब हो सकता है। काश, ऐसा न हो। उसने मायण से पूछा, ''आपके घर में कौन-कौन हैं?'' मायण ने सब बताया। उसके पति सरकारी अफसर रहे हैं। एक बेटा भी अफसर है। दूसरे दो इंजीनियर हैं। शायद उसने

सोचा होगा कि इतने पढ़े-लिखे घर से होने के बावजूद यह वृद्धा इतनी नासमझ क्यों है। परिचारिका को याद आया कि मायण अपनी बेटी के साथ आई है। वह दौड़कर गई और मायण की बेटी को जाकर बताया। उसे परमार्थ आश्रम में चिकित्सक से भी परामर्श लेने को कहा।

मायण की बिटिया अंजली ने समझदारी दिखाई। तत्काल डॉक्टर से परामर्श करके मुद्दे को समझा और बिना वक्त गँवाए अपने भाई को दिल्ली फोन किया—

''विनीत, हम लोग आज ही बस से वापस आ रहे हैं।''

''क्यों, क्या हुआ?'' विनीत ने चिंता व्यक्त की।

''मालिशवाली ने बताया कि मायण के स्तन पर दो-तीन महीनों से गाँठ है। तब मैंने भी देखा। मुझे भी माँ ने पहले नहीं बताया। ठंडा-गरम पानी डालकर सेंक कर रही है। हँस के टाल दे रही है। तू आज ही रात का समय डॉक्टर से ले ले। यह गाँठ कैसी भी हो सकती है।'' अंजली ने कहा।

''अच्छा ठीक है। कहाँ उतरोगी? मैं गाड़ी भेज दूँगा। डॉक्टर से समय ले रहा हूँ।'' विनीत बोला।

विनीत ने अपने परिचित डॉक्टर को फोन किया। दिल्ली शहर में यूँ ही किसी को कहाँ दिखाएँ। बिना पहचान के महानगर अकसर अनजान ही रहता है। डॉ. मित्र बोले, ''माताजी रात में जैसे ही पहुँचती हैं, उन्हें ले आना। मैं देर रात तक क्लीनिक में बैठता हूँ।''

शाम के समय दिल्ली जैसे महानगर में अनगिनत लोग सड़क पर होते हैं। हर प्रकार की आपा-धापी। जगह-जगह अवरुद्ध ट्रैफिक। उस पर हॉर्न का शोर एवं धुआँ उगलते वाहन। मायण की बस दिल्ली में आ तो गई, पर बस स्टैंड से घर तक आने में कई बाधाएँ थीं। एक तो लंबा सफर, दूसरा ट्रैफिक में फँसने पर धीरे-धीरे बढ़ती थकान व खीज।

उधर यह डर था कि डॉक्टर कहीं क्लीनिक से उठ न जाए। विनीत दोनों में सामंजस्य बिठाता हुआ कार के ड्राइवर को गाइड करता रहा कि किधर से आए। मायण ने कहा कि देर हो गई है। वह अभी घर नहीं जाएगी। सीधे डॉक्टर के यहाँ ही जाएगी। मन में शायद यह पसोपेश थी कि पहले चेक-अप करवाकर देख लूँ, कुछ चिंताजनक तो नहीं। यह भी खयाल आया कि जिस काम के लिए सुबह से बस में सफर कर रही है, वह पहले हो जाए, घर जाकर तो आराम ही करना है। मायण को पहुँचते-पहुँचते बहुत रात हो गई। सारे मरीज जा चुके थे। डॉक्टर के घर से भी फोन आए। विनीत बैठे बार-बार अनुरोध करते रहे कि बस कुछ देर और इंतजार कर लें।

मायण गाड़ी से उतरी। विनीत दौड़कर बाहर अगवानी में आया। मायण ने बड़े ही आशंकित भाव से देखा। विनीत ने आगे बढ़कर माँ को आगोश में लिया और बोला, ''कुछ नहीं होगा, बस अपना शक दूर कर लेते हैं।'' मायण ने डॉक्टर के क्लीनिक पर नजर डाली। डॉ. राजेश गुप्ता की तख्ती लगी थी। आधे खुले दरवाजे से अंदर प्रतीक्षाकक्ष की कुरसियाँ दिख रही थीं, जो खाली थीं। अपनी लाठी के सहारे धीरे-धीरे वे दो सीढ़ियाँ चढ़कर क्लीनिक में घुसीं। डॉक्टर गुप्ता ने तपाक से उठते हुए मायण को प्रणाम किया। कुरसी खिसकाते हुए बोले, ''माताजी, आइए, बैठें।'' इसी समय अंजली भी गाड़ी से उतरकर पीछे-पीछे आ गई। विनीत ने बताया, वह उसकी बहिन अंजली है। नमस्कार करके वह भी डॉक्टर की ओर देखती रही। उसकी आँखें मानो कह रही थीं कि मेरी माँ को कुछ नहीं होना चाहिए।

डॉक्टर गुप्ता बड़े अनुभवी चिकित्सक थे। माताजी को हलका महसूस कराते हुए धीरे-धीरे उनको बातों में रमाने लगे, ताकि खुलकर वे अपना हाल बताएँ। मायण को वाकई अब थोड़ा-थोड़ा सुकून लगने

लगा। डॉक्टर गुप्ता का एक सहायक तब तक सबके लिए चाय भी ले आया। विनीत बोला, ''इनके कप में चीनी न डालना।''

''क्यों, माताजी चीनी नहीं लेतीं क्या?'' डॉक्टर गुप्ता ने पूछा। विनीत ने धीरे से कहा, ''डायबिटीज है।''

चाय की पहली चुस्की लेते हुए मायण ने हँसते-हँसते कहा, ''डॉक्टर साहब, आपकी लिस्ट भर जाएगी। मुझे बहुत बीमारियाँ हैं।''

डाक्टर गुप्ता हँसे, ''अरे, आपको देखकर कोई यह कह ही नहीं सकता। आप तो एकदम फिट लगती हैं।''

मायण चाय पीकर अब अपने परिवेश का बोध करने लगी थी। कमरे की सफेद दीवारों को गरदन घुमाकर देखा। बाईं ओर दीवार पर लगी घड़ी रात के साढ़े दस बजा रही थी। उसी के बगल में एक दवा का कलेंडर लगा था, जिस पर लिखा था—हम इलाज करते हैं, ईश्वर ठीक करता है। मायण ने गौर से उसे पढ़ा और फिर डॉक्टर की ओर देखा। डॉक्टर गुप्ता अपने मोटे-काले चश्मे से मायण को लगातार देख रहे थे। जैसे ही नजरें मिलीं, डाक्टर गुप्ता बोले, ''माताजी, आपका ब्लड प्रेशर लेता हूँ।'' ब्लड प्रेशर लेते-लेते मायण से और भी बातें पूछते रहे। ब्लड प्रेशर भी बढ़ा हुआ था। डॉक्टर गुप्ता ने यह उचित समझा कि मरीज को आगे चेक करने से पहले उसकी पूरी हिस्टरी जान लें।

इस समय विनीत ने थोड़ा हस्तक्षेप किया। बोला, ''मैं इनकी अभी तक की बीमारियों से अवगत हूँ। लगभग 15-16 साल पहले हलका हार्ट अटैक हुआ था। रिकॉर्ड नहीं है, पर मुझे मालूम है। कई सालों से हाइपर-टेंशन की मरीज हैं। थायराइड की समस्या भी है। कमर में एल-3 व एल-5 पर स्लिप-डिस्क हो चुकी है। घुटनों को गठिया[1] ने जकड़ रखा है।''

''सबको मैंने तंग कर रखा है।'' मायण बोली।

''नहीं-नहीं, माताजी, सभी को ये समस्याएँ हैं और आप तो इतनी हँसमुख हैं।'' डॉक्टर गुप्ता ने मंद-मंद मुसकराकर ढाढ़स दिया और अपने लेपटॉप पर मरीज की हिस्टरी लिखते रहे। एक मिनट तक मौन छाया रहा। लेपटॉप पर लिखते-लिखते मौन तोड़ा, ''ब्लड प्रेशर तथा शुगर की कोई चार्टिंग की है?''

''ब्लड प्रेशर 160-170 तक जाता है। शुगर फास्टिंग 150 तथा खाने के बाद 250 तक रहती है। दोनों की गोलियाँ लेती हूँ। ला मेरा बैग दे।'' मायण ने डॉक्टर गुप्ता को जवाब देते-देते अंजली से कहा।

बैग से दवा का डिब्बा निकालते हुए डॉक्टर को बड़े मजाकिया अदांज में बोलीं, ''रोज की चौदह दवाइयाँ लेती हूँ।''

विनीत ने मायण की मेडिकल हिस्टरी की फाइल कई सालों से बना रखी थी। एक्सरे भी सँभालकर रखे थे। कई तरह की बीमारियाँ थीं, सो यह जरूरी भी था। विनीत ने धीरे से फाइल डॉक्टर गुप्ता की ओर बढ़ा दी। पिछले कई सालों के परचे थे। डॉक्टर गुप्ता शांत भाव से एक-एक पन्ना पढ़ते गए और अपने नोट्स बनाते रहे। पूरा देखने के बाद गंभीर मुद्रा में बोले, ''आइए माताजी, अब आपकी गाँठ देख लूँ।''

बाएँ स्तन पर गाँठ को महसूस करते हुए पूछा—

''कितने दिन से है?''

''यही कोई 3-4 महीने से।'' मायण बोलीं।

''किसी को अभी तक दिखाया नहीं?''

''नहीं।''

''क्यों?''

''सोचा ठीक हो जाएगी। नहाते वक्त गरम पानी का सेंक कर लेती हूँ। कोई दर्द नहीं है।''

''क्या पहले कैंसर की कोई हिस्टरी रही है ?''

''नहीं।''

''आपके परिवार में ?''

''हाँ, माँ को बच्चेदानी का कैंसर हुआ था। एक गाँठ मेरे पहले भी जबड़े के नीचे हुई थी।'' अपनी गरदन उठाते हुए मायण ने ऑपरेशन के निशान दिखाए।

''पर गाँठ में कुछ नहीं निकला था। कई साल हो गए। 1981-82 की बात है, जब ये एम.बी.ए. कर रहा था।'' विनीत की तरफ ममत्व भरी आँखों से देखते हुए मायण बोली।

''अच्छी बात है, माताजी। इसमें भी कुछ नहीं निकलेगा। पर कुछ चेक-अप अपनी संतुष्टि के लिए करा लेता हूँ।''

डॉक्टर गुप्ता ने एक्सरे तथा मेमोग्राफी के लिए लिखा। बोले, ''यह रिपोर्ट आ जाए तो आगे तय करेंगे। कल ही कराओ।''

विनीत ने अंजली से कहा कि मायण को गाड़ी में बिठाए। वह डॉक्टर से पूरी बात समझकर आएगा। मायण के जाने के बाद डॉक्टर गुप्ता ने कहा कि मामला गंभीर हो सकता है। हो सके तो आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में विशेषज्ञों को भी दिखा दें। डॉक्टर को धन्यवाद देकर विनीत गाड़ी पर लौटा। मायण ने पूछा, ''मेरे आने के बाद डॉक्टर ने क्या बताया ?''

''कुछ नहीं।'' विनीत बोला।

''कुछ छिपा रहे हो क्या ?''

''नहीं, नहीं।''

''अरे, ऐसी गाँठ पहले निकलवा चुकी हूँ। तू घबरा मत।'' मायण ने विनीत की चिंता को भाँपते हुए कहा। शायद माता को अपनी परेशानी से ज्यादा पुत्र के सुकून की चिंता थी।

रात साढ़े बारह बजे तीनों सुनसान गलियों से गुजरते हुए घर की ओर बढ़े। रात के सन्नाटे को चीरती हुई कई गाड़ियाँ बगल से गुजर गईं। कुछ में तेज संगीत बजाते हुए नवयुवक खुशी से झूमते दिखे। दूर से कुत्तों के भौंकने की आवाजें भी रह-रहकर आ रही थीं। इस सब के बीच ये तीनों अपनी ही उधेड़बुन में चुपचाप चले जा रहे थे।

''अरे, इतना मुँह क्यों लटका लिया। मुझे कुछ नहीं हुआ है।'' मायण ने विनीत एवं अंजली को थपथपाते हुए कहा। किसी ने किसी को फिर कुछ नहीं कहा। सब अपने मन में बहुत कुछ समझने की कोशिश कर रहे थे।

घर पहुँचकर गाड़ी से उतरे। विनीत मायण का हाथ पकड़कर सीढ़ियों पर सहारा देने लगा। विनीत को लगा कि मायण की पकड़ कमजोर हो चली है। ऊपर से वह हँस रही है, पर मन से शायद आशंकित है।

देर हो गई थी। तीनों ने कुछ नहीं खाया। मायण के कहने पर परिचारक सभी के लिए दूध ले आया। दूध पीते-पीते अगले दिन का प्रोग्राम तय किया गया। अचानक अंजली सुबक पड़ी। विनीत ने कहा, ''हिम्मत रखो। सब ठीक होगा।''

इसी बीच मायण ने टोका, ''फोन करके पिताजी को सब बता दो।''

अंजली तत्काल बोली, ''अभी थोड़ी देर पहले मेरे मोबाइल पर फोन आया था। मैंने सब बता दिया है।''

रात और गहरी हो चली थी। अंजली मायण को सुलाने ले गई। विनीत भी अपने कमरे में चला गया। अगले दिन की योजना बनाते हुए कब सो गया, पता ही नहीं चला।

सुबह मायण ने लगभग सात बजे विनीत को उठाया। विनीत गहरी

नींद में था। उठा नहीं। मायण हलके हाथ से हाथ-पाँव दबाने लगी। विनीत थोड़ी देर में नींद की खुमारी में ही उठ बैठा।

''अरे, आप आराम करो। मैं ठीक हूँ।'' विनीत बोला।

''अच्छा, चलो चाय पी लो।'' मायण ने स्नेहपूर्वक कहा।

चाय पीकर सभी जल्दी-जल्दी तैयार हो गए। हॉस्पिटल जाना था। मायण के टेस्ट होने थे। उसने कुछ नहीं खाया। अंजली ने थोड़ा नाश्ता पैक कर लिया, यह सोचकर कि टेस्ट होते ही माँ को कुछ खिला दूँगी। सभी के मन में आशंकाएँ थीं कि पता नहीं क्या होगा। घर से जब गाड़ी में चले तो सभी के अहसास बदले हुए थे। गाड़ी की आवाज भी शोर सा लग रही थी। ऐसा लगा कि अचानक धूप तेज हो गई है। सड़क आगे की तरफ भाग रही है। भीड़ बढ़ती जा रही है, जिसे चीरकर आगे बढ़ना है। भीड़ के अंत में शायद कोई···!

थोड़ी देर में अस्पताल पहुँच गए। आयुर्विज्ञान संस्थान का नाम सुना था। आज देख भी लिया। बहुत भीड़ थी। अपनी-अपनी पीड़ा लिये गरीब से अमीर सभी इधर-उधर कुछ उम्मीद तलाश रहे थे। बहुमंजिले भवन के अंदर कहाँ जाएँ, यह मालूम नहीं था। विनीत ने अपने मोबाइल पर डॉक्टर से पूछा कि उनका कमरा कहाँ है। तभी विनीत का एक सहायक भी आ पहुँचा, जिसे तहकीकात के लिए पहले से ही भेज दिया था। मायण धीरे-धीरे चलते हुए लिफ्ट तक पहुँची, फिर वहाँ से तीसरे मंजिल पर। यहाँ डॉक्टर अनुपम का कमरा था। थोड़ी देर इंतजार करना पड़ा। इंतजार के दौरान मायण कई रोगियों को देखती रही। बीच-बीच में विनीत व अंजली से कहती रही, ''चिंता मत करो, मुझे कुछ नहीं होगा। मालिक रक्षक है।'' मायण शायद यह कहकर अपने को दिलासा दे रही थी।

इसी बीच मायण का नाम डॉक्टर के सहायक ने पुकारा। दरवाजा

खोलकर तीनों अंदर गए। चश्मा लगाए सफेद कोट पहने डॉक्टर अपने लैपटॉप पर कुछ काम कर रहे थे। शायद पहले जो मरीज गया था, उसका विवरण रिकॉर्ड में डाल रहे थे। बगल में एक सहायक इंटरनेट पर कुछ खोज रहा था। सफेद रंग की कमरे की दीवारें वहाँ व्याप्त मौन को और सघन बना रही थीं। तीनों साँसें रोककर खड़े हो गए। डॉक्टर ऊपर देखें तो नमस्कार करें। कमरे की दीवारों पर लगी तस्वीरें डॉक्टर अनुपम की डिग्रियों एवं खिताबों को बयान कर रही थीं।

अचानक डॉक्टर ने सिर उठाकर कहा, ''अरे माताजी, बैठिए, आप खड़ी क्यों हैं?''

विनीत ने बढ़कर हाथ मिलाया और अपना परिचय दिया। अंजली का परिचय कराया। विनीत ने डॉक्टर गुप्ता द्वारा बनाई गई ब्रीफ आगे बढ़ा दी, जिसे डॉक्टर अनुपम ने बड़े ध्यान से पढ़ा। फिर मायण की तरफ रुख करके बोले, ''माताजी, आप जरा इस टेबल पर लेट जाएँ।'' परदा खिसकाकर काफी देर मायण का परीक्षण करते रहे। डॉक्टर व मायण का वार्त्तालाप अंजली व विनीत को साफ सुनाई दे रहा था। मायण ने जो भी डॉक्टर गुप्ता को बताया था, वही यहाँ भी दोहराया। डॉक्टर अनुपम ब्रेस्ट कैंसर के पुराने चिकित्सक रहे हैं। कई ऑपरेशन कर चुके थे। गाँठों को छूकर कदाचित् भाँप गए थे। पर व्यवहार-कुशल भी थे। बोले, ''माताजी, आपको कुछ नहीं हुआ है। फिर भी थोड़े से टेस्ट करा लेते हैं। आप समय से आ गई हैं। कुछ ऊँच-नीच भी होगी तो मैं हूँ।''

मायण ने जवाब दिया, ''इसकी तो आप चिंता न करें। सबसे बड़ा डॉक्टर ऊपरवाला है। जो मालिक की मौज होगी वह होगा।''

''आप सही कह रही हैं, माताजी। बस महामृत्युंजय का जाप करें। सब ठीक होगा। हम लोग तो केवल इलाज करते हैं। ठीक तो वही करता है।'' डॉक्टर अनुपम बोले।

डॉक्टर अनुपम ने विनीत की तरफ देखते हुए कहा कि कुछ टेस्ट लिख रहे हैं सो करवा लें। रिपोर्ट आने पर आगे तय करेंगे। फिर बोले, ''मेमोग्राफी व एफ.एन.ए.सी. दोनों करा लेते हैं। जरूरत हुई तो बाद में बायप्सी कराएँगे। एफ.एन.ए.सी. के लिए मैं ही सैंपल ले लेता हूँ। आप माताजी को माइनर ओ.टी. में ले जाएँ। मेमोग्राफी दूसरी बिल्डिंग में होती है। मैं फोन कर देता हूँ। माताजी को ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ेगा।''

डॉक्टर अनुपम की भलमनसाहत से सभी खुश थे। उन्होंने एफ.एन.ए.सी. करके खुद सैंपल ले जाकर लैब में दिया। बोले, ''मैं कोई खतरा नहीं लेता। ये लोग लापरवाही कर देते हैं। सैंपल पलट जाने पर रिपोर्ट गलत हो जाएगी। सैंपल पर पूरा विवरण भी अपने सामने लिखवाता हूँ।''

डॉक्टर को धन्यवाद देकर तीनों लौट आए। रात में मेमोग्राफी भी कराई। दोनों रिपोर्ट अगले दिन मिलनी थीं। तीनों के अंदर कोई-न-कोई कोलाहल था। पर ऊपर से सभी शांत दिखने की चेष्टा कर रहे थे। एक अनहोनी की आशंका और उसके नकारने की संभावना! यदि कैंसर निकला तो? नहीं, नहीं, ऐसा नहीं होगा। अजीब सी स्थिति थी।

मायण को इसका अहसास हो चुका था कि सबकुछ ठीक नहीं है। देर रात तक सभी रिश्तेदारों के फोन आते रहे। किसको क्या बताते? सभी को झुठलाते रहे। पर जिसके साथ हादसा घटित होता है, वह स्वयं को कैसे झुठलाए। संभवत: मायण इसी पसोपेश में न जाने कब सो गई। अर्ध-चेतन मस्तिष्क फिर भी काम कर रहा था। कैंसर का मतलब था कि देर-सबेर सभी को तिलांजलि देकर अचानक चले जाना है। शायद अलविदा कहने का भी अवसर न मिले।

और सुबह जब विनीत के सामने मायण की आशंकाएँ चीत्कार

बनकर उभरीं तो वह समझ नहीं पाया कि क्या करे। अंजली को उठाना नहीं चाहता था। वह दूसरे कमरे में सो रही थी। दो दिन की थकी-हारी थी। वह उठी तो वह भी मायण के साथ रोने लगेगी। दो-दो को शायद वह न सँभाल पाए। विनीत ने मायण को चुप कराने के लिए ऊँची आवाज का सहारा लिया। बोला—

''क्या यही आस्था आपकी अपने इष्ट में है। सब्र करो। उसकी मरजी के बिना कुछ नहीं होता। यदि वह कुछ चाहता है तो होने दो। कैंसर भी।''

''मैं सब समझती हूँ लाला। पर मन नहीं मानता।''

''ठीक है, मालिक का नाम लो।''

मायण विनीत से लिपटकर निढाल हो गई। मायण के पेट में गैस बनने लगी थी। विनीत ने उन्हें लिटाया और सिर व हाथ-पाँव दबाता रहा। कुछ प्रेशर प्वॉइंट का ज्ञान था। दबाने से कुछ राहत मिली। मायण ने सिर पर बाँधने का कपड़ा माँगा और फिर लेट गई। थीड़ी देर में हलके-हलके खर्राटे लेने लगी।

कोई भी हादसा होता है तो स्मृतियों में विभिन्न क्षण चलचित्र की भाँति जहन से गुजर जाते हैं। विनीत बैठा-बैठा मायण का चेहरा देखता रहा। राजस्थान के एक सुदूर गाँव से मायण आई थी। महाजन परिवार में नाजों से पली मायण को शादी से पहले दुनियादारी का पता ही नहीं था। अपने माँ-बाप की अकेली संतान थी। लेकिन बचपन से बहादुर थीं। गाँव में जब डकैत आए थे, मायण तब बच्ची थी, तो अपनी माँ के साथ दूसरी मंजिल से नीचे कूदकर उनसे भिड़ गई थी। वाद-विवाद किया। चौदह साल की अवस्था में शादी होकर ससुराल आ गई थी। रंग से श्यामल थीं। जाहिर है कि वर्ण प्रधान समाज में तनिक तिरस्कृत हुई, किंतु अपने व्यवहार एवं मेल-जोल से उसने धीरे-धीरे अपनी जगह

बना ली। विनीत अपने ननिहाल में ही बचपन में अधिकांशत: पला-बढ़ा। पहले के समय बच्चे ज्यादा होते थे। कुछ को ननिहाल या दादेरे में भेज दिया जाता था। विनीत की कई यादें अपने ननिहाल से जुड़ी थीं। मायण ने अपने पीहर के बारे में बचपन से लेकर शादी तक की सब घटनाएँ भी अपने बच्चों को बता रखी थीं। चार बच्चों के इस परिवार में मायण पर बहुत काम आ गया था। विनीत के पिता सरकारी मुलाजिम थे। आमदनी सीमित थी। सुबह जल्दी उठकर पानी भरना। नल कब बंद हो जाए, पता नहीं। पानी नहीं आया तो दूर बावली से सिर पर पानी लाना होता था। फिर घर का सब काम। चौका, बरतन, झाड़ू-पोंछे से लेकर कपड़े धोना। अकसर अपना गुस्सा सोटा पीटते हुए गंदे कपड़ों पर निकाल लेती थी। खरीददारी भी करनी होती थी। बच्चों को गोदी में लेकर चट निकल जाती। सबको खिलाने के बाद सब्जी नहीं बची तो भगोनी खरोंचकर मसाला निकाल लिया या फिर नमक-मिर्च के पाउडर में नीबू निचोड़कर पेस्ट बनाया और दो रोटी खा लीं। तंगी के दिनों में फेंका कुछ नहीं जाता था। कुछ सड़ भी गया तो उतना हिस्सा निकालकर शेष खा लिया। किसको खयाल था कि बासी खाने से कैंसर भी पनप सकता है। ऊँच-नीच में कई साल निकल गए। सबको खुश रखने में उस पर कई दिक्कतें आईं। रिश्तेदारों से कभी प्यार मिला तो कभी जलालत। हाइपरटेंशन, डाइबिटीज की बीमारियाँ कब घर कर गईं, पता नहीं। बीच में एक बार हृदय को भी धीरे से झटका लगा। गरदन और कमर की हड्डियाँ भी बोल गईं। घुटनों को गठिया ने पकड़ लिया। थायराइड ने भी नहीं छोड़ा। सब बीमारियाँ होने के बावजूद हँसमुख थीं। अपने इष्ट में घनघोर भरोसा रहा। रोज सुबह उठकर प्रार्थना करना, रात को सोते समय ईश्वर से अपने गुनाहों की माफी माँगना, सोने के पहले अपने पति व बच्चों के दु:ख-दर्द का निदान करना इत्यादि उसकी

दिनचर्या के अभिन्न अंग बन गए थे। पता नहीं केवल 4-5 घंटे ही सोकर फिर सुबह कैसे फुरती से काम पर लग जाती थी। विनीत को ध्यान है, ईंधन नहीं होता तो कोयले में मिट्टी मिलाकर लड्डू भी बनाती थी। उसको फिर जलाया जाता था। आज किसी से कहो तो शायद हँसेगा। पर यह सच है कि उसने बहुत कठोर जीवन जिया था। कई प्रकार की ललक मन में रखे हुए थी। उन्हें कभी उभरने नहीं दिया। कई दफा तो महीने के अंत में पाँच-पाँच रुपए उधार लेकर पूरा हफ्ता चलाती थी। ऊपर से उधार के ताने अलग। बच्चे जब कमाने लगे तो कुछ राहत हुई। तब उनसे अपनी दबी हुई इच्छाएँ कभी-कभी व्यक्त करती थी। 'पता है, आज जो घड़ी सुनहरे 'रिस्ट बैंड' के साथ देखी थी, वह मैंने तुम्हारे पिताजी से बारह साल पहले माँगी थी। वे खरीदने गए थे। पर महँगी थी, वापस चले आए,' गोरखपुर में मायण ने विनीत से कहा भर था और वह उसी दिन घड़ी खरीद लाया और मायण के हाथ में पहना दी। मायण के चेहरे पर व्याप्त खुशी देखकर वह कितना मग्न हुआ था। जो-जो ख्वाहिशें मायण की अधूरी रहीं, बच्चे उन्हें इसी तरह पूरा करते रहे। मायण को घूमने का भी शौक था। कश्मीर से कन्याकुमारी तक हर जगह गई थी। संदूक व कनस्तर में हर सामान लेकर ट्रेन से चलती थी। चलती-फिरती रसोई भी साथ रहती थी। सस्ती जगह हो या महँगी, उसका घूमने का अंदाज नहीं बदला। इस सब में खास बात जो रही, वह थी साल में पाँच-छह बार सपरिवार आगरा जाकर सतसंग में शरीक होना और अपने इष्ट की सेवा करना। उसकी यह निष्ठा अटूट रही। इसके लिये पिताजी ने भी आर्थिक तंगी को कभी आड़े नहीं आने दिया। वही मायण जो पति व बच्चों को खुश देखकर खुद खुश हो लेती थी, आज सुबक-सुबक कर पता नहीं क्यों इतना रोई और फिर अर्धचेतन अवस्था में चली गई।

विनीत का मन भटकने लगा था। यह गाँठ जो आज डॉक्टर ने महसूस की है, जिसका सैंपल भी टेस्ट के लिए चला गया है, यह मन के आसपास क्यों उभर आई है। ऊपर से हँसती-खिलखिलाती मायण को किस प्रकार यह भीतर-ही-भीतर उद्वेलित कर दे रही है। बहुत कुछ अनकहे ही फूट पड़ा है। बहुत सी तीखी बातें, कटुताएँ और प्रसंग उसे बींधने लगे थे। भीतर कब, क्या, क्यों कैसे पलने लगता है, इसी में तालमेल बिठाते हुए उसने लाड़ से मायण को पुचकारा और बोला, ''उठो, चलना होगा।'' घड़ी में सुबह के नौ बज चुके थे। विनीत के अंदर न जाने कब एक माँ ने जन्म ले लिया और न जाने कब मायण उसके समक्ष एक कोमल बच्चे में बदल गई। जीवन कुछ नहीं, मात्र अहसासों का एक पुलिंदा है। किसी को किसी रूप में मिलता है तो किसी को कोई और रूप में। सबकी सृष्टि अपने-अपने अंदर है। बाहर कुछ नहीं है। वही मकान 'घर' दिखता है और न मानो तो मात्र 'खँडहर'।

□

# दो

**कौन किसको कैसे बताए कि जानलेवा बीमारियों से ग्रसित मरीजों को दवा से ज्यादा जरूरत होती है मनोवैज्ञानिक संवेदनाओं की। प्यार और अपनेपन की।**

आयुर्विज्ञान संस्थान में सुबह से ही हजारों की संख्या में मरीज पहुँच जाते हैं। वहाँ जाकर लगता है कि हिंदुस्तान में आम आदमी के लिए 'स्पेशलिस्ट हेल्थ-केयर'[2] की कितनी कमी है। गरीब-से-गरीब भी किसी-न-किसी उम्मीद में वहाँ पहुँचता है। शायद इलाज हो जाए। प्राइवेट अस्पतालों में तो मध्यम आय परिवारों को भी पसीने आ जाते हैं। एक बार बिल बनना शुरू होता है तो लाखों पर ही रुकता है। इस संस्थान के अंदर जाकर लगता है कि जीवन में कितनी गति है।

मन में मालिक का नाम लेते हुए मायण व उसके परिजन अस्पताल में घुसे। बहुत लंबे-लंबे बरामदे हैं। मायण की कमर व घुटनों की पीड़ा के चलते व्हील-चेयर के सहारे ही आना-जाना संभव था। व्हील-चेयर की भी मारा-मारी रहती है। विनीत ने समय बचाने के लिए व्हील-चेयर की भी व्यवस्था बाहर से की। आज मायण का बड़ा बेटा सुनीत भी आया था। उसे भी जब माँ की बीमारी का पता चला तो अत्यधिक

विचलित हो गया था। अस्पताल में पहुँचने के बाद भी डॉक्टर अनुपम के कमरे में पहुँचने में बीस मिनट लग गए। यूँ लगा डॉक्टर अनुपम मायण की ही बाट जोह रहे थे।

''माताजी प्रणाम!'' यह कहते हुए डॉक्टर अनुपम ने मायण के पाँव छुए और उन्हें अपने हाथों से कुरसी पर बिठाया। विनीत भी अचंभित हुआ। क्या यह डॉक्टर का बड़प्पन है कि वह उसकी वृद्ध माता को इतना सम्मान दे रहे हैं अथवा यह कि मायण के व्यक्तित्व में कुछ आकर्षण है। विनीत को उस समय यह पूरा आभास नहीं था कि कैंसर से मरीज की मानसिकता पर क्या प्रभाव पड़ता होगा। एक संवेदनशील कैंसर चिकित्सक या उसके परिवारजनों को क्योंकर उत्साहवर्धक व्यवहार करना चाहिए।

''माताजी, आप चिंता न करें। रिपोर्ट्स आ गई हैं। केवल छोटी-छोटी गाँठें हैं। यूँ निकल जाएँगी। बस बायप्सी के लिए एक सैंपल लूँगा। उसके पहले पी.ई.टी. भी करवाऊँगा। मतलब पॉजीट्रॉन एमीशन टोमोग्राफी। इसमें रेडियो एक्टिव मेटिरियल शरीर में इन्जेक्ट[3] करके पूरे शरीर का आंतरिक चित्र लेते हैं। जहाँ-जहाँ कैंसर युक्त सेल होंगे, वे अलग से चमकते हुए दिख जाएँगे। इसमें यह निश्चित हो जाएगा कि कहीं कैंसर और जगह तो नहीं फैला है।'' डॉक्टर अनुपम ने समझाया।

''और सर, बायप्सी?'' विनीत ने पूछा।

''हाँ, वह तो बहुत जरूरी है। मेमोग्राफी या एफ.एन.ए.सी. फाइनल नहीं होती। एफ.एन.ए.सी. यदि 'कन्फरमेटरी'[4] हुई तो आगे परीक्षण जरूरी है। यदि इसके परिणाम 'निगेटिव'[5] हैं तो जरूरी नहीं कि कैंसर न हो। 'फिजिकल एक्जामिनेशन'[6] से कई 'नोड्स'[7] या उनमें हो रहे परिवर्तन मालूम नहीं पड़ते हैं। 'मेमोग्राफी इमेजिंग' से इसमें मदद मिलती है। ब्रेस्ट कैंसर में बायप्सी से सुनिश्चित परिणाम आएँगे। किस हद तक कैंसर है, मुझे कितनी 'क्लीनिंग'[8] करनी है, यह भी तो देखेंगे। अब

आप विश्वास रखें। मुझे मेरा काम करने दें।''

''जी, शुक्रिया। हमारा यह मतलब नहीं था कि आपकी कार्यवाही पर प्रश्नचिह्न लगाएँ। जिज्ञासावश पूछा था।''

''हाँ, पी.ई.टी. थोड़ा महँगा है। पर शायद आपको तो 'रीइंबर्स'[9] होगा,'' डॉक्टर ने पूछा।

''जी सर, किंतु आप चिंता न करें। खर्च की कोई चिंता नहीं है।''

यह सब बातें हालाँकि अंग्रेजी में हो रही थीं, फिर भी शायद मायण ने कुछ-कुछ भाँप लिया। डॉक्टर को भी लगा कि परिजनों से अलग से ही चर्चा की जानी चाहिए।

बायप्सी के बाद पुन: डॉक्टर अनुपम पूर्व की भाँति खुद ही सैंपल देकर आए और अपने सामने विवरण लिखवाया, ताकि कोई त्रुटि न हो। पी.ई.टी. टेस्ट भी हुआ। रिपोर्ट अगले दिन आनी थी।

पी.ई.टी. टेस्ट रिपोर्ट समय से आ गई। यह संतोष की बात थी कि कैंसर बाकी शरीर में नहीं फैला था। किंतु संभवत: एक गाँठ की जगह कई गाँठें बन गई थीं। बायप्सी रिपोर्ट से भी उसका मिलान करना था। बायप्सी रिपोर्ट में अभी दो दिन का समय और था। कोई चारा नहीं था। इंतजार करना ही पड़ेगा। अभी तक की रिपोर्ट्स से डॉक्टर ने यह अनुमान लगाया कि मात्र दवा से ठीक नहीं होगा। सर्जरी करके ही सारी नोड्स निकालनी होंगी।

मायण को लेकर घर लौटने पर विनीत की कोशिश रही कि किसी को अनावश्यक यह मालूम न पड़े। पर ऐसा होता कहाँ है। कहीं-न-कहीं से बात निकल ही जाती है। फिर लोग-बाग कोई कसर नहीं छोड़ते। आपसी गपशप में मायण का जिक्र कर ही दिया। मायण को कैंसर है। अब सभी के फोन आने शुरू हो गए। विनीत सभी से अनुरोध करता रहा कि संवेदना व्यक्त न करें। मायण को मानसिक रूप से कोई धक्का न लगे। एक दिन एक साहब बिना बताए घर पर पहुँच गए।

मायण से बात करते हुए अपनी जानकारी जाहिर करने लगे। कीमो लगता है। बड़ा दर्द होता है। बाल उड़ जाते हैं इत्यादि। उनके नकारात्मक व्यवहार से अप्रसन्न विनीत ने उन्हें लगभग खदेड़ते हुए बाहर भेजा। मायण की तकलीफ से विनीत का व्यवहार बदलने लगा था।

लौटकर अंदर आया तो मायण का चेहरा देखने लायक था। मायण मन-ही-मन घुट रही थी। शायद आगंतुक परिजन के शब्द अंदर-ही-अंदर उसे निगल रहे थे। सुना उसने भी था। पर कोई ताजा-ताजा प्रहार करे तो चुभन और बढ़ जाती है। कौन, किसको, कैसे बताए कि जानलेवा बीमारियों से ग्रसित मरीजों को दवा से ज्यादा जरूरत होती है मनोवैज्ञानिक संवेदनाओं की, प्यार और अपनेपन की।

दो दिन बाद बायप्सी की रिपोर्ट भी आई। मेमोग्राफी में जो गाँठ आई थी, उसका पैथोलोजिकल परीक्षण अब सामने था। यह एक 'इनवेजिव' अर्थात् फैलने-वाला कैंसर था। यह कैंसर प्रारंभिक अवस्था से आगे बढ़कर 'ग्रेड-2' में आ गया था। 'हरटीन्यू' पॉजिटिव था। 'एस्ट्रोजिन' व 'प्रोजेस्ट्रोन' फैक्टर क्रमश: पॉजिटिव व निगेटिव थे। यह सब समझना विनीत या सुनीत के दायरे से बाहर था। डॉक्टर अनुपम से अनुरोध करके समय माँगा।

डॉक्टर अनुपम इस बात में विश्वास रखते थे कि सभी को रोग के बारे में सही स्थिति बता दें, ताकि कोई भी असमंजस में रहकर किसी तरह का फितूर न पाले। शायद अच्छे डॉक्टर की यही एक पहचान है। डॉक्टर अनुपम ने अच्छे ढंग से रिपोर्ट का खुलासा किया,'' देखिए, रिपोर्ट से जाहिर है कि यह कैंसर लोकल नहीं है। फैलनेवाला है। 'इसे इंट्रूसिव या इंफिलट्रेटिंग' कैंसर भी कहते हैं। 'लिंफ-सिस्टम' या खून के जरिए यह शरीर के अन्य भाग में फैल सकता है। अभी यह फैला नहीं है, जो कि पी.ई.टी. रिपोर्ट से स्पष्ट है। 'हरटीन्यू' पॉजिटिव है। 'अग्रेसिव' कैंसर है। रिसेप्टर पॉजिटिव है, 'हार्नमोनल-थेरैपी' भी काम

करेगी। लेकिन ऑपरेशन करके पहले कैंसर युक्त सभी नोड्स निकालनी होंगी। ऑपरेशन तीन दिन बाद करेंगे। इन्हें आप कल भरती करा दें। मैं एडवाइस[10] लिख दे रहा हूँ।''

''जी, डॉक्टर साहब।'' ऑपरेशन की बात पर दोनों भाई सकपकाए, पर फिर सँभलकर डॉक्टर की बात ध्यान से सुनने लगे।

''आइए, मैं आपको रेडियोथैरैपी यूनिट में भी डॉक्टरों से मिलवा देता हूँ। ऑपरेशन के बाद जरूरत पड़ेगी। माताजी को भी ले चलें।'' डॉक्टर अनुपम बोले।

सभी वहाँ से रोटरी कैंसर अस्पताल में गए जो कि दो बिल्डिंग छोड़कर था। अचकचाई मायण ऊपर से हँसती रही। रेडियोथैरैपी के कई मरीज खुले वार्ड में पड़े थे। दूर से कटी-जली चमड़ियाँ भी नजर आ रही थीं। तीमारदार चुपचाप सेवा में लगे थे। सबकी अपनी-अपनी कहानियाँ थीं। कई मामले वाकई मन को झकझोरनेवाले थे। कुछ लोगों से मायण पूछे बिना नहीं रह सकी। शायद उसके अंदर का डर उसे जानकारी पाने को मजबूर कर रहा था।

डॉक्टर अनुपम यह भाँप गए थे। वे धीरे-धीरे मायण को मानसिक रूप से तैयार कर रहे थे। मायण से बोले, ''माताजी, आइए, कंसलटेशन रूम में चलते हैं। आप थक गई होंगी, चाय पीते हैं।''

कंसलटेशन रूम में डॉक्टर अनुपम ने बड़े प्यार व आदर से मायण से कहा, ''माताजी, आप शराब नहीं पीतीं, बीड़ी या सिगरेट नहीं पीतीं, तंबाकू नहीं खातीं, फिर भी आपको कैंसर हुआ है। यह मालिक की मरजी है। आपकी अपनी देन नहीं है। वही ठीक भी करेगा। आप क्यों मन छोटा कर रही हैं।''

मायण हँसी, ''नहीं-नहीं मैं क्यों चिंता करूँ। ऊपर मालिक है, नीचे आप हैं।''

विनीत, सुनीत व अंजली सब देख रहे थे। सुन रहे थे। बारी-बारी

अपनी माता के निकट जाकर कभी हाथ पकड़कर, कभी कंधा थामकर हिम्मत बँधा रहे थे। माता का प्यार ही ऐसा होता है। तीनों बच्चों के चेहरे भाँपकर वह अपने चेहरे पर शिकन तक नहीं आने दे रही थी।

''अरे, तुम तीनों हो तो मुझे क्या होगा। मालिक की दया से 'काल' भी भाग जाएगा। तुम्हारी माँ में अभी बहुत दम है।'' बच्चे परेशान न हो, अत: खुद की पीड़ा भूलकर उन्हें सँभालने में लग गई।

विनीत को वह दिन अभी तक याद है। क्यों न हो। ज्यों-ज्यों डॉक्टर बोल रहे थे—आप सिगरेट नहीं पीतीं, कोई व्यसन नहीं करतीं, तंबाकू नहीं खातीं··· त्यों-त्यों उसको हथौड़े सी चोट लग रही थी। उसे लगा कि उसके व्यसनों का लेखा-जोखा मायण को भुगतना पड़ रहा है। उस दिन पता नहीं क्या हुआ। उसके सारे व्यसन छू हो गए। उसे कोई तलब नहीं हुई। मन से सभी व्यसनों के प्रति चाह काफूर हो गई। उसके दिमाग की सोच ही बदल गई। यह एक चमत्कार ही था। पिछले कितने सालों में कब-कब उसने कोशिश नहीं की। कभी दो महीने, कभी तीन महीने। जोर-जबरदस्ती करके अपनी लतों को दबाता रहा, पर कभी सफल नहीं हुआ। अब एक पल के आभास ने उसकी सृष्टि ही बदल डाली।

स्मृति-पटल में भूतकाल के कई संस्मरण अंकित रह जाते हैं। निर्भर करता है कि जीवन में उनका महत्त्व क्या रहा। विनीत जब स्कूल पास करके दिल्ली के एक प्रतिष्ठित कॉलेज में दाखिला लेने जा रहा था तो कइयों ने मायण को टोका था, 'बच्चों को बाहर मत भेजो। बिगड़ने के आसार रहते हैं। तरह-तरह की कहानियाँ सुनने में आती हैं।' तब मायण ने विश्वासपूर्वक कहा था, 'मेरा बेटा है। बिगड़ेगा कैसे। न खून में कमी है, न दूध में।'

कम उम्र में ज्यादा समझ नहीं होती है। कभी कोई शौक या यूँ कहिए चस्का लग जाता है, जो बाद में आदतों में परिणत हो जाता है।

एक बार विनीत की किसी हरकत पर मायण ने टोका, 'ऐसा करने से तुम्हें क्या मिलता है। क्षणिक सुख के लिए बाद में कितनी तकलीफ उठाओगे, सोचा है कभी?'

बाद में अपनी बात को कायम रखने की कोशिश करते हुए विनीत ने कहा था, 'यह मैं कोई मजे के लिए नहीं कर रहा। इससे लंबी अवधि तक पढ़ने में मदद मिलती है।'

मायण को यह तर्क सुसंगत नहीं लगा था। बोली थीं, 'अपनी माँ को न समझा। जो बुरा है सो बुरा ही है। मेरा बेटा होकर ऐसा नहीं कर सकता। और मान ले, फेल भी हो गया तो रहेगा तो मेरा बेटा ही।'

विश्वास से ही विश्वास की जीत होती है, यह मान्यता है। मायण ने तो इसका जीवंत प्रमाण दिया। काफी देर तक विनीत के दिमाग में विगत के कई खयाल आते रहे। खयालों के सैलाब में उसका दिमागी मंथन होता रहा। अचानक मायण के टोकने पर पुन: वह यथार्थ में लौटा।

मायण को थोड़ी देर बाद लेकर सभी घर लौट आए। पिताजी को सूचित किया। अब ऑपरेशन की तैयारी करनी थी।

अंजली कुछ दिनों के लिए मायण के साथ हरिद्वार आश्रम में रहने आई थी। उसे क्या पता था कि सारा घटनाक्रम इस तरह बदल जाएगा। बोली, ''ऑपरेशन तक रुक जाती हूँ, फिर कुछ दिन घर की देखभाल कर आऊँ, तब लौटकर मायण के साथ रह लूँगी।''

विनीत ने कहा, ''ठीक है। तुम ऐसा ही कर लो। मैं वार्ड इत्यादि बुक करके आता हूँ। अस्पताल की जरूरत के हिसाब से तुम एक लिस्ट बनाकर समान पैक कर लो।''

''मैं भी चलूँ?'' सुनीत ने कहा।

''नहीं, मैं कर लूँगा। आप जरा सोच लो। अस्पताल में कौन, कैसे रहेगा। किसी-न-किसी को हर समय रहना होगा। भाभी से भी पूछ लो। आप कृपया रोस्टर[11] बना लें। '' विनीत ने कहा।

''ठीक है, मैं कर लूँगा। यदि दो-तीन घंटे मेरी जरूरत नहीं हो तो मैं अपना कुछ काम कर आता हूँ।'' सुनीत बोला।

फिर सुनीत ने विनीत को एक तरफ ले जाकर कहा, ''ये कुछ रुपए रख लो, बुकिंग वगैरह में काम आएँगे।''

''इसकी अभी जरूरत नहीं है, भाईजी! बाद में जब जरूरत होगी मैं आपको बता दूँगा।'' विनीत बोला।

मायण की देखभाल में सभी मन-ही-मन चिंतित थे। पिताजी भी आ गए थे।

मायण जब शादी होकर आई थी, तब उसके ससुराल में उसका स्वागत दो भतीजियों ने किया। तभी से दोनों उसके नजदीक रहीं। मायण खुद भी बच्ची ही थी। उम्र भी कम थी, केवल चौदह वर्ष। उसमें से एक बाद में दिल्ली में ही बस गई। मायण अपनी भाषा में उन्हें 'बायाजी' के नाम से संबोधित करती थी। दोनों अच्छी दोस्त थीं, एक-दूसरे से गप्पें करके प्रफुल्लित रहती थीं। परेशानी या आशंकाओं के पलों में ऐसे परिजनों से बहुत सहारा मिलता है। सो विनीत ने उन्हें भी पूरी बात बताई। बायाजी भी अपना अधिक-से-अधिक समय मायण के साथ बिताने लगीं।

हालाँकि आयुर्विज्ञान संस्थान का बड़ा नाम है, फिर भी जो इलाज चल रहा हो, उसकी पुष्टि करने की जरूरत तो पड़ती ही है। शायद अपने संतोष के लिए, यह देखने के लिए कि जो हो रहा है, ठीक है कि नहीं। क्या कोई अन्य बेहतर विकल्प तो नहीं है जो छूट रहा हो।

विनीत ने अपने ताऊजी के लड़के मधुप, जो विनीत के शुरू से निकट रहा, मशवरा किया। उसके मित्र की पत्नी गुड़गाँव के एक बड़े अस्पताल में कैंसर स्पेशलिस्ट थी। मधुप व विनीत समय लेकर उनके पास गए। उन्होंने रिपोर्ट देखी। अगले दिन हॉस्पिटल आने को कहा। अत: अगले दिन दोनों मायण को लेकर वहाँ भी गए। 'सुपर-स्पेशलिटी'

हॉस्पिटल था। मायण भी गई थी। ऐसा लगा कि मानो पाँच सितारा अस्पताल में आ गए हों। सफाई व चमक-दमक देखकर सभी को अच्छा लगा। पर बात-बात पर वहाँ पैसे लगते थे। वह भी कोई बात नहीं। देखना यह था कि इलाज किस तरह का होगा। वहाँ चेक कराने के बाद बृहत् रूप से सभी की राय यही रही कि जो उपचार 'एम्स' के चिकित्सकों ने निर्धारित किया है, वह गलत नहीं है। पर इस विजिट ने कई सवाल दिमाग में छोड़ दिए। यहाँ के कैंसर स्पेशलिस्ट ने एक बड़ी महत्त्वपूर्ण बात कही।

''देखिए, आप इस बात को भलीभाँति समझ लें कि विश्व भर में कैंसर पर कोई ठोस परिणाम नहीं निकल पाए हैं। सारी समझ अभी 'रिसर्च-बेस्ड'[12] ही है। जिसका तीर निशाने पर लग जाए, वही ठीक और जो भी रिसर्च हुई है, वह सामान्यतया पच्चीस से पचास वर्ष के लोगों पर लागू है। इससे कम या अधिक उम्रवालों पर तो अभी आँकड़े भी नहीं हैं। अधिक उम्र में क्या प्रभाव पड़ेंगे, जबकि विभिन्न अंगों में स्वयमेव गतिरोध आने शुरू हो जाते हैं, यह तो निश्चित ही नहीं है। इसीलिए अधिकांशतया ट्रीटमेंट 'ट्रायल एंड एरर'[13] पर ही हो रहा है।''

धीरे-धीरे कई बातें समझ में आने लगीं। पर अभी तो यह तय था कि ऑपरेशन करवाकर प्रभावित स्तन तो हटाना ही पड़ेगा।

'एम्स' में बुकिंग करवाकर तारीख तय कराई गई। डॉक्टर ने तब कहा कि ऑपरेशन के बाद जो इलाज होगा, उसमें हृदय व हड्डियाँ प्रभावित होंगी। अत: आप अभी इन दोनों भागों से जुड़े कुछ टेस्ट करा लें। बाद में जो भी परिवर्तन होंगे तो इन्हीं के सापेक्ष पता चल पाएगा कि मरीज की अवरोध क्षमता क्या है। कुछ ब्लड-टेस्ट भी होने हैं। कुछ दवाइयाँ ऑपरेशन के 48 घंटे पहले से ही शुरू होंगी।

विनीत मन-ही-मन सोचने लगा कि परसों जब पूरी बात डॉक्टर से पूछी तो केवल इतना कहा कि कमरा बुक करवा लें। ये टेस्ट भी तभी

लिख देते तो 'बोन-डेंसिटी टेस्ट,' 'हार्ट-इजेक्शन रेश्यो' आदि भी करवा लेते। पर चिकित्सक को उलटा परामर्श देना ठीक नहीं, और तो और शल्य चिकित्सक व कैंसर चिकित्सक के मध्य भी यदि कुछ तालमेल होना हो तो कौन किससे पहले बात करे, कौन किसको कितना परामर्श दे, इस पर भी काफी ध्यान देना होता है। जिसको इलाज करवाना हो, वह दौड़-भाग करता ही है, सो करेगा।

सभी टेस्ट हो गए। रिपोर्ट्स भी आ गईं। 'पैरामीटर्स'[14] ठीक थे। ऑपरेशन हो सकता था। सभी तैयारियाँ हो गईं। अगले दिन के लिए भी निर्देश दे दिए गए। शाम 7 बजे बाद मायण को कुछ नहीं खाना था। सुबह उठकर थोड़ी-बहुत तैयारियाँ करनी थीं। उसी के अनुरूप नर्स से भी बात हो गई।

शाम को प्राइवेट वार्ड मिल ही गया। विनीत ने अपने यहाँ से फिनाइल व तेजाब भिजवाकर फिर से बाथरूम साफ करवाया। कमरे को भी डिसइन्फेक्ट[15] किया। सरकारी अस्पताल है। काम सब होते हैं, पर गुणवत्ता का स्तर हमेशा संदेहास्पद रहता है। अपनी तैयारी रखना भी जरूरी हो जाता है। कमरा ठीक था। हलके क्रीम कलर से दीवारें पुती थीं। एक तरफ बिस्तर लगा था। दूसरे कोने में एक 'सेटी' व कुरसी-टेबिल परिचारिकों हेतु लगी थी। प्राइवेट वार्ड में भी एक से अधिक परिजन की अनुमति नहीं थी। मायण व उसका बड़ा बेटा सुनीत रात्रि में ही जाकर वहाँ सो गए। विनीत व अंजली देर रात व्यवस्थाएँ करके चले आए थे। अंजली ने रुकने की जिद की। पर यह तय रहा कि वह सुबह जल्दी तैयार होकर आ जाएगी। ऑपरेशन के बाद उसे लगातार रहना पड़ सकता है।

विभिन्न आशंकाओं के अहसास के साथ रात कटी। सहमे हुए साए कब बड़े हुए और कब विलुप्त हो गए, पता ही नहीं चला। सुबह होते-होते घड़ी की सुइयों ने भी गति पकड़ ली। □

# तीन

**किसी भी तर्क के परे केवल एक ही शक्ति रह जाती है। वह है 'आस्था'। मायण ने जाते-जाते पूरी शक्ति इकट्ठी करके विनीत का हाथ दबाया और ट्राली आगे बढ़ गई। अंजली व सुनीत भी भाव-विभोर अवस्था में खड़े रहे।**

मायण सुबह जल्दी उठकर अस्पताल के प्राइवेट वार्ड में ही नहा-धोकर तैयार हो गई। अपने इष्ट में गहन आस्था रखती थी। अत: सर्वप्रथम पूजा-पाठ किया। तत्पश्चात् बच्चों से बातचीत की, जो तनिक विचलित थे। अपने ऑपरेशन से ज्यादा उसे चिंता थी बच्चों की मायूसी की। सबको हिम्मत बँधाते हुए पता नहीं किस सहजता से ऑपरेशन थिएटर की तरफ चल पड़ी।

''अच्छा है, पूरा कटकर अलग हो जाएगा। पीछा छूटेगा।'' मायण ने विनीत की तरफ देखकर कहा, जो कि उसकी हथेली पकड़े था, मानो ढाढ़स दे रहा हो।

जैसे ही स्ट्रेचर 'नो एंट्री जोन' में जाने लगा, मायण की आँखों में एक मार्मिक भाव पल भर के लिए उपजा। टकटकी लगाए विनीत ने भावविहीन मुद्रा में मायण को हौसला दिया, ''जो होगा ठीक होगा,

मालिक की जो मौज होगी, होगा।'' हर एक मनुष्य के अंदर, चाहे वह कितना ही बड़ा हो जाए, किसी भी अवस्था में पहुँचे, ठेठ अंदर एक बालक होता है। अभी मायण उस बाल अवस्था में थी। विनीत निर्मोही पिता के समान जो समझा सकता था, समझा रहा था। किसी भी तर्क के परे केवल एक ही शक्ति रह जाती है। वह है 'आस्था'। मायण ने जाते-जाते विनीत का हाथ पूरी शक्ति इकट्ठी करके दबाया और ट्राली आगे बढ़ गई। अंजली व सुनीत भी भाव-विभोर अवस्था में खड़े रहे।

हर थोड़ी देर में नर्स आकर बता जा रही थी, ''सब ठीक है। ऑपरेशन चल रहा है।''

आधे घंटे का एक घंटा हो गया। थोड़ी चिंता होने लगी। फिर नर्स ने आकर कहा, ''ऑपरेशन हो गया है। उन्हें ओ.टी. वार्ड में लाया जा रहा है। होश आने में कुछ समय लगेगा। आपमें से कोई एक उन्हें होश में आने पर मिल सकता है।''

सबकी साँस-में-साँस आई। चलो एक मंजिल तो पार हुई। ''तुम जाना।'' विनीत ने अंजली से कहा।

ओ.टी. वार्ड एक खुला हॉल था। कई मरीज वहाँ प्रतीक्षा में थे कि होश आए तो अपने-अपने मूल वार्ड में वे भेजे जाएँ। किसी के बोतलें चढ़ रही थीं, किसी के ऑक्सीजन। अंजली की आँखें इस मार्मिक माहौल में मायण को ढूँढ़ रही थीं।

''उधर है'', भावहीन नर्स ने कहा। अंजली की धीमी रफ्तार अचानक बढ़ गई और वह दौड़कर मायण तक पहुँची। आँखों में भययुक्त कौतूहल। मायण आँख बंद किए कराह रही थीं। होश आ रहा था, फिर जा रहा था। अंजली ने प्यार से सिर सहलाया तो मायण ने आँखें खोलीं। दो-तीन दफा पलक झपकाई और मुँह से बोली, ''लाली''। 'लाली' अंजली के घर का नाम था। अंजली का भययुक्त कौतूहल अचानक लाड़ में

बदल गया। पुनः सहलाते हुए बोली, ''आप ठीक हो, बस कमरे में चलते हैं।'' अंजली ने पूछा, ''अपने भाइयों को बुला लूँ?''

''मैडम, यहाँ इंफेक्शन का खतरा रहता है। मरीज डिसटर्ब होते हैं। थोड़ी देर में वार्ड में ले जाएँगे। वहीं मिल लेंगे।'' नर्स बोली।

''जी, मैं समझ सकती हूँ।'' अंजली ने उत्तर दिया।

थोड़ी देर में नर्स पलटकर आई। पता नहीं क्यों, उसने कहा कि बारी-बारी से एक सदस्य आ सकता है। शायद मायण को वार्ड में ले जाने में देर थी। डॉक्टर अनुपम ओ.टी. से एक बार आकर देखना चाहते थे। 'हाईजीन'[16] का पूरा खयाल रखा। जूते उतारे। मुँह पर मास्क व हाथों में दस्ताने पहने। एक धुला हुआ एप्रिन भी अपने कपड़ों पर पहना। अच्छा लगा कि सरकारी संस्थानों में भी इस बात पर ध्यान दिया जा रहा है। इसी बीच सुनीत व विनीत भी आकर मायण से मिलकर बाहर चले गए। थोड़ी देर में परिचारक दौड़ता हुआ आया, ''माताजी को वार्ड में ले जा रहे हैं, उधर पीछे लिफ्ट से।'' सभी कॉरीडोर से पीछे लिफ्ट की ओर जाने लगे।

''आप लोग उधर न जाएँ, सीधे वार्ड में पहुँचें।'' परिचारक बोला। तीनों दौड़कर वार्ड में पहुँचे। मायण वहाँ पहुँच चुकी थी। नर्स के साथ कुछ वार्डबाय भी थे। सभी जूते पहने घुस गए थे।

''दूसरों को हाइजीन का पाठ पढ़ाते हैं, खुद ध्यान नहीं रखते। पूरा कमरा गंदा कर दिया।'' अंजली बुदबुदाई।

''अभी फिर पोंछा लगवा देंगे, जोर से न बोलो, अभी कोई बिदक जाएगा तो कोई-न-कोई बाधा उत्पन्न हो जाएगी।'' विनीत ने कहा।

अनुनय-विनय करके किसी तरह काम निकाला। थोड़ी देर में मायण को पूरा होश आ गया। नर्स ने आकर डिस्चार्ज स्लिप पर चिकित्सक द्वारा दिए गए परामर्श के अनुरूप दवा मँगवाई, थोड़ी देर बाद डॉक्टर

अनुपम भी राउंड पर आए। विनीत से अलग से बात हुई।

''यह कैंसर बहुत तेजी से फैल रहा है। 'एग्रेसिव-नेचर' का है। एक हफ्ते में देखते-देखते इतना फैलाव हुआ है। कुल 19 गाँठें मैंने निकाली हैं। पूरी तरह साफ कर दिया है, माताजी ठीक हैं। दर्द की दवा चालू है। इंफेक्शन न हो, यह खयाल रखना होगा। कोई ज्यादा मिले नहीं।''

''जी, डॉक्टर साहब।'' विनीत बोला। अंजली व सुनीत भी सुन रहे थे।

''आटोप्सी रिपोर्ट आने पर आगे कार्यवाही करेंगे। इसी दौरान आप कैंसर विभाग में भी संपर्क कर लें। रेडियो-थेरैपी के 'हेड ऑफ द डिपार्टमेंट' डॉक्टर प्रीतम से मिल लें। हाँ, हार्ट स्पेशलिस्ट को भी दिखा लें। उनकी देखरेख भी जरूरी है।''

''जी'', विनीत एवं अंजली ने एक स्वर में कहा।

''चूँकि लिंफ-नोड्स कट गए हैं, अत: 'ड्रेनेज सिस्टम' प्रभावित है। अलग से नलकी लगाकर ड्रेनेज करना होगा। मैं परचे पर लिख दे रहा हूँ। मेडिकल स्टोर पर इसका उपकरण मिलेगा। उसके साथ एक माप भी आता है। रोज आपको उसको मापना होगा। रिकॉर्ड रखिएगा।''

''यह कब तक करना होगा?'' विनीत ने पूछा।

''जब तक रोज का ड्रेनेज पचास मिलीलीटर से कम न हो जाए। कालांतर में शरीर में स्वत: वैकल्पिक व्यवस्था बनेगी। हाँ, इस दौरान हाथ में नीचे की ओर 'लिक्विड-फ्लो'[17] ना हो, अत: एक मोजा आता है, वह नाप से बनेगा, बनवा लें। मैं सप्लायर को भेज दूँगा। उसे पहनाए रखिए। हाथ की रोज मालिश भी करनी होगी। मालिश का रुख कलाई से कंधे की ओर होगा।''

''जी ठीक है।'' विनीत बोला।

''अच्छा माताजी, मैं चलता हूँ। आप बिलकुल ठीक हो जाएँगी।'' यह कहकर डॉक्टर अनुपम कमरे से निकले। चलते-चलते नर्स को दवाओं के बारे में बताते रहे।

ऑपरेशन होने में कुछ समय नहीं लगता, पर उसके बाद ठीक होने में लंबी अवधि व्यतीत होती है। मायण को धीरे-धीरे अहसास होने लगा कि उसका एक स्तन नहीं है। मानसिक रूप से कोई भी औरत कदाचित् इस स्थिति से समझौता करने में वक्त लगाएगी। मायण के चेहरे पर यदाकदा आते भाव इस पीड़ा को मुखरित कर जाते थे। पर वह सबकुछ झट से छुपा लेती थी। शुरू के कुछ दिनों तो मायण के प्रभावित हिस्सों से जो द्रव्य निकलता था, वह भी बीभत्स भावों को जन्म देता था। ऐसा लगता था कि उसके शरीर का खून रिस-रिस कर बह रहा है।

धीरे-धीरे घावों का अहसास दर्द एवं चुभन के साथ होने लगा। दर्द की दवा ज्यादा लेने या तेज दवा लेने पर किडनी प्रभावित होने का खतरा रहता है। मायण को वैसे भी कई तरह की बीमारियाँ थीं। आगरा में, जहाँ मायण कई बरसों से रह रही थी, डॉ. वितुल फैमिली डॉक्टर थे। वे चिकित्सीय दृष्टि से मायण की बीमारियों एवं उसके शरीर के हर पहलू को भलीभाँति समझते थे। विनीत हर मामले में उनसे राय लेते थे।

''नहीं, नहीं, आप इन्हें 'वोवरान' न दें। हर छह घंटे में एक 'क्रोसिन' दें। काम चल जाएगा।'' डॉ. वितुल ने फोन पर समझाया।

''पर यहाँ डॉक्टर कुछ और कह रहे हैं...''

''अरे, बाद में एसिडिटी बढ़ेगी। गैस बनेगी। इन्हें बहुत तकलीफ हो जाएगी। 'एंटेसिड' से भी काम नहीं चलेगा।'' डॉ. वितुल ने उत्तर दिया था।

और जैसे जादू हो गया हो। 'क्रोसिन' मात्र से काम चल गया।

कुछ दर्द कम हुआ, कुछ मायण की हिम्मत ने काम किया। तीन-चार दिन निकल गए। जख्मों पर भी परतें आने लगी थीं।

अब रेडियोथेरैपी के लिए ले जाना था, सो सुबह-सुबह मायण को तैयार कर नौ बजे तक निकल लिये। साढ़े नौ तक डॉक्टर आते हैं। इंतजार न करना पड़े, यह विचार मन में बना रहता है। बहुत भीड़ रहती है। वहाँ जाकर लगता है मानो सभी को कैंसर हो गया हो। जैसे-जैसे अंदर जाते हैं, मन में डर सा लगता है। बरामदे से चलते हुए दाएँ-बाएँ नजर पड़ जाती है तो पुनः अनेक आशंकाओं की पुष्टि होने लगती है। पहले की विजिट का अनुभव फिर ताजा हो गया। शरीर पर जगह-जगह चकत्ते पड़े रोगी दिखते रहे। रेडियोथेरैपी से काली पड़ गई त्वचा हलकी सी सिहरन पैदा कर दे रही थी। मुँह के कैंसर के रोगी को देखकर तो एकबारगी विनीत घबरा ही गया। कितनी बड़ी विकृति। बड़ी सी जगह भी अब छोटी नजर आ रही थी।

रेडियोलॉजी के विभागाध्यक्ष डॉक्टर प्रीतम के कमरे के बाहर सुबह से ही भीड़ थी। कैंसर से मौत हो जाती है, यह आम धारणा है। सभी के चेहरों पर चिंता की लकीरें प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से उभर रही थीं। कोई किसी को दिलासा देता था, तो कोई किसी को समझाता हुआ दिख रहा था। जीवन के प्रति खुद का लगाव, अपने निकट परिजन से प्रेम अथवा लोक-लज्जा के कारण उत्तरदायित्व का निर्वहन या अन्य कोई समरूप कारण, जो भी रहा हो। अब तो मोबाइल फोन का जमाना आ गया है। कभी-कभी ये मोबाइल भी हास्यास्पद दृश्य प्रस्तुत करते हैं। पीड़ित व्यक्ति को स्वयं इतनी व्यथा नहीं होती है, जितना कि आराम से दूर बैठे उसके परिजन अपने शब्दों में व्यक्त करते हैं। जगह-जगह 'शांत रहे' की तख्तियाँ खुद ही मौन हो जाती हैं। पढ़-लिखकर भी हम उन्हें अनदेखा कर देते हैं और बात करने से बाज नहीं आते। इन्हीं सब

विचारों से विचलित होते विनीत व सुनीत मायण को लेकर कमरे में प्रवेश करने का सतूना[18] बिठा रहे थे।

डॉक्टर प्रीतम ठीक साढ़े नौ बजे आ गए। दरवाजे पर ही विनीत ने उन्हें प्रणाम किया। पहचान गए। मायण को देखकर बोले, ''अरे, आपको तो आने की जरूरत नहीं थी। रिपोर्ट ले आते।''

''जी, रिपोर्ट ले आए हैं।'' विनीत ने कहा।

''आप अंदर आ जाइए, देखते हैं।'' डॉक्टर के पीछे-पीछे तीनों-चारों चले गए। जल्दी आने से फायदा हुआ। डॉक्टर की नजर पड़ गई। भीड़ से बच गए।

''हूँ, ई.आर. पॉजिटिव, पी.आर. निगेटिव है। लेकिन हरटीन्यू पॉजिटिव है। 'टू-प्लस' है। कुछ सोचते हुए डॉक्टर प्रीतम फिर बोले, ''माताजी को रेडियोथैरैपी करवाने में समस्या हो सकती है, क्योंकि हार्ट वीक है। लेकिन जाँच रिपोर्ट में जो पैरामीटर आए हैं, उनके चलते एक उम्मीद है। आप ऐसा करें कि एक विस्तृत आई.एच.पी. (इम्यूनो हिस्टोकेमिस्ट्री प्रोफाइल) करवा लें। यदि हरटीन्यू 'थ्री-प्लस' आता है तो एक 'टारगेटेड थैरैपी' है। 16 इंजेक्शन कुल लगेंगे। हर महीने में एक। कोई साइड-इफेक्ट[19] नहीं है।''

''जी, जैसा आप बेहतर समझें।'' विनीत बोले।

''तब तक मैं एक दवा लिख देता हूँ, एक गोली रोज लें।'' यह कहकर डॉक्टर प्रीतम ने दवा लिखी और परचा लौटा दिया।

विनीत ने लौटकर डॉक्टर अनुपम को ब्रीफ किया। उन्होंने कहा, ''रेडियोथैरैपी करनी तो चाहिए, पर डॉक्टर प्रीतम विशेषज्ञ हैं, उनका निर्णय मानना ही होगा। आप लैब से 'प्लेट्स' ले लें। लीला पैथोलॉजी से फिश टेस्ट, आई.एच.पी. करवा लें। दो हफ्ते लगेंगे। मेरे खयाल से परसों माताजी को घर ले जाएँ। यहाँ इंफेक्शन का खतरा है। घर पर

ऐहतियात रखिएगा। मैं सारी बातें परचे पर लिख दे रहा हूँ। हाथ में मोजा जरूर पहना देना। उलटी मालिश करनी पड़ेगी। 'ड्रेनेज' देखते रहिएगा। पचास एम.एल. से कम होने पर नलकी निकालेंगे। मैं तो फोन पर हमेशा उपलब्ध हूँ। संपर्क रखिएगा।''

तीन दिन अस्पताल में और रहे। तरह-तरह के कयास चलते रहे। हार्ट-टेस्ट, बोन-डेंसिटी टेस्ट आदि की रिपोर्ट भी आ गई थी। हार्ट इंजेक्शन रेशो 60-65 के करीब था। फिश टेस्ट की रिपोर्ट बाद में आएगी, तब इलाज शुरू होगा। अत: तरह-तरह की शंकाएँ फिर जन्म लेने लगीं। कहीं गाँठें बढ़ न जाएँ। तीन महीने में एक से उन्नीस हो गई थीं। डॉक्टर रेडियोथेरैपी के पक्ष में नहीं है। परस्पर मतभेद भी है। कहीं डॉक्टर प्रीतम गलती तो नहीं कर रहे? योग्य हैं भी कि नहीं? इस तरह के कई खयाल उभरते रहे। संबंधियों में चर्चा होती रही। रेडियोथेरैपी के प्रति आशंका भी घर कर गई थी। कहीं हार्ट पर तुरंत फर्क पड़ा तो? लगातार कुछ-न-कुछ असमंजस बना रहा। और फिर जैसा होता है— परमात्मा में आस्था रखते हुए सबने आगे की राह ली।

□

# चार

**जीवन के उतार-चढ़ावों से कभी-कभी बहुत खीज आती है। सामान्य आदमी हतोत्साहित हो ही जाता है। किंतु मायण को अपने इष्ट में भरपूर विश्वास था। उसकी दृढ़ मान्यता थी कि 'उसकी' मरजी के बिना पत्ता भी नहीं हिलता। अतः उतार-चढ़ाव से ज्यादा विचलित न हो उसे नियति मानकर खुश हो लेती थी।**

जिंदगी हमेशा नए-नए आभास कराती है या यों कहिए कि हर व्यक्ति जिंदगी को नित नवीन रूप में देखता है। शायद कुछ लोग इस बात से सहमत न हों, पर मायण का अपना अनुभव कुछ ऐसा ही रहा। हॉस्पिटल से घर आना मायण को अच्छा लगा। मायण क्या, किसी को भी सुखद ही लगेगा। अस्पताल से निजात[20] मिली।

''अब मैं ठीक हो जाऊँगी, फिर जाकर सत्संग करूँगी।'' मायण नित्य यह आश्वासन खुद को देने लगी। अस्पताल की आपाधापी से जूझकर निकला इनसान घर पर सुकून ढूँढ़ता है, पर सामाजिक परिस्थितियाँ एवं उससे उत्पन्न परिवेश विभिन्न आयामों को जन्म देते हैं। इसका एक उदाहरण है 'रस्म अदायगी'—अरे फलाने के ऑपरेशन हुआ है, मिलने

जाना है। मना करो तो कुछ लोग बुरा मानते हैं। टीका-टिप्पणी किए बिना नहीं रहते। कुछ अनर्गल भी बोलते हैं। कुछ समझदार होते हैं। उनकी समझ में आ जाता है। विनीत की तो पहले भी एक रिश्तेदार से झड़प हो गई थी, जो बीमारी का बीभत्स चित्रण करके मायण को हताश कर रहा था। इस बार लोग मिलने जरूर आए, पर ड्राइंग-रूम तक। मायण के कमरे में बहुत कम लोगों को ही जाने दिया गया। इंफेक्शन न फैले, यह निवेदन करके रोकने की कोशिश करते थे। यह भी संभव नहीं था कि दिल्ली जैसे शहर में कोई दूर से आए तो उसे घर में घुसने या बैठने को भी न कहें। इस रस्म अदायगी के भी कई मजेदार पहलू होते हैं—'अरे, हमें तो खबर ही नहीं थी,' 'मुझे बताया होता तो ये कर देता,' 'अब कभी बताइएगा।' इसी प्रकार की कई मुँहदेखी बातें। कुछ वाकई संजीदा परिजन एवं मित्र भी रहे। चुपचाप अपनी सेवाओं की सुलभता कान में बता गए, ढिंढोरा नहीं पीटा।

एक सप्ताह में मायण के जख्म काफी भर गए। ड्रेसिंग भी अब कुछ अंतराल पर होने लगी। अब फिश टेस्ट की रिपोर्ट भी आ गई थी। अत: डॉक्टर प्रीतम को दिखाने के लिए समय माँगा। तुरंत अगले दिन का समय मिल गया।

''हरटीन्यू 'थ्री-प्लस' है। हारमोनल थेरैपी काम करेगी। थ्री-वीकली इंजेक्शन एक साल तक लगवाऊँगा। ठीक हो जानी चाहिए।''

''सर, डॉक्टर अनुपम ने रेडियोथेरैपी...'' मायण के एक परिजन ने कहा।

''आप फिर वही बात दोहरा रहे हैं। मेरा काम केवल दवा देना नहीं है। जिस पेशेंट को दवा दे रहा हूँ, उसकी हालत भी देखूँगा। हार्ट पेशेंट है। हार्ट के ठीक ऊपर बाएँ स्तन के नीचे रेडियोथेरैपी में रिस्क[21] है। हाँ, यदि हरटीन्यू पॉजिटिव नहीं होता तो यह रिस्क भी लेते।...'' डॉक्टर प्रीतम थोड़ा झल्लाकर बोले।

''जी-जी, हम लोग समझ रहे हैं...'' थोड़ा झिझकते हुए परिजन ने डॉक्टर को सपोर्ट करने की चेष्टा की।

''अरे, जब डॉक्टर संतुष्ट हैं तो क्यों बार-बार उसी बात को दोहरा रहे हैं। चमड़ी जल जाती है। अगर हारमोनल ट्रीटमेंट से ठीक हो रही है तो इसमें हर्जा क्या। मालिक की इसी में मौज है।'' दूसरे एक परिजन ने कहा।

डॉक्टर प्रीतम ने मायण की तरफ रुख करके कहा, ''माताजी, आप तो बहुत बहादुर हैं। आपके चेहरे से नूर झलकता है। आप मेरी बात पर विश्वास करें। एक साल यह थैरैपी चलेगी। कैंसर बिलकुल कंट्रोल में रहेगा। कइयों पर मैं इसे आजमा चुका हूँ। ब्रेस्ट कैंसर की 'टारगेट्ड-थेरैपी' है। अच्छे परिणाम रहेंगे।'' डॉक्टर प्रीतम बोले।

मरीज के लिए डॉक्टर में आस्था एक सशक्त पहलू है। मायण को अपने इष्ट पर भी आस्था थी। बाद में विनीत से बोली, ''ठीक है, जब डॉक्टर इतने भरोसे से बोल रहा है तो ठीक ही होगा।''

हरसेप्टीन का एक ही इंजेक्शन लगा था कि नई परेशानियाँ होने लगीं। हाथ में नसें मिलना बंद हो गई थीं। डॉक्टर ने कीमो पोर्ट लगवाने की सलाह दी। कीमो पोर्ट लगवाने से दवा देने में आसानी होती है। बार-बार हाथ में सुइयाँ नहीं चुभानी पड़तीं। कीमो पोर्ट लगाने के लिए फिर से दो दिन के लिए मायण को भरती होना पड़ा था। दोबारा भरती की खबर से वह विचलित हो गई और बच्चों की भाँति न जाने की जिद करने लगीं। बोली, ''अब शरीर नहीं कटवाऊँगी। मेरी नसें मिल जाएँगी, कोशिश करो।''

कीमो पोर्ट के लिए फिर से डॉक्टर अनुपम के पास जाना पड़ा। उन्होंने समझाया, ''माताजी, आगे भी जरूरत पड़ेगी। कीमो पोर्ट लगवा लें। इसमें ज्यादा काट-छाँट नहीं करूँगा।''

डॉक्टर अनुपम के व्यवहार के आगे मायण नतमस्तक थी। कीमो

पोर्ट की व्यवस्था की गई। कीमो पोर्ट लगा भी। कीमो पोर्ट लगने के बाद बहत्तर घंटे इंतजार करना पड़ता है। डॉक्टर प्रीतम ने कहा कि एक दिन और रोक लो। अगला इंजेक्शन ड्यू[22] हो रहा है। कीमो पोर्ट से लगाएँगे, ताकि क्रियाशील हो जाए।

मायण की बीमारी व इलाज में जगह-जगह उतार-चढ़ाव रहे। उसकी जिंदगी के अपने विचित्र ही अहसास थे। ऐसा लगता था मानो बाधाएँ उसी के लिए बनी हैं। इंजेक्शन लगा तो कीमो पोर्ट ने काम ही नहीं किया। पुन: उसे ऑपरेशन थिएटर में ले गए। तीन घंटे डॉक्टर जूझता रहा। पर कीमो पोर्ट नहीं चला। कंपनी से संपर्क किया। कीमो पोर्ट बदला। नया कीमो पोर्ट कुछ दिन चला। इस कीमो पोर्ट की भी आगे अपनी कहानी रही।

''आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ। सौ से अधिक कीमो पोर्ट लगा चुका हूँ, इसी में यह परेशानी हुई। कंपनी भी अच्छी है।'' डॉक्टर अनुपम बोले। उनके सहयोगी ने उनका समर्थन किया।

इसी बीच डॉ. वितुल से बातचीत होती रही। उन्होंने कहा, ''वहीं पर अस्पताल में आगरा के रहनेवाले एक डॉक्टर भी हैं। मेरे दोस्त हैं, उनसे भी चाहे तो मशवरा कर लें।'' डॉ. वितुल ने अपने मित्र डॉ. सरल का नंबर भी दिया।

डॉ. सरल की अपनी सोच थी। इनसे मिलकर विनीत व सुमीत को कुछ हद तक नई जानकारियाँ मिलीं।

''मैं तो 'कन्वेंशनल'[23] इलाज में विश्वास रखता हूँ। 'क्लासिकल-प्रोटोकॉल' से हटकर दवा देने में खतरा है। दवा कारगर रही तो ठीक, नहीं तो बहुत मुश्किल हो जाती है। 'क्लासिकल-ट्रीटमेंट' में असर होने में देर लगती है, पर केस बिगड़ेगा नहीं।'' डॉ. सरल बोले।

''आपके हिसाब से यह जो ट्रीटमेंट लिखा है, क्या वह उचित नहीं है ?'' विनीत ने जिज्ञासावश पूछा।

''नहीं, ऐसा नहीं कह रहा हूँ। पढ़ा मैंने भी है। ये दवाएँ 'ट्रायल एवं टेस्टिंग' पर आधारित हैं। अब इस बीमारी में कई कंपनियाँ घुस गई हैं। महँगी दवा बनाते हैं। मौत का सवाल है। अत: बिकती भी है। उस पर डॉक्टरों को भारी कमीशन भी मिलता है।'' डॉ. सरल ने कहा।

''क्या मतलब, डॉक्टर साहब, क्या इस फील्ड में भी यह सब खेल है, मैं तो समझता था कि...'' विनीत ने कहना चाहा।

विनीत की बात काटते हुए डॉ. सरल ने कहा, ''यही तो दुर्भाग्य है। पैसे की ललक ने लोगों की जिंदगियों से खेलना शुरू कर दिया है। सर्टिफिकेशन[24] भी दाम देकर मिल जाता है।''

थोड़ी देर सब चुप रहे। विनीत सोचने लगा, कहीं गलत तो नहीं फँस गए।

डॉ. सरल ने भाँपते हुए कहा, ''मेरा यह मतलब नहीं है कि डॉक्टर प्रीतम को अपने काम का ज्ञान नहीं है। 'हेड ऑफ द डिपार्टमेंट' हैं। काफी अनुभव है। हारमोनल थेरैपी आजमाने में बुराई नहीं है।''

विनीत व सुनीत चले आए। विनीत ने जिज्ञासावश कई लोगों से इस विषय में मशवरा किया। लालची लोग जिंदगियों से किस प्रकार खिलवाड़ करते हैं, इसके कई उदाहरण उसे मालूम थे। सरहद पर जवानों को कमजोर बुलेट प्रूफ जैकेट बेचने से लेकर नकली कारतूसों तक के किस्से बहुचर्चित थे। जब वहाँ जिंदगी का मूल्य नहीं, तो लोलुप[25] व्यक्ति लाशों का सौदा करने से बाज क्योंकर आएगा। क्या तो कंपनियाँ और क्या उसके प्रतिनिधित्व करनेवाले कारिंदे, किसी में कोई संवेदना नहीं है। क्या डॉक्टर भी मिले रहते हैं? हाँ, जाँच रिपोर्टों में लैब से कमीशन की बात तो सुनी थी, पर क्या जानलेवा बीमारियों के क्षेत्र में भी सेंधमारी है? कहते हैं, एक घर तो डायन भी छोड़ देती है। नहीं, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। डॉक्टर प्रीतम एवं डॉक्टर अनुपम अच्छे डॉक्टर हैं। इस तरह की चाल नहीं चलेंगे। विनीत के दिमाग में कई

विचार आते, वह स्वयं को समझाता और फिर विचार विलुप्त हो जाते। कहीं तो विश्वास करना ही पड़ेगा।

मायण का हार्मोनल ट्रीटमेंट एक साल तक चला। हाँ, डॉक्टर ने सावधानी बरती। हार्ट का 'इंजेक्शन-फेक्टर' देखते थे। बोन-डेंसिटी का भी जायजा लेते रहे। इस बीच कोई समस्या नहीं हुई। बाकी बीमारियों की दवाएँ भी चलती रहीं। जब दिल्ली में अपने बेटे के पास होती तो वहाँ दवा लग जाती। जब सत्संग में रहती, तो वहाँ दवा लगवा लेतीं। ऐसा लगने लगा था कि कैंसर बिलकुल ठीक हो गया है। एक साल के ट्रीटमेंट के बाद डॉक्टर प्रीतम ने दोबारा 'पी.ई.टी.' करवाया। कैंसर का कहीं नामोनिशान नहीं था। सभी को लगा कि दवा काम कर गई। डॉक्टर ने यहाँ तक कहा कि अब ये पाँच साल तक सुरक्षित हैं। फिर रिव्यू[26] करेंगे।

पर मायण के भाग्य में कुछ और ही लिखा था। जीवन के उतार-चढ़ावों पर कभी-कभी बहुत खीज आती है। सामान्य आदमी हतोत्साहित हो ही जाता है। किंतु मायण को अपने इष्ट में भरपूर विश्वास था। उसकी दृढ़ मान्यता थी कि 'उसकी' मरजी के बिना पत्ता भी नहीं हिलता। अत: उतार-चढ़ाव से ज्यादा विचलित न हो, उसे नियति मानकर खुश हो लेती थी।

उसने संत-महात्माओं के वचन बहुत पढ़े-सुने थे। कहती थी, दु:ख की दौड़कर आगवानी करनी चाहिए। हर दु:ख हमें अपने परमात्मा के नजदीक ले जाता है। इसी दृढ़ विश्वास के चलते बड़े-बड़े मोड़ उसने पार कर लिये थे। 'बंदगी' का क्या स्तर होना चाहिए, उस पर बहुत ही सटीक कथानक अकसर बताया करती थी—

एक मालिक ने अपने सेवक से पूछा, ''तेरा क्या नाम है?''

''जिस नाम से आप बुलाएँ।'' उसने बिना किसी विचार के उत्तर दिया।

''क्या पहनोगे ?'' मालिक ने अगला प्रश्न किया।

''जो आप पहनावें।'' पुन: विनम्र भाव से सेवक बोला।

''क्या खाओगे ?'' फिर से मालिक ने जिज्ञासा की।

''जो आप खिलावें।'' अत्यंत ही सब्र से उत्तर दिया।

''कहाँ रहोगे ?'' मालिक ने कौतूहलवश अगला प्रश्न किया।

''जहाँ आप रखेंगे।'' सेवक ने समर्पण भाव से निवेदन किया।

लगभग एक माह ठीक से गुजरा। मायण को अपने बाएँ स्तन के पास पुन: कुछ गाँठें उठती महसूस हुईं। स्थानीय डॉक्टरों को दिखाया। सबने पुन: जाँच की सलाह दी। फिर से एफ.एन.ए.सी. कराई। दोबारा कैंसर की पुष्टि होने लगी। इस बीच विनीत का ट्रांसफर दिल्ली से लखनऊ हो गया था। दोबारा कैंसर की खबर सुनकर वह मायण को लेकर दिल्ली दौड़ा। इस बात की आशंका से उसको सिहरन होने लगी कि अब क्या होगा। एक महीने पहले सब ठीक था। डॉक्टर ने एक 'ओरल-मेडिसिन'[27] भी चालू की थी। कैंसर में फैलाव फिर से क्यों हो रहा है ?

आस्था व असमंजस के बीच का सफर ! वेदनाओं एवं प्रार्थनाओं के बीच कटती वह लंबी रात ! सुबह कब होगी ? कब वे लोग अस्पताल पहुँचेंगे ? वह डॉक्टर प्रीतम से मिलकर पूछना चाहता था, ''सर, आपके उस पाँच वर्ष के आश्वासन का क्या हुआ ?'' उसे रह-रहकर रोना आ रहा था, पर वह उसे काबू किए हुआ था। मायण के बगल में बैठा उसे सहलाता जा रहा था। माँ अपने बच्चों को भीतर तक जानती है। विनीत कुछ नहीं बोल रहा था, पर वह सबकुछ जान रही थी। अपने इष्ट और उनके वचनों का स्मरण करते हुए बोली, ''जिसको वह बहुत चाहता है, उसे दु:ख देता है। जल्दी-जल्दी कर्मों को काटता है पर दया का हाथ सिर पर रखता है। दुनिया से विरक्त करता है, इसमें भी उनकी मौज होगी।''

□

# पाँच

**अपनी सृष्टि से मानव को तांडव करना होता है। सूली चढ़नी पड़ती है। मन के जो भी बंधन हैं, उनकी कुरबानी देनी पड़ती है। बंधन से ही बंधन कटते हैं। तभी निर्मल और पवित्र होकर निखरता है। सोचते-सोचते वह मायण के करीब आया। धीरे-धीरे उसके कान में बुदबुदाने लगा।**

किसी जानलेवा बीमारी से जूझने के बाद दोबारा उस अवस्था से गुजरना हो तो एकबारगी कँपकँपी आ ही जाती है। पर कोई अन्य विकल्प नहीं था। रात हड़बड़ी में मायण व विनीत दिल्ली के गेस्ट हाउस में जाकर रुक तो गए, पर शायद बहुत देर तक दोनों को नींद नहीं आई। विनीत का ट्रांसफर दिल्ली से लखनऊ हो गया था, अत: उसे सरकारी मकान को छोड़ना पड़ा था। अब गेस्ट हाउस में रुकना पड़ा। गेस्ट हाउस के प्रबंधकगण परिचित थे, अत: अटपटा नहीं लगा। सारी सुविधाएँ थीं। पर आज महानगर की उस सुबह में चेतना का अभाव था। विनीत को हर चीज मुरझाई सी लग रही थी। मायण ने भी धीरे-धीरे अपनी पूजा समाप्त की और तैयार हो गई।

''विनीत, तुम तैयार हो गए हो तो चलें।'' मायण ने अस्थिर स्वरों में कहा।

''हूँ, अभी नाश्ता मँगा रहा हूँ। कुछ खा लो। तब चलें। अभी टाइम है।'' विनीत ने बुझे हुए लहजे से कहा।

''सुनीत क्या सीधे अस्पताल आएगा?'' मायण ने फिर पूछा।

'हाँ, भाईजी को वहीं से पास पड़ेगा। वे सीधे आएँगे। बात हो गई है।'' विनीत ने जवाब दिया।

थोड़ी देर में नाश्ता आया। दोनों ने चुपचाप नाश्ता किया। ऐसा लग रहा था मानो दोनों ने एक-दूसरे के प्रति कोई अपराध किया हो और समर्पण भाव से बैठे हों। नाश्ता करके उठे ही थे कि विनीत के एक दोस्त ने धीरे से खटखटाया और खुले दरवाजे में अंदर झाँकते हुए बोला, ''क्या मैं आ जाऊँ?''

विनीत एवं मायण ने दरवाजे की ओर रुख किया।

''अरे, हेमंत तुम! तुम्हें कैसे मालूम कि हम लोग यहाँ हैं?''

''सब खबर रखते हैं।'' हेमंत ने कहा और झुककर मायण के पाँव छुए। उसके पीछे उसकी पत्नी मालती भी चली आई। उसने भी मायण के पाँव छूते हुए विनीत से कहा, ''भइया, आपने तो बताया नहीं। लेकिन जीजी से हमें कुछ-कुछ खबर लग गई थी। इन्होंने कहा कि आया होगा तो वहीं लाजपतनगर गेस्टहाउस में होगा, चलते हैं।''

''क्या बात है! बहुत खूब!'' विनीत बोले।

फिर विनीत ने हेमंत को पूरी बात बताई। मालती इसी बीच मायण को लेकर धीरे-धीरे गेट की ओर बढ़ी, क्योंकि अस्पताल में देर होने की बात का जिक्र विनीत ने हेमंत से किया था।

''आप दोनों आइए, मैं मम्मी को लेकर नीचे चलती हूँ।'' मालती बोली।

मायण के जाने के बाद हेमंत ने विनीत से कहा कि उसने छुट्टी ले ली है। वह भी अस्पताल चल रहा है।

''नहीं, नहीं, तुम्हारी अभी जरूरत नहीं है।'' विनीत ने कहा।

''तुम देख लो। हम दोनों तो तैयार होकर आए हैं।'' हेमंत बोला।

''ऊँ हूँ। जरूरत होगी तो तुम्हें फोन करूँगा।''

''तुम इसे अन्यथा न लेना। पर जो कुछ मेरे पास है, तुम्हारा है। बैंक में दो लाख रुपए हैं। चेक काटकर ले आया हूँ। नीचे ड्राइवर व गाड़ी छोड़े जा रहा हूँ। मालती भी रुकेगी। आंटी की देखभाल कर लेगी।'' हेमंत ने कहा।

इतना अपनापन देखकर विनीत थोड़ा भावुक हो चला था, पर मुसकराते हुए बोला, ''हेमंत, मुझे मालूम है तुम बहुत अच्छे हो। अभी कुछ नहीं चाहिए। जरूरत रहेगी और तुम नहीं भी दोगे तो तुमसे छीन लूँगा। इतना हक तो तुमने पहले ही दे रखा है।''

हेमंत व विनीत के रिश्ते परिभाषित करना मुश्किल है। समझने के लिए काफी है कि हेमंत के पिता, जिनका स्वर्गवास कुछ समय पूर्व ही हुआ था, विनीत को अपने बेटे की तरह ही मानते थे।

नीचे से मायण ने गाड़ी का हॉर्न बजवाया तो विनीत तेजी से हेमंत को बॉय-बॉय कहता हुआ आगे बढ़ गया। गाड़ी में बैठकर 'एम्स' चलने के लिए ड्राइवर को हिदायत दी। बहुत जल्दी ही 'एम्स' पहुँच गए। आज साउथ-एक्सटेंशन में भीड़ ज्यादी नहीं मिली। 'एम्स' में सुनीत पहले से ही पहुँच चुका था। गाड़ी देखकर मायण की तरफ हाथ हिलाकर इशारा किया। गाड़ी रुकी तो मायण से लिपटकर उसका भरपूर आलिंगन किया। फिर धीरे से विनीत से कहा, ''डॉक्टर प्रीतम अभी-अभी आए हैं, अपने चेंबर में हैं, सीधे वहीं चलते हैं।''

मायण को व्हीलचेयर पर बिठाकर परिचालक आगे निकल गया।

पीछे से सुनीत ने कहा, ''ये साला क्या लोचा[28] हो गया। रात को पिताजी ने बताया। मैं तो तभी से सो नहीं पा रहा हूँ।''

''कोई बात नहीं। अब जो है सो है। जो संभव होगा, करेंगे। चलते हैं।'' विनीत स्थिर भाव से बोला।

डॉक्टर प्रीतम से फोन पर विनीत ने आग्रह कर दिया था। वह भी मायण के पहुँचने का इंतजार कर रहे थे। मरीज के प्रति कितनी सहानुभूति रही, यह तो कहना मुश्किल है। किंतु केस बिगड़ने पर सीनियर डॉक्टर की छवि खराब होती है और उसके लिए वह क्या महत्त्व रखता है, यह अगले ही एक घंटे में देखने को मिला।

इस बार रेडियोथैरैपी यूनिट से गुजरने पर कुछ अलग प्रकार के आभास होने लगे। मन के भीतर उदासी व हताशा हो तो बाहर की चीजें भी उसी प्रकार के प्रतिबिंब पैदा करती हैं। अस्पताल की दीवारों पर बने विभिन्न प्रकार के दाग अब गहरे हो चले थे। उनमें से कई अब कुरूप लग रहे थे। हर वार्ड में मरीज अब अधमरे शरीर का बोझा ढोते नजर आ रहे थे। धीरे-धीरे चलते सभी लोग डॉक्टर प्रीतम के कमरे के बाहर पहुँचे। उनके सहायक ने देखते ही मायण को प्रणाम किया और बैठने को कहा। डॉक्टर प्रीतम एक मरीज को देख रहे थे। उनके सहायक ने अंदर जाकर किसी को फोन भी किया। बाद में मालूम पड़ा डॉक्टर अनुपम को भी बुलाया गया है। थोड़ी देर में कॉरीडोर की दूसरी तरफ से डॉक्टर अनुपम आते दिखाई दिए, जिन्होंने ऑपरेशन करके स्तन हटाया था, गाँठें साफ की थीं। उन्हीं के साथ-साथ सभी डॉक्टर प्रीतम के कमरे में घुस गए। डॉक्टर प्रीतम ने उठकर डॉक्टर अनुपम का स्वागत किया।

''आप और हम दूसरे कमरे में चलते हैं। माताजी यहीं रहें। विनीत, आप आ जाएँ।'' डॉक्टर अनुपम ने डॉक्टर प्रीतम का अभिवादन स्वीकार करते हुए कहा।

''हाँ-हाँ, क्यों नहीं! बगल का कमरा खाली है।'' यह कहते हुए डॉक्टर प्रीतम उठे और बाहर जाते हुए पहले से बैठे हुए मरीज को अगले दिन आने को कहा।

डॉक्टर अनुपम व विनीत भी उनके पीछे चल दिए। आगे कॉरीडोर में बाएँ हाथ पर चिकित्सकों का आरामकक्ष था। दो वरिष्ठ चिकित्सकों के आगमन पर शेष वहाँ से निकलकर तुरंत चले गए।

दोनों डॉक्टरों ने विनीत से रिकॉर्ड माँगे। विनीत ने पहले दिन से ही अलग-अलग फाइलों में विषयवार रिकॉर्ड लगा रखे थे। कुछ फाइलें तो अभी से मोटी हो गई थीं। पैथोलोजिकल रिपोर्ट्स, हार्ट की ई.सी.जी. व इको कार्डियोग्राम के कागज, बोन-डेंसिटी टेस्ट, ऑपरेशन के पेपर, बी.पी., शुगर न जाने क्या-क्या कागज थे। पर सभी इंडेक्स सहित फाइलों पर लगे थे। डॉक्टर माँगते रहे, विनीत दिखाता रहा।

रिकॉर्ड देखते हुए डॉक्टर अनुपम के अंदर की पीड़ा मुखरित हो आई। बोल ही पड़े, ''डॉक्टर प्रीतम, आप रेडियोलोजी के हेड हैं। मैंने आपके पास इसलिए भेजा था कि आप रेडिएशन देते। मेरे विचार से रेडिएशन दे देते तो यह दोबारा नहीं होता।''

''आपने तो कह दिया। लेकिन पेशेंट की कंडीशन[29] माकूल नहीं थी। हारमोनल टारगेट्ड थैरैपी ही ठीक लगी। मैं अभी भी नहीं समझता कि मैंने कोई गलत निर्णय लिया।'' डॉक्टर प्रीतम बोले।

''सर्जरी मैंने की है। पूरी तरह सभी गाँठें साफ की थीं। केस बिगड़ने पर मुझे नैतिक रूप से खराब लगता है। आपकी बात पर फिर भी विश्वास करता हूँ।'' डॉक्टर अनुपम बोले; किंतु उनकी आवाज में बड़ी खीज थी।

बात बिगड़ती देखकर विनीत ने निवेदन किया कि आप दोनों चिकित्सक अत्यंत ही अनुभवी हैं। जो हुआ वह मरीज की किस्मत है।

डॉक्टर मात्र इलाज करता है, ठीक तो ऊपरवाला करता है। इतना कहकर उसने आगे की कार्यवाही हेतु अनुरोध किया। उसे यह आभास था कि अभी दोषारोपण करने पर कुछ नतीजा नहीं निकलेगा। अपनी समझ से डॉक्टर किसी को मार देने के लिए तो इलाज नहीं करता। सद्नियति से यदि कोई चूक रह गई तो भाग्य का खेल है। और अब नए चिकित्सक को आजमाने पर भी क्या गारंटी कि सबकुछ ठीक हो जाएगा।

''पर माताजी की यह हालत नहीं है कि दोबारा सेकेंडरी ऑपरेशन हो।'' डॉक्टर अनुपम बोले।

''मैं समझता हूँ। 'लो-डोज'[30] कीमोथेरैपी करके देखते हैं। उसके पहले आप नई गाँठों की बायप्सी करवा लें, ताकि इस कैंसर के पनपने की गुत्थी सुलझे।'' डॉक्टर प्रीतम बोले।

डॉक्टर अनुपम ने गरदन हिलाकर हामी भरी और सीधे 'माइनर ओ.टी.' में आने को कहा। बायप्सी की कार्यवाही पूर्ण की गई। सैंपल परीक्षण के लिए भेजा गया।

''जैसे ही बायप्सी रिपोर्ट आती है, आप उसे लेकर आएँ। हद-से-हद दो दिन लगेंगे।'' डॉक्टर प्रीतम बोले।

दो दिन बाद बायप्सी की रिपोर्ट आई। रिपोर्ट देखकर डॉक्टर अनुपम व डॉक्टर प्रीतम चौंके।

''अरे, इसमें तो दोनों फैक्टर निगेटिव हैं। ई.आर. जो पहले पॉजिटिव था, वह भी अब निगेटिव है।'' डॉक्टर प्रीतम बोले।

''मैंने फोन करके लैब से मालूम कर लिया था। दो बार सैंपल टेस्ट हुआ है। पहले की रिपोर्ट भी साथ ही भेजी थी। यह रिपोर्ट सही है।'' डॉक्टर अनुपम बोले।

''आपको कैसे पता, रिपोर्ट तो इन्होंने अभी दी है।'' डॉक्टर प्रीतम ने जिज्ञासा प्रकट की।

''मुझे इस केस की चिंता थी। मैंने लैब इंचार्ज को बता रखा था। उसने मुझे फोन कर दिया था।'' डॉक्टर प्रीतम ने स्पष्ट किया।

''हाँ, कभी-कभी ऐसा होता है। वास्तव में एक उम्र के बाद कैंसर की प्रकृति में क्या बदलाव हो, कोई कुछ नहीं कह सकता है। दोनों फैक्टर निगेटिव होने का मतलब है कि यह कैंसर बहुत ही एग्रेसिव है। शीघ्र जगह-जगह फैलेगा।'' डॉक्टर प्रीतम बोले।

''तो फिर?'' डॉक्टर अनुपम ने पूछा।

'''स्ट्रांग-कीमो' देनी पड़ेगी। कितनी सीमा तक दे सकते हैं, यह देखना पड़ेगा। कुछ टेस्ट करवाऊँगा।''

''सर, मैं समझ सकता हूँ, आप दोनों स्वयं चिंतित हैं। आगे हम लोग क्या उम्मीद रखें?'' विनीत ने झिझकते हुए हस्तक्षेप किया।

''मैं परचे पर टेस्ट व कीमो दोनों लिख दे रहा हूँ।'' डॉक्टर प्रीतम बोले।

''यदि टेस्ट रिपोर्ट ठीक है तो पहला कीमो आप अगले दिन यहीं लगवा लें। फिर हर पंद्रह दिन में लगेंगे। कुल छह डोज देनी होंगी।''

टेस्ट हुए। कीमोथैरैपी की पहली डोज भी लगी। हारमोनल थैरैपी के तो ज्यादा साइड इफेक्ट नहीं होते हैं, पर कीमोथैरैपी से बाल झड़ने लगते हैं। मरीज की शक्ल में परिवर्तन आता है। मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है। इम्यूनिटी[31] भी कम हो जाने से इंफेक्शन का खतरा बढ़ता है। मरीज के तीमारदारों का दायित्व बहुत बढ़ जाता है। डॉक्टर प्रीतम ने सभी बातों पर बारीकी से ब्रीफ किया। उन्होंने यह भी कहा कि अगले माह आकर दूसरा डोज लगवा लें अथवा चाहें तो लखनऊ में उनके अपने परिचित डॉक्टर हैं, वे भी लगा सकते हैं। उन्होंने लखनऊ के डॉक्टर का नाम व पता भी दे दिया।

इतने सारे परिवर्तनों से विचलित होना स्वाभाविक था। दूध का

जला छाछ भी फूँक-फूँककर पीता है। पिछला जो कुछ भी हो गया हो, आगे की तो और अधिक सुध लें। अत: सुनीत अगले दिन हवाई जहाज से मुंबई गया। अपनी संतुष्टि के लिए मुंबई इंस्टीट्यूट के एक बहुचर्चित डॉक्टर से भेंट का समय लिया था। उन्होंने पूरा केस शुरू से अंत तक देखा। बोले, ''विद्यमान परिस्थितियों में इलाज में कोई त्रुटि नहीं है। हम लोग भी यही करते, पर पेशेंट की कुछ विशेष परिस्थतियाँ हैं। आप चाहें तो आगे का इलाज हम भी कर सकते हैं। यही ट्रीटमेंट देंगे। आप चाहें तो वहीं इलाज चलने दें।''

फिर बोले, ''अब हम लोगों के पास कुछ नई मशीनें हैं। यह कीमो आप दिल्ली में करवा लें। फिर रेडियोथैरैपी पर यदि विचार बनता है तो बिना हार्ट को प्रभावित किए 'लो-डोज रेडिएशन' दे सकते हैं।''

''डॉक्टर साहब, क्या आप दिल्ली आते हैं। यदि आ रहे हों, तो 'मदर' को वहीं दिखा दें। यहाँ लाने में दिक्कत होगी। वैसे वे अगली कीमो शायद लखनऊ में लगवाएँ। कहें तो लखनऊ से मुंबई ले आएँ।'' सुनीत बोले।

''मुझे खयाल आ रहा है कि शायद मुझे 15 दिन बाद बनारस यूनिवर्सिटी में परीक्षा लेने जाना है। आपके भाई माताजी को वहाँ मुझे दिखा दें।'' डॉक्टर बोले।

सुनीत पूरी बात समझकर दिल्ली लौट आए। सभी से मशवरा किया। सहमति यही बनी कि अभी दिल्ली में ही डॉक्टर प्रीतम का इलाज कराते रहें।

दूसरी कीमो लखनऊ में लगनी थी। पूरा प्रोटोकॉल[32] डॉक्टर प्रीतम ने लिखकर दिया। लखनऊ में डॉक्टर शलभ से परिचय हुआ। बहुत ही व्यवस्थित एवं सुचारू रूप से इलाज करनेवाले डॉक्टरों में से थे। खुद भी अपने स्टाफ के कार्य व व्यवहार पर ध्यान देते थे और मरीज के

तीमारदारों से भी पूरी तरह से संवेदनशील होने की अपेक्षा करते थे। कैंसर के मरीज का मनोविज्ञान भी भली-भाँति समझते थे। पहले दिन ही उन्होंने ब्रीफ किया—

''हर कीमो के पहले ब्लड टेस्ट करवाकर 'आर.बी.सी.,' 'डब्ल्यू.बी.सी.' तथा 'प्लेटलेट्स' का स्तर देखना होगा। कीमो से इसमें बहुत कमी आती है। साथ ही सोडियम व पोटैशियम का अनुपात भी गड़बड़ा जाता है। माताजी की विभिन्न बीमारियों को देखते हुए किसी भी दवा का तत्काल प्रभाव पड़ेगा। हार्ट का भी विशेष खयाल रखें। हार्ट-स्पेशलिस्ट से मिलकर अपनी तैयारी कर लें। मैं भी कह दूँगा। इसी प्रकार शुगर व ब्लड प्रेशर के लिए भी 'जनरल-फिजिशियन' की व्यवस्था रखें। 'इम्यूनिटी' कम हो जाने से बुखार या अन्य पेचीदगियाँ भी हो सकती हैं। हम लोगों के टेलीफोन नंबर रखें।''

फिर कुछ सोचते हुए आगे बोले, ''कीमो के विपरीत प्रभाव से सिरदर्द, उलटी, चक्कर, गैस, दस्त आदि भी होंगे। तत्काल इलाज हेतु कुछ दवाइयाँ भी लिख रहे हैं। जरूरत के अनुसार देनी होंगी। अब सबसे महत्त्वपूर्ण बात, जो मैं आपको बताना चाहूँगा, वह यह है कि मरीज के हिसाब से आप अपनी 'लाइफ-स्टाइल' बदलें। माताजी का खाना बदलना होगा। खट्टा, चटपटा, एसिडिक[33] फूड कम करेंगे। उनके खाने के हिसाब से आप सभी खाएँ तो उन्हें यह नहीं लगेगा कि वे अब मजबूर हैं। न ही उनका मन चलेगा।''

''जी, हम समझ रहे हैं।'' विनीत बोला।

''नहीं, इतना ही नहीं। अभी बहुत कुछ और करना होगा। माताजी को अस्पताल में कम-से-कम रखेंगे। प्रतिरोध क्षमता कम होने से इंफेक्शन फैलता है। अस्पताल में कई तरह के इंफेक्शन होते हैं। अत: घर सबसे ज्यादा सुरक्षित होगा। घर में साफ-सफाई बरतें। माताजी के कमरे में

कुछ गिने-चुने लोग ही जाएँ। पूरी सफाई से हाथ धोएँ। 'एप्रेन' पहनें। मुँह पर 'मास्क' लगाएँ। बाहर की व घर की चप्पलें अलग रखें। कपड़े, बिस्तर धुले हुए व साफ इस्तेमाल करें। रोज बदलें। आँगन तक में दिन में 2-3 बार फिनाइल का पोंछा लगवाएँ।''

''जी सर, डॉक्टर प्रीतम ने भी बताया था।'' विनीत बोले।

''मैं बार-बार इसलिए कहता हूँ, क्योंकि यह बहुत जरूरी है। आप किसी को मिलने भी न आने दें। उसमें भी खतरा रहता है। बहुत जरूरी हो तो स्पीकर फोन पर फोन दूर रखकर थोड़ी सी बात करा दें। लेकिन पेशेंट को इस सबका विपरीत मानसिक प्रभाव भी न पड़े। अत: जो भी लोग नजदीक रहें, उन्हें खुश रखें। यह बहुत जरूरी है।'' डॉक्टर शलभ ने अपनी बात पूरी करते हुए विराम लिया।

''खाने के बारे में कौन··· ?'' विनीत ने पूछा।

''हाँ, मैं डॉक्टर रेड्डी से कह दे रहा हूँ। डायटीशियन आकर बता देगी। डाइबिटीज के हिसाब से भी देखना होगा। कीमो से 'इंसुलिन' के कंट्रोल में भी बाधा आएगी। आप डॉक्टर शरत से भी मिल लें।''

''जी सर।'' यह कहते हुए विनीत ने अपने कागज समेटे और डॉक्टर शलभ से विदा ली।

कीमो चलने के साथ ही नए-नए अनुभव होते गए। विनीत से अकेले नहीं सँभला। उसने अंजली को आने के लिए कहा। वह भी काफी दिन रही। कीमो के बाद जो शरीर में परिवर्तन होते हैं, वे बहुत ही भयावह होते हैं। मरीज दर्द व बेचैनी से परेशान हो जाता है। मायण की भी यही हालत रही। यहाँ तक कि शरीर को ठंडक पहुँचाने के लिए बर्फ की थैलियाँ पूरे शरीर पर लगानी पड़ती थीं। तब कहीं चैन आता था। रात-दिन का कोई पता नहीं रहता। अत: तीमारदारी में दोस्तों व रिश्तेदारों से भी अनुरोध किया। मायण के व्यवहार के चलते सभी

निकट परिजन बारी-बारी से उसकी सेवा में आए।

कीमो लगने पर 'इंसुलिन-लेवल' बहुत बदल जाता था। दिन में दो-तीन बार ब्लड शुगर देखकर, डॉक्टर से राय लेकर शुगर लेवल कंट्रोल रखना पड़ता था। पहले 'हाई-शुगर' थी, बाद में 'लो-शुगर' भी हो गई। तब मीठा भी तैयार रखना पड़ता था। एक बार तो चीनी का पानी पिलाकर जान बचाई।

ऐसे समय में उन्हीं परिजनों का मरीज के निकट होना जरूरी है, जिनमें मरीज के प्रति दर्द हो। औपचारिकतावाले हितैषी उतना ध्यान नहीं देते। चूक हो सकती है। विनीत कोई त्रुटि नहीं करना चाहता था। उसने प्रशिक्षित नर्सिंग स्टाफ भी घर पर रखा। यह विकल्प महँगा होता है, पर विनीत व सुनीत ने मिलकर यही तय किया। मायण के इलाज के सामने खर्चा क्या! वैसे तो अब माँ-बाप को कई लोग रखने में ही संकोच करते हैं। यदि बीमार हों तो उन्हें और भी बड़ा बोझ मानते हैं। ऐसे में कोई-कोई तो अपने माँ-बाप को कहीं छोड़ आते हैं। खर्चा भेज देते हैं। नहीं छोड़ पाते तो उनका सामान सीढ़ी या छत पर रख आते हैं। नौकर की भाँति भोजन देते रहते हैं। मजबूर माँ-बाप अपना 'ठिकाना' तलाशते रह जाते हैं। पर मायण भाग्यशाली थी। बेटों ने कोई कमी नहीं रखी।

कीमो का अपना ही खेल है। मायण के शरीर में सोडियम व पोटैशियम का स्तर इतना कम हो गया कि तत्काल हार्ट केयर-सेंटर में भरती कराना पड़ा। डॉ. शलभ की राय काम आई। पहले से व्यवस्था थी, अत: समय नहीं खोया। इलाज हो गया। हार्ट अटैक से मायण निकल आई। माइल्ड[34] अटैक होकर रह गया। पोटैशियम के पाउच दिए गए। बीकोसूल के कैपसूल खाली करके उनमें नमक भर-भर कर खिलाया गया। तब सोडियम का स्तर 2-3 दिन में ठीक हुआ।

मायण का 'थायरॉड' व 'इंसुलिन' के संतुलन बिगड़ने से सूजन रहने लगी। सूजन की दवा से फिर सोडियम का अनुपात गड़बड़ाया। विनीत व अन्य परिजन इस बात से हैरान हुए कि किस-किस प्रकार से विभिन्न तत्त्वों का संतुलन करें। हर मर्ज के लिए एक अलग डॉक्टर। किसकी दवा से क्या हो जाए, अनुमान लगाना मुश्किल था। क्या-क्या 'साइड-इफेक्ट' हों। इस प्रकार के मामलों में व्यापक दृष्टिकोणवाले जनरल फिजिशियन का बहुत महत्त्व हो जाता है।

लगातार असहनीय वेदना से मायण धीरे-धीरे हताश होने लगी।

''मैंने क्या कर्म किए कि इस तरह दु:ख झेल रही हूँ।'' मायण ने साँस छोड़ते हुए कहा। अंजली व विनीत सुन रहे थे। उन्होंने कभी इतना कमजोर उन्हें नहीं देखा था।

''माँ, तूने तो संतों की सेवा की है, सबका खयाल रखा है। इस जन्म में तो सब अच्छा ही किया।'' विनीत ने ढाढ़स बँधाया।

''होगा पिछले जन्मों का...'' मायण बोली।

''पता नहीं, पर कर्मों पर भीष्म पितामह का एक कथानक मैंने भी सुना है।'' विनीत बोला।

''तूने क्या सुन लिया?'' अंजली ने प्रश्न किया।

''जब भीष्म पितामह तीरों की शय्या पर वेदना सह रहे थे तो उन्होंने भी ऐसा ही एक प्रश्न किया, जिसका जवाब स्वयं श्रीकृष्ण ने दिया।'' विनीत बोला।

''हाँ, सुना तो मैंने भी है। भीष्म पितामह बोले थे कि उन्हें उनके सौ जन्म याद हैं। उन्होंने ऐसा कोई कर्म नहीं किया, जिससे कि तीरों की शैया पर वेदना सहनी पड़े। इस पर शायद श्रीकृष्ण ने उनके एक सौ एक वें जन्म की एक बात याद दिलाई थी।'' अंजली बोली।

''तू कह तो ठीक रही है। पर शायद इस पर इस वक्त हम लोग आगे

चर्चा न करें तो ठीक है। मजमून समझ में आ गया है।'' विनीत बोला।

''समझ तो मैं भी रही हूँ। पर मन नहीं मानता।'' मायण बोली।

न जाने क्यों विनीत मन-ही-मन सोचता रहा—एक साँप को सौ जन्म पहले अधमरा कर काँटों में फेंकने पर उसकी पीड़ा का भुगतान भीष्म पितामह ने कितने जन्म बाद जाकर किस प्रकार किया था। हिंदू दर्शन के हिसाब से कर्मों का यह विधान देह स्वरूप में देवताओं पर भी लागू होता है।

ऐसी मन:स्थिति में तरह-तरह के खयाल आते हैं। अपनी सृष्टि से मानव को तांडव करना होता है। सूली चढ़नी पड़ती है। मन के जो भी बंधन हैं, उसकी कुरबानी देनी पड़ती है। बंधन से ही बंधन कटते हैं। तभी आत्मा निर्मल और पवित्र होकर निखरती है। सोचते-सोचते वह मायण के करीब आया। धीरे-धीरे उसके कान में बुदबुदाने लगा।

''देखो, इसे मालिक की मेहरबानी ही मानो। इसे दैहिक कष्ट रूप में न देखकर बंधन-मुक्त होने का जरिया मानो। आपने ही तो बताया था न, प्रसाद को भक्ति-भाव से खाओगे तो भक्तिफल देगा। मिठाई समझकर खाओगे तो केवल शरीर में फैलाव करेगा। इसी प्रकार इन दुखों को भी 'मालिक' की रजा समझो। इसी हिसाब से भाव समर्पण करो। भक्तिफल मिलेगा। जब शरीर, बुद्धि, विवेक कुछ काम न करे तो 'आस्था' काम करती है। वह शक्ति अनंत है।''

विनीत अचंभित था कि ये शब्द उसकी जुबान से कैसे निकल रहे हैं! क्या वह खुद इनका मतलब समझ पाया है? यह सब उसने पढ़ा जरूर था, मनन भी किया था, पर खुद उनमें अभी तक रम नहीं पाया था। यह सब पाठ पढ़ाने का उसे क्या अधिकार है? सोचते-सोचते उसे यह लगा कि आस्था का ज्योतिपुंज उसमें भी समाहित होने लगा है।

कुछ साल पूर्व विनीत की जिदंगी में भी उतार-चढ़ाव आए। एक

बार तो गाड़ी के नीचे विस्फोट हुआ। कैसे बच गया, पता नहीं। तब मायण ने ही उसे कहा था, 'उसकी लीला कौन जान सकता है। हर अकाज में उसका कोई-न-कोई आशीर्वाद छिपा रहता है। उसे ढूँढ़ो और आगे बढ़ो। नया द्वार मिलेगा। मेरा बेटा है। कभी हारना नहीं।' वही हिम्मती मायण अपने मूल्यों के सामने जब कमजोर पड़ती दिखीं, तो विनीत को भीतर से लगा कि मायण को आत्मिक दृष्टि से पुष्ट किया जाना जरूरी है।

मायण को यह सब बताने की जरूरत नहीं थी। उसकी अपनी आंतरिक शक्ति का स्तर बहुत ऊँचा था। कई साल पहले का एक किस्सा मायण सुनाती थी, जो कि बहुत बड़ी हकीकत को दरशाता है। एक रात घर में दूध खत्म हो गया था। परिस्थितियों को देखते हुए रात ग्यारह बजे चार किलोमीटर दूर हलवाई से दूध लेने खुद पैदल चल पड़ी। सुनसान सड़क। आते-जाते लोगों का साया भी डरावना लगता था। कोई लूट न ले। हमला न कर दे। विभिन्न आशंकाएँ लेकर धीरे-धीरे चलती रही। किसी तरह हलवाई के यहाँ पहुँची। वहाँ बैठे कुछ लोग उसे घूरने लगे। रात को अकेले, एक पीतल का गिलास दोनों हाथों में दबाए, आधे घूँघट में से बोली, 'पाव भर दूध चाहिए।' तभी किसी ने कोई टिप्पणी कसी, जो मायण को ऊपर से नीचे तक कंपित कर गई। वह झट से दूध का गिलास पकड़-कर तेज कदमों से घर की ओर बढ़ी। उसे लगा कि वह सुरक्षित नहीं है। बार-बार पीछे देखती जाती थी। और जब उसका डर अपनी सीमा को पार करने लगा तो गुरुजी को याद करने लगी। विश्वास व आस के साथ गुहार करने लगी। तभी एक अचंभा हुआ। उसने पाया कि गुरुदेव स्वयं उसके साथ-साथ चल रहे हैं। घर तक निश्चिंत पहुँच गई। घर पहुँचकर जब पुनः मुड़कर देखा तो गुरुदेव अदृश्य हो चुके थे। विनीत ने मायण को उनका स्वयं का अनुभव

किया गया अतीत का यह वाकया भी ध्यान दिलाया। आस्था एक ऐसी शक्ति है, जो अलौकिक की भी अनुभूति करा देती है।

मायण की स्मृतियों से उपजी खुशी उसके चेहरे को दीपायमान कर रही थी। विनीत ने चुटकी ली, ''आप जो हैं, महाराज के वचन ध्यान से नहीं सुनती हैं। बार-बार वे 'घट' की सफाई पर जोर देते हैं। आप जो हैं घट को 'घर' सुनती हो और लग जाती हो सींक की झाड़ूँ लेकर आँगन धोने।'' मायण खुलकर हँसी और लाड़ से बोली, ''तू है न पढ़ा-लिखा। तू ही समझ और मुझे बता। मैं क्यों दिमाग लगाऊँ!'' विनीत को लगा कि विचार-मंथन से वह कुछ हद तक अपने मिशन में सफल हो गया है।

□

# छह

**मायण के परिजनों ने इन विधाओं को भी अपनाया। कुछ तो लाभ अवश्य हुआ होगा। पर ये सब वे शायद पहले भी शुरू कर सकते थे। या तो किसी ने ध्यान नहीं दिया या एक-दूसरे की जिम्मेदारी समझकर अपने काम में लगे रहे।**

मेडिकल साइंस (एलोपैथी) के डाँवाँडोल परिणाम देखने पर विनीत एवं उसके परिजनों को लगा कि वैकल्पिक विधाएँ भी आजमाएँ। भारतीय औषधि विज्ञान भी किसी समय में बहुत विकसित था। काफी खोज करने पर तरह-तरह की बातें ज्ञात हुईं। किसी भी निर्णय के पूर्व उपलब्ध जानकारी की अपनी-अपनी समझ के हिसाब से पुष्टि कर लेना आवश्यक है। जयपुर में एक विशेषज्ञ मिले, जिन्होंने कई जड़ी-बूटियों पर रिसर्च करके एक दवा तैयार की थी। इन जड़ी-बूटियों के नाम ज्ञात करके विनीत ने लखनऊ स्थित 'सेंट्रल ड्रग रिसर्च इंस्टीट्यूट' से उनकी पुष्टि कराई। सभी में ऐसे तत्त्व थे, जो 'जनरल इम्यूनिटी' तथा 'एलकेलिन बेस'[35] को बढ़ाते थे। थोड़ा वैज्ञानिक आधार मिलने पर विनीत तथा सुनीत ने जयपुर जाकर चिकित्सक से साक्षात्कार किया। उन्होंने कई यथार्थपूर्ण तथ्य बताए, ''देखिए, ये सब दवाइयाँ मैंने अपने

अनुभव से चिह्नित की हैं। इनका कोई सीधा या तत्काल फायदा नहीं है। ये दवाइयाँ शरीर की प्रतिरोध क्षमता को बढ़ाती हैं और 'एसिडिक' तत्त्वों को कम करती हैं। कैंसर के सेल एसिडिक वातावरण में पलते हैं और शरीर को खोखला कर देते हैं। मेरी दवा इसी सिद्धांत पर काम करती है कि कैंसर सेल न पनपें तथा शरीर की प्रतिरोध-क्षमता बढ़ती रहे। आप चाहें तो यह भी इस्तेमाल कर लें। बहुत से लोगों को इससे फायदा हुआ, तब मैंने इसे पेटेंट कराकर सभी को बताना शुरू किया है।''

विनीत के चेहरे के भावों को मापते हुए चिकित्सक ने कहा, ''मैं कीमोथेरैपी के पक्ष में नहीं हूँ। आप ही बताएँ—कुछ डाकू किसी गाँव में घुसकर गाँववालों में हिलमिल जाएँ, जिन्हें पुलिस पहचान न सके। ऐसे में सभी गाँववालों को खड़ा करके आप इस धारणा से सभी पर गोली चला दें कि गाँववाले मरें तो क्या, हो सकता है कि कुछ डाकू भी मर जाएँ। यह कहाँ की बुद्धिमानी हुई। और यदि ज्यादातर अच्छे आदमी मर गए, बुरे न मरें तो?'' जिस प्रकार से चिकित्सक ने अपनी बात कही, विनीत को कीमोथेरैपी की प्रासंगिकता पर प्रश्नचिह्न नजर आने लगे। बात में दम तो था।

अंजली की बिटिया, जो बाहर पढ़ रही थी, ने भी कैंसर पर कुछ खोजबीन की थी। उसने एक किताब इंटरनेट पर भेजी। इसी सिलसिले में 'जॉन हॉपकिन इंस्टीट्यूट' ने भी अपनी रिसर्च के बाद कीमोथेरैपी के स्थान पर अन्य विकल्पों पर जोर देना शुरू किया। खाद्य पदार्थों के माध्यम से 'इम्यून सिस्टम' को मजबूत करने पर जोर देने की बात कही गई। यह भी कहा गया कि सर्जरी, रेडिएशन या कीमो से कैंसर सेल के अन्य भागों में फैलने की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं। उन्होंने भी एसिडिक परिवेश कम करने की बात पर बल दिया। वस्तुतः दूध, चीनी, चाय,

कॉफी, मीट आदि का सेवन न करने पर बल दिया। इनके सेवन से टॉक्सिक तत्त्व बढ़ते हैं, जो कैंसर को बढ़ावा देते हैं। इसके अतिरिक्त कई अन्य शोधकर्ताओं के विचार भी मिले। ताजा सब्जी, अंकुरित अनाज, मेवा व ताजा फलों के सेवन करने की बात बार-बार कही गई, जिससे 'एल्केलिन-बेस' बढ़ने में मदद मिलती है। ताजा फलों व सब्जियों के जूस को पीने पर जोर दिया गया। इनसे ऐसे 'इंजाइम' मिलते हैं, जो कि कैंसर से लड़ते हैं। ज्यादा तापमान पर इंजाइम नष्ट हो जाते हैं। चालीस डिग्री सेल्सियस से अधिक किसी वस्तु को गरम न करने के तथ्य भी ज्ञात हुए।

कई सफल प्रयोगों एवं जीवंत उदाहरणों के अध्ययन से भी ज्ञानवर्धन हुआ। 'ब्ल्यू-बेरी', 'अकाय- बेरी', 'एसपेरेगस' आदि उत्पादों के सेवन से भी अभूतपूर्व परिणाम लोगों को मिले। अब इनके 'एक्स्ट्रेक्ट'[36] की टेबलेट भी मिलती हैं। 'व्हीट-ग्रास'[37] के रस से भी लाभ देखा गया।

'एसियक-टी' के सेवन से भी फायदा होता देखा गया। यद्यपि इस बाबत कोई प्रामाणिक औषधीय तथ्य उपलब्ध नहीं है। एक बोतल में चाय की तरह बनाकर रेफ्रीजरेटर में रख लो। फिर आधा-आधा प्याला दिन में 3-4 बार सेवन करो।

तुलसी के सेवन से भी सकारात्मक असर पाया गया।

मायण के परिजनों ने इन विधाओं को भी अपनाया। कुछ तो लाभ अवश्य हुआ होगा। पर ये सब वे शायद पहले भी शुरू कर सकते थे। या तो किसी ने ध्यान नहीं दिया या एक-दूसरे की जिम्मेदारी समझकर अपने काम में लगे रहे।

''बासी खाना खाने व अचार के सेवन से भी एसिडिक परिवेश बढ़ता है। कैंसर प्रगाढ़ होने की संभावनाएँ बनी रहती हैं, यह तो सब बंद करना चाहिए।'' अजंली के मुँह से निकला।

'' 'प्रिजरवेटिव'[38] मिले हुए कंपनी निर्मित उत्पाद आ रहे हैं, उनसे भी यही हश्र होगा।'' उसने आगे कहा।

खोजते-खोजते एसपेरेगस की सफलता के कई मामले मिले। बताते हैं, उसमें 'हिस्टोन्स' नामक प्रोटीन होता है। साथ ही 'ग्लूटाथियोन' नामक 'एंटी-ऑक्सीडेंट' भी उसमें रहता है। एसपेरेगस की ताजा डंडियाँ आती हैं। उनका जूस निकालकर रख लिया जाता है। चाय के चार चम्मच सुबह व चार चम्मच शाम को लेने से 3-4 महीने में प्रभाव दिखने लगता है।'' विनीत के एक परिजन ने छानबीन करके अपनी बात बताई।

कैंसर एक दिन में नहीं पनपता। खाने के जरिए कैंसर के प्रति प्रतिरोध क्षमता विकसित की जा सकती है। हलदी, ब्ल्यूबेरी, स्ट्रोबेरी, ग्रीन-टी, सोयाबीन, अंगूर, लहसुन, पत्तागोभी, ब्रोकली आदि खाद्य पदार्थ कारगर रहते हैं। संतरा व नीबू भी लाभप्रद हैं।

कैंसर के प्रति पहले इतनी जागरूकता नहीं थी। मायण के केस में पहले से यह सब नहीं किया गया। पर आगे के लिए परिवार को सबक मिला। अब कैंसर की विकसित अवस्था में जो कुछ किया जा सकता था, सब मिलकर प्रयास करने लगे।

□

# सात

**मरीज को अस्पताल में छोड़कर आ भी नहीं सकते। मानसिक सांत्वना के लिए निकट परिजन का दिखना जरूरी है। साथ ही भीड़ भी नहीं लगा सकते। इंफेक्शन का खतरा रहता है। अन्य मरीज भी हैं। सभी कायदे-कानूनों एवं नैतिक दायित्वों का निर्वहन आवश्यक है।**

इसी बीच मुंबई कैंसर इंस्टीट्यूट के डॉक्टर वाराणसी आए तो विनीत व उसकी मुँहबोली बहन अर्चना लखनऊ से मायण को बनारस ले गए। डॉक्टर ने सभी पहलुओं पर विचार किया। मायण को देखा। सभी परिस्थितियों के दृष्टिगत चल रहे इलाज पर संतोष व्यक्त किया। निरोधात्मक पहलुओं पर भी उन्होंने विश्वास व्यक्त किया।

मायण का कीमो पोर्ट पकाव ले रहा था। शरीर को 'इंफेक्ट' कर रहा था। उसे निकलवाने की सलाह दी। यह भी कहा कि जो कीमो चल रही है, उसका डोज पूरा करके मुंबई आ जाएँ। उनके पास नई मशीनें आई हैं। हार्ट पर बिना प्रभाव डाले रेडिएशन भी दे देंगे।

वाराणसी में भी मायण के एक-दो रिश्तेदार रहते थे। वाराणसी गई तो उनसे भी मिलना चाहा। ''चल, हमारे गाँव का एक परिवार यहाँ

रहता है, उनसे मिलते हैं।'' मायण बोली।

''कौन है ? पहले तो कभी बताया नहीं ?'' विनीत ने प्रश्न किया।

''अरे, कभी-कभी मिलते रहते हैं। इनके छोटे भाई से मेरे भाई की मँझली लड़की ब्याही है। मिल तो ले। बड़ा मीठा बोलते हैं। व्यवहार-कुशल हैं। भाई स्वरूप हैं।'' मायण ने अपनी बात पूरी की।

''अच्छा, तो मेरे भी मामा लगे। चलो, एक और सही, मिल लेते हैं।'' विनीत ने लंबी साँस छोड़ते हुए कहा।

गाड़ी से मामा के घर पहुँचे। देखते ही बोले, ''अरे बाईजी, थे ! थानै देख कर तो महारा पगाँ माँ घुँघरू लाग गया।''

''भाई साहब, आपकी बोली की मिठास से तो मुझे भी पाँव में घुँघरू बाँधकर नाचने का मन कर रहा है।'' फिर मायण ने विनीत की ओर देखा। दोनों धीरे से मुसकरा दिए।

अर्चना पीछे-पीछे चल रही थी। उसे आधी बातें समझ में आईं, आधी नहीं। खैर, खातिर करवाकर सभी लखनऊ लौटे और आगे का प्लान बनाया।

कीमोथेरैपी के अगले डोज लगवाएँ या नहीं, इस पर भी वाराणसी में विचार हुआ था। डॉक्टर बोले थे, ''माताजी का कैंसर एग्रेसिव है। बहुत जल्दी फैलता है। 'प्रीवेंटिव-ट्रीटमेंट'[39] कब तक कारगर हो, पता नहीं। बहुत पहले से चलता तो बात भी थी। अभी भी चलाते रहें। लाभ ही होगा, नुकसान नहीं। पर कीमो नहीं दी तो गाँठें बढ़ती जाएँगी। फिर पककर फूटने का डर है। जगह-जगह घाव हो जाएँगे।''

ऐसी स्थिति में निर्णय लेना मुश्किल होता है। कुछ दिन कीमो में विलंब हुआ तो गाँठें बढ़ती व पकती दिखाई दीं। सभी की राय बनी कि 'लो-डोज' कीमो लगाया जाए। मायण को फिर भरती किया गया। अब अस्पताल में डॉक्टर की देख-रेख में कीमो दी जानी थी। मायण के

स्वास्थ्य के सभी पैरामीटर्स गड़बड़ाने लगे थे। डायबिटीज भी परेशानी पैदा कर रही थी।

मायण अभी भी सबसे हँस-हँस के बातें करती। सभी को स्नेह से देखती। अस्पताल के कार्मिक भी उनसे प्यार करने लगे। विनीत के दोस्त भी अपने परिवार सहित सेवा में जुटे रहे। अस्पताल में रहो तो मदद की बहुत आवश्यकता रहती है। मरीज को अस्पताल में छोड़कर आ भी नहीं सकते। मानसिक सांत्वना के लिए निकट परिजन का दिखना जरूरी है। साथ ही भीड़ भी नहीं लगा सकते। इंफेक्शन का खतरा रहता है। अन्य मरीज भी हैं। सभी कायदे-कानूनों एवं नैतिक दायित्वों का निर्वहन आवश्यक है।

कीमो पोर्ट हटाया गया। कीमो पोर्ट के स्थान पर व बगल के दाहिने स्तन पर पकावट होने लगी थी। इंफेक्शन फैलकर जम सा गया था। डॉक्टर उसे कम नहीं कर पा रहे थे। चूँकि कीमो चल रहा था, 'ब्लड-कल्चर' की रिपोर्ट भी अस्पष्ट आ रही थी। इंफेक्शन रोकने को एंटीबायटिक का निर्धारण भी मुश्किल लगा। हलका बुखार रहने लगा। फिर आशंकाओं ने जन्म लिया। फीवर जा क्यों नहीं रहा? 'लो-इम्यूनिटी' रहने से कहीं 'ट्यूबर क्यूलोसिस' तो नहीं है? अकसर हो जाता है। सभी टेस्ट कराए। कोई नतीजा नहीं मिला, जिस पर सटीक रूप से निर्भर रहा जा सके।

अगली कीमो बिना पोर्ट लगी। इस कीमो के बाद गाँठें कम होती नजर आईं। डॉक्टर शलभ ने भी महसूस किया और थोड़ी-बहुत सांत्वना व्यक्त की, किंतु ब्लड रिपोर्ट में अब स्थिति ठीक नजर नहीं आ रही थी।

''मैं नहीं समझता कि अगला कीमो माताजी सहन कर पाएँगी। अभी पंद्रह दिन का समय है। कितना सुधार होगा, पता नहीं। अभी दस

दिन तक तो यह कीमो ब्लड काउंट्स को और भी कम करेगा। आपको हर दूसरे दिन ब्लड टेस्ट कराना है। घर पर ऑक्सीजन सिलेंडर भी रखें। एमरजेंसी ड्रिल तैयार रहे।'' डॉक्टर शलभ ने राय दी।

''जी, यह व्यवस्था भी पहले से एहतियातन कर रखी है। आप एक दूसरे पेशेंट को बता रहे थे, तभी नोट कर लिया था।'' विनीत ने कहा।

दस दिन गुजरे, फिर पंद्रह, पर मायण अगला कीमो लगाने लायक नहीं हुई।

''आप स्वयं निर्णय ले लें। अगला कीमो ये कदाचित् सहन न कर पाएँ। हो सकता है, कल ही इनका अंतिम दिन हो। नहीं तो 4-5 महीने और रह सकती हैं, इसके पहले कि कैंसर अपना आखिरी रूप दिखाए।'' डॉक्टर शलभ ने अलग ले जाकर विनीत को अपने मन की बात बताई।

इस तरह के निर्णय बहुत ही मुश्किल होते हैं। इधर कुआँ उधर खाई। अन्य कैंसर निवारण संस्थानों से इलाज कराकर लौटे विनीत के कुछ जानकार मित्रों के परिजन भी एक-दो साल इलाज करवाकर चल बसे थे। विनीत की अपनी एक बैचमेट, जो भारत सरकार में उच्च अधिकारी थी, अमेरिका में ब्रेस्ट कैंसर का इलाज करवा रही थी। ऑपरेशन, रेडिएशन सब कराया, पर उनका भी समय पूरा हो चुका था। विनीत के कार्यालय के एक वरिष्ठ अधिकारी की पत्नी कुछ दिन पहले कीमो के चलते अलविदा कह गई थीं।

बायाजी इस समय लखनऊ में थीं। विनीत ने उनसे मशवरा किया। उनकी आँखों में भी पानी आ गया। रिश्तेदार होने से ज्यादा वे मायण की बचपन की मित्र थीं। विनीत व बायाजी विनीत के कमरे में छोटी गोल टेबल पर आमने-सामने बैठे एक-दूसरे की आँखों में देखते रहे। तेज

जलती रोशनी भी अंधकार-युक्त लग रही थी। कमरे की दीवारें वीरानगी को न्योता देती प्रतीत हुईं।

''लाला, तू ठीक कह रहा है। कीमो न लगवा। अब जो होगा सो होगा। थोड़े दिन और रहेगी। हाँ, काकाजी या और किसी को बताने की जरूरत नहीं है।'' बायाजी बोलीं।

''पिताजी को तो नहीं बताऊँगा, पर सुनीत व अंजली को बताना जरूरी है। वे भी जानकारी का हक रखते हैं।'' विनीत बोला।

''ठीक है, जो तू उचित समझे।'' बायाजी बोलीं।

फिर बहुत देर तक चुप्पी छाई रही। रात कैसे कटी, मालूम नहीं। विनीत सोया नहीं। मन काफी विचलित रहा। फिर स्वयं को सँभाला। सुबह होने पर पूजा-पाठ किया। अपने इष्ट का स्मरण कर अस्पताल जाने को तैयार हुआ। अब एक कठिन निर्णय पर अमल करना था। डॉक्टर को तो कह देगा, पर मायण से क्या कहेगा? अभी तक सबकुछ उसे बताता रहा है। अब क्या वह मायण से सच छुपाएगा या उसे असलियत बता सकेगा?

□

# आठ

**''मैं माताजी के बारे में कुछ नहीं कह रही। आपने इस प्रकार के मामलों में क्या होता है, यह मुझसे जबरदस्ती जानना चाहा। पर आप आशावान रहकर पेश आएँ। किसी भी प्रकार का 'निगेटिव-प्रिडिक्शन' मेरी 'एथिक्स' के खिलाफ है। यह किसी बेटे को भी नहीं करना चाहिए।'' डॉ. शालिनी थोड़ा रुष्ट होकर बोलीं।**

विनीत की मायण को कुछ भी बताने की हिम्मत नहीं हुई। उसने मायण से सही तथ्य छुपाते हुए बताना शुरू किया, ''डॉक्टर ने चेक किया है। गाँठें घुल गई हैं। आप भी छूकर देखो।''

''हाँ, मैं भी रात को छूकर देख रही थी तो कहीं महसूस नहीं हुईं।''

''कीमो से आपको परेशानी होती है, अत: उसे बंद कर रहे हैं। डॉक्टर शलभ कह रहे थे कि मुंबई इंस्टीट्यूट की एक डॉक्टर अब लखनऊ में प्रैक्टिस कर रही हैं। डॉ. शालिनी नाम है। वह कैंसर की दवाएँ जानती हैं। 'इंट्रावीनस-कीमो'[40] की जगह 'ओरल-मेडिसन' लेते रहें। उससे काम चल जाएगा। रोज की दो गोली। फिर ये सब परेशानियाँ भी नहीं होंगी।''

मायण का चेहरा एकदम खिल गया। वह वाकई रात-दिन सुइयाँ

चुभवाकर, कीमो के दर्द से परेशान हो उकता गई थी। विनीत की बात सुनकर उसे बड़ी राहत महसूस हुई।

मायण बोली, ''वाह, यह तो बहुत ही अच्छा हुआ। तू जल्दी उससे टाइम ले ले। मैं उससे गोलियाँ लेकर सत्संग में चली जाऊँगी। बहुत दिन से दूर हूँ। फिर तेरे पिताजी भी अकेले हैं।''

बच्चे की भाँति भोलेपन से वशीभूत मायण विनीत के हर शब्द पर अटूट आस्था करती हुई अपने बड़े-बड़े प्लान बना रही थी। विनीत को एक बार लगा कि वह माँ को झाँसा दे रहा है। फिर उसने मन बनाया, 'जितने दिन भी अब ये रहे, खुश रहें।'

डॉक्टर शालिनी किसी मनगढ़ंत कहानी का पात्र नहीं थीं। यह सत्य था कि डॉक्टर शलभ ने पहले इसका जिक्र विनीत से किया था। डॉ. शालिनी को ढूँढ़ने में समय नहीं लगा और मुलाकात करते ही अगले दिन का अपॉइंटमेंट भी मिल गया। एक प्राइवेट अस्पताल में प्रैक्टिस करती थीं।

मायण के भीतर एक आकर्षण था। कोई भी उससे मिलने के बाद उसका हो जाता था। बुजुर्ग, सरल, शांत तथा प्यार उड़ेलती हुई वह सबको अपना बना लेती थी। जो कुछ मन की गाँठें रही भी होंगी तो कैंसर की गाँठों के इलाज में वे भी कब की छूमंतर हो गईं। तन की धुलाई के साथ-साथ मन की धुलाई भी हो रही थी। डॉ. शालिनी मायण के पहुँचते ही अपना सब काम छोड़कर उन्हें व्हीलचेयर से उठाने को आईं। आलिंगन किया। विनीत को लगा, जैसे दोनों काफी समय से एक-दूसरे को जानते हों। मायण के पूरे इलाज में कई ऐसे इत्तफाक हुए। मायण के स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव आते रहे, किंतु इलाज का रास्ता भी आगे-से-आगे बनता गया, मानो कि सबकुछ पहले से तय हो और कोई दिव्यशक्ति प्रेरक हो।

''माताजी, अब आप बताएँ, कैसी हैं? क्यों आई हैं?'' डॉ. शालिनी बोली।

''जी, इनको···'' विनीत ने बोलना चाहा कि डॉ. शालिनी ने रोका—

''मैं अभी माताजी से जानना चाह रही हूँ। आपसे बाद में पूछूँगी।'' विनीत समझ गया कि उसे अभी नहीं बोलना है। विनीत के साथ अर्चना भी गई थी। उसने उँगली मुँह पर रखकर विनीत को चुप रहने का इशारा भी किया।

''अरे, तुम जैसी बिटिया को देखकर तो मेरी सारी बीमारी वैसे ही छू हो गई। अब तो सब ठीक लग रहा है।'' मायण डॉ. शालिनी से बोली।

''यह तो मैं भी कह रही हूँ। आप बीमार हैं ही नहीं। ये लोग जबरदस्ती आपको यहाँ ले आए हैं।'' डॉ. शालिनी ने कहा।

''नहीं-नहीं, तुमसे मिलाने लाए हैं।'' विनीत की तरफ देखते हुए मायण बहुत ही लाड़ से बोली।

बात सही भी थी। डॉ. शालिनी के हँसमुख व्यवहार से हर वस्तु वहाँ खिली-खिली नजर आ रही थी। बड़े-से-बड़ा मर्ज इस माहौल में स्वत: काफूर हो रहा था।

मायण से सब समझने के बाद डॉ. शालिनी ने विनीत को बताया, ''डॉक्टर शलभ से मैंने मंत्रणा की थी। 'ओरल-कीमो' चलाएँगे। एक बहुत ही अच्छी दवा है। मैं लिख दे रही हूँ। इससे कैंसर अब थोड़ा नियंत्रण में रहेगा। बाकी इनके खाने-पीने का खयाल रखें। इन्हें खुश रखें।''

विनीत ने अर्चना को कहा कि वह मायण को लेकर गाड़ी की ओर चले। वह फाइल में सब 'प्रिसक्रिप्शन' नोट करवाकर आता है। इस बहाने वह मायण को वहाँ से दूर करना चाह रहा था। मायण के जाते ही विनीत ने अत्यंत विनम्रता से कहा, ''डॉक्टर साहब, आप वाकई बहुत जानकार एवं दक्ष हैं। जो लिखा है, वह तो मैं करूँगा ही। कृपया वास्तविकता बताएँ।''

''देखिए, हमारा काम है इलाज करना। किसी प्रकार का 'निगेटिव'

अनुमान मैं नहीं लगाती हूँ।''

''मैं समझता हूँ। आपके मूल्यों की कद्र करता हूँ। फिर भी ऐसे मामलों में क्या होता है?''

''सुनना ही चाहते हैं तो बताती हूँ। अधिक-से-अधिक तीन महीना। फिर गाँठें पकेंगी। दर्द होगा। पेन किलर लगेंगे। वे फेल कर जाएँगे तो मारफीन पर पेशेंट को रखेंगे। फिर जब तक जिसकी साँस चले।''

''इसका मतलब दिसंबर-जनवरी तक?''

''मैं माताजी के बारे में कुछ नहीं कह रही। आपने इस प्रकार के मामलों में क्या होता है, यह मुझसे जबरदस्ती जानना चाहा। पर आप आशावान रहकर पेश आएँ। किसी भी प्रकार का 'निगेटिव-प्रिडिक्शन'[41] मेरी 'एथिक्स'[42] के खिलाफ है। यह किसी बेटे को भी नहीं करना चाहिए।'' डॉ. शालिनी थोड़ा रुष्ट होकर बोलीं।

विनीत धन्यवाद देता हुआ अपने पेपर समेटने लगा। जाते-जाते डॉक्टर की ओर पुनः देखा।

''ऑल द बेस्ट। सब ठीक होगा। जरूरत हो तो मैं घर पर भी आकर देख लूँगी। 'शी इज ए स्ट्रांग लेडी'। सब ठीक होगा।'' डॉ. शालिनी ने कुछ लिखते-लिखते नजरें उठाकर कहा।

विनीत मायण को लेकर घर आया। आकर इष्ट की आराधना की। फिर मायण से बोला, ''थोड़ा भजन-ध्यान बढ़ाओ। लाभ होगा।''

''हूँ,'' मायण बोली।

''अब तुम अपनी माँ को न समझाओ, मम्मी सब जानती हैं।'' अर्चना ने टिप्पणी कसी।

''अच्छा बाबा, बख्शो! गलती हुई।'' विनीत ने पीछा छुड़ाना चाहा।

''अच्छा, मैं चलती हूँ। घर से तीन-चार फोन आ चुके हैं। मैं शाम को फिर आऊँगी।'' यह कहते हुए अर्चना ने प्रस्थान किया।

अर्चना के जाने के बाद मायण व विनीत बहुत देर तक बात करते रहे। मायण ने कहा, ''सच्ची, मुझसे ध्यान नहीं बनता। दुनिया भर के खयाल आते हैं। रेले के रेले चलते हों जैसे। तू कैसे करता है ?''

''मुझे ज्यादा तो नहीं मालूम, पर मैंने पाँच धारणाएँ बना रखी हैं। उन्हीं पर मनन करते हुए स्वयं को मालिक के समक्ष रोज स्वयं को समर्पित करता हूँ।'' विनीत बोला।

''मुझे भी बता।'' मायण ने अधिकारपूर्वक कहा।

''अरे, आपको क्या कहूँ। आप तो खुद संतों की शरण में रही हैं।'' विनीत के मुँह से निकला।

''मुझसे भजन-ध्यान तो ज्यादा नहीं हुआ। हाँ, खाना बनाने, उनका काम करने, देखभाल करने की सेवा जरूर उन्होंने मुझसे ली थी।'' मायण ने स्वीकारोक्ति की।

''अरे, वही तो असली है।'' विनीत ने मायण की आँखों में देखते हुए कहा।

''अच्छा, तू टाल मत, बता।'' मायण हठ करने लगी।

''ठीक है। बोलता हूँ, लेकिन निवेदन भाव से। कुछ प्रवचन नहीं है।'' विनीत ने हिचकिचाते हुए कहा।

''हाँ, हाँ, समझ गई। सुन रही हूँ।'' कहते-कहते मायण ने आँखें मूँद लीं।

फिर विनीत ने बोलना शुरू किया। अपने पाँच सूत्रों को तर्क सहित बताया, ''इन सूत्रों को ऊपर-ऊपर से सुनो तो कुछ नहीं हैं। ध्यान से मनन करो तो कोई अंत नहीं है। पहला, हे परम पिता आप सर्वशक्तिमान हैं। आपके ऊपर व आपके अतिरिक्त कुछ और नहीं है। दूसरा, मैं आपमें पूर्ण आस्था रखता हूँ। मेरी पूर्ण निष्ठा आपमें ही है। तीसरा, आपके समक्ष संपूर्ण समर्पण करता हूँ। आप ही मेरी शुद्धि करें, जैसा चाहे करें। मेरा

'घाट' बदलें। चौथा, मैं आपसे केवल आप ही को माँगता हूँ। मेरी कोई और माँग नहीं है। हो भी नहीं सकती। पाँचवाँ, आप जिस प्रकार मुझे रखेंगे, उसमें आपकी मरजी मानकर खुश रहूँगा।''

विनीत बोलता रहा, मायण सुनती रही, ''आँखों के मध्य अंत:करण के घाट पर ध्यान केंद्रित करने की चेष्टा करता हूँ। प्राणायाम की प्रक्रिया के अनुरूप साँसों पर कुछ नियंत्रण करता हूँ और ऊपर के चक्रों पर रमने का प्रयास करता हूँ। इष्ट के नाम का सुमिरन व उनके स्वरूप का ध्यान साथ-साथ चलता है। फिर धीरे-धीरे अपने अंदर समाने लगता हूँ। कभी ध्यान टूटता है। फिर विचार भागते हैं। फिर इन सूत्रों को दोहराता हूँ। फिर प्रयास करता हूँ।''

''अच्छा, चल, मैं भी करके देखती हूँ। फिर बताऊँगी। तू मुझे रोज टोकते रहना।'' मायण ने उम्मीदपूर्वक कहा।

''हूँ। मैं खुद तो कर लूँ। आपको क्या बताऊँ। चलो, अब दोनों प्रयास करेंगे।'' विनीत ने अपनी झेंप मिटाई।

विनीत को लगा कि इस बहाने ही मायण का मन लगा रहेगा। मायण को कबीर का एक भजन बहुत अच्छा लगता था। मन से गाती थी। पूरा परिवार संत मत का अनुयायी था। कबीरदासजी को प्रथम संत के रूप में मानते थे। विनीत ने उस सबद को गाकर सुनाया। मायण भी अपने सामर्थ्य के हिसाब से थोड़ा-बहुत गाती रही—

दरसन दीजे नाम सनेही। तुम बिन दुख पावे मेरी देही।
दुखित तुम बिन रटत निसि दिन, प्रगट दरसन दीजिये।
बिनती सुन प्रिय स्वामियाँ, बलि जाऊँ विलंब न कीजिये॥

मायण भजन गाते-गाते कभी विरह में रोने लगती तो कभी खिंचाव महसूस करती।

□

# नौ

**अपने पूरे परिवार को 'चौके' से बाँध रखा था। आज के समय में इसकी कमी है। अब सब अपनी-अपनी पसंद का अलग-अलग खाना अलग-अलग समय पर खाते हैं। अधिकांशतः खाना पका-पकाया बाजार से आता है। अब लोगों के पेट में गया भोजन 'प्रेम' के रूप में इस प्रकार प्रस्फुटित नहीं होता।**

मायण का स्वास्थ्य अब थोड़ा-थोड़ा ठीक रहने लगा था। सुबह-शाम बाहर जाना, पार्क में घूमना भी शुरू कर दिया था। सामान्य रूप से जीवन व्यतीत करने लगी थी। अपना दर्द भूलकर मानसिक रूप से आश्वस्त थी कि वह अब फिर से सबकुछ कर सकती है। विनीत ने अब यह सोचना शुरू किया कि रिश्तेदारों व दोस्तों को बुलाकर एक आयोजन करें, जिसमें मायण स्वच्छंद होकर भाग ले, सबसे मिलें-जुलें व खुशियाँ बाँटें। आयोजन का मौका भी स्वत: ही आ गया।

अर्चना का अनुज पुत्र विनीत के यहाँ दिल्ली में रहकर पढ़ा था। विनीत को मामा स्वरूप सम्मान देता व उससे ढेर सारा स्नेह पाता। विनीत एक

निर्धारित दिनचर्या में विश्वास रखता था, जिसे उसने अपने भानजे पर भी लागू किया। उसके चलते थोड़े समय के लिए दोनों के बीच में तनिक खींचतान रही थी। पर बाद में दोनों के मध्य प्रगाढ़ता हो गई। उसी भानजे की शादी तय हुई थी। लड़कीवाले भी लखनऊ के थे। लड़की भी विनीत की लोकल 'गार्जियनशिप' में दिल्ली में रही थी। विनीत को पितातुल्य समझती थी। इस विवाह में दोनों तरफ से जुड़े होने के कारण विनीत को अपार हर्ष था। मायण भी इस रिश्ते का हिस्सा थी। एक मायने में यूँ कहिए कि मायण भी दोनों के साथ दिल्ली में काफी समय तक रही थी। बहुत स्नेह दिया भी और बहुत स्नेह पाया भी। दोनों उसे नानी-नानी कहते हुए कभी नहीं अघाते थे।

विनीत ने शादी के कार्यक्रमों का शुभारंभ अपने घर के इस समारोह से किया। सभी रिश्तेदारों, दोस्तों, जान-पहचानवालों को बुलाया। पूरा घर सजा। अच्छा भोजन बना। सब काम मायण से पूछ-पूछकर किया। मायण खुश थी। उस दिन मायण ने अपनी बढ़ियावाली साड़ी निकाली। बहुत दिन बाद सज-धजकर तैयार हुई थी। अपनी सेवा में एक लड़का छोटू उसने रख रखा था। उसके साथ अपनी बेंत के सहारे घूम-घूमकर व्यवस्था भी देखती रही।

पार्टी में सभी ने आकर मायण से खुशी व्यक्त की। विनीत के निकट की मित्र-मंडली के सभी परिवारों ने मायण पर अपना प्यार उँड़ेला। मायण ने सबको आशीर्वाद दिया। वह खुश जो थी। उस दिन उसने खुलकर खाना भी खाया।

मायण ने सभी महत्त्वपूर्ण परिजनों के लिए उपहार भी निकाले। अर्चना व उसके बेटे-बहू को अवसर के हिसाब से अपनी पसंद के नए वस्त्र भेंट किए। अपना पर्स खोलकर अपनी हैसियत के अनुरूप सबको रुपए भी बाँटे। विनीत ने अपने पर्स से और रुपए देने की पेशकश

की। मायण ने मना किया। पूरी उमंग से जो भी उसका अपना खजाना था, लुटाया। विनीत की मेहनत सफल हुई।

एक गायक मंडली भी आई थी। उन्होंने अपने गानों से भरपूर समा बाँधा। सर्दी के दिन थे। बड़े से लॉन के बीच अलाव भी जल रहा था। सर्दी में खिले फूल उस अलाव की रोशनी में छटा बिखेर रहे थे। शादी के अवसर पर आम अतिथि अपनी रंग-बिरंगी पोशाकों से रंगों की रही-सही कमी को पूरा कर दे रहे थे। हर व्यक्ति एक नई उमंग में था। बहुत दिन बाद मायण के चारों ओर खुशी व हँसी की बहार आई, जिसमें उसने भी कुछ अनमोल पल गुजारे। विनीत से बोली, ''अपने पिताजी को भी बुला लेता तो वे भी देखते, हर्षित होते।'' परंपरागत ढंग से कुलीनता में रही औरत अपनी खुशी में अपने पति की कमी को कैसे नजरअंदाज कर सकती थी। पति के स्मरण के बाद फिर मालिक का शुक्रिया किया।

''क्या ये लोग मीरा या कबीर के सबद भी गाएँगे?'' मायण ने जानना चाहा। विनीत ने कहा, ''क्यों नहीं?''

विनीत ने गायक को बुलाया और मायण की फरमाइश रखी। उसने मायण से ही कहा, ''माताजी, आप जो कहें, वही गा देंगे।''

''कबीर का कोई सबद गाओगे?'' मायण बोली।

उस दिन कबीर का जो सबद गाया गया, उसे बहुत कम लोगों ने पहले सुना था। अमीर खुसरो की रचनाओं से भी आगे बढ़कर इसको सुना गया—

''हमन है इश्क मस्ताना, हमन को होशियारी क्या।
जो बिछड़े हैं पियारे से, भटकते दरबदर फिरते।
हमारा यार है हम में, हमन को इंतजारी क्या॥
कबीरा इश्क का माता, दुई को दूर कर दिल से।
जो चलना राह नाजुक है, हमन सिर बोझ भारी क्या॥''

सबद लंबा था, पर ऊपर की लाइनों को गायक ने दिल खोलकर बार-

बार गाया। जिसने सुना, उसी ने सराहा। जिसका जो स्तर था, उसके हिसाब से उसने ग्रहण किया। वह रात भी गुजर गई। फिर पूरे सप्ताह शादी के कार्यक्रम रहे। मायण ने खुशी-खुशी सब में भाग लिया। एक दिन राजस्थानी खाना भी बना था। मायण राजस्थान की रहनेवाली थी। बचपन से इस प्रकार के खाने के प्रति लगाव था। उस दिन डॉक्टर का शिड्यूल भुलाकर चाव से सबकुछ खाया। अर्चना उस दिन अपने पुत्र की शादी की खुशी भी भूल गई थी। मायण के चेहरे की रंगत उसे ज्यादा लुभावनी लग रही थी। विनीत से बोली, ''देखो, कितनी खुश है।'' विनीत बोला, ''मैं भी यही देख रहा हूँ। सुबह घर पर चोट लग गई थी, वह भी भूल गई है, मालिक का शुक्र है।''

मायण को खाना खिलाने का बहुत शौक था। ऐसी कई बड़ी दावतें खुद ही आयोजित कर लेती थी। कई बार तो एक साथ कई पकवान बनते थे। गैस, केरोसिन स्टोव, लकड़ी का चूल्हा, कोयले की अँगीठी—सब एक साथ सक्रिय रहते थे। किसी पर कुछ उबल रहा है, तो किसी पर कुछ पक रहा है। सारे संसाधन जुटाकर 'मल्टी टास्किंग'[43] करती थी। यह शब्द तो कंप्यूटर की दुनिया में बहुत देर से आया, वह तो खुद ही कंप्यूटर युक्त 'रोबोट'[44] बन जाती थी। आँख बंद करके हाथ से मसाले डालती थीं। मजाल है कि ज्यादा-कम हो जाए। पेट-पोषण के माध्यम से सबको बाँधे रखती थी। उनके हाथ के खाने के जायके को कोई भूल जाए, यह शायद अपवाद स्वरूप ही कभी होता होगा। तरह-तरह के अचार भी डालती थीं। अपने इस हुनर से उसने बहुतों का प्यार जीता। खिलाती भी मन से थी। अपने पूरे परिवार को 'चौके' से बाँध रखा था। आज के समय में इसकी कमी है। अब सब अपनी-अपनी पसंद का अलग-अलग खाना, अलग-अलग समय खाते हैं। अधिकांशत: खाना पका-पकाया बाजार से आता है। अब लोगों के पेट में गया भोजन 'प्रेम' के रूप में इस प्रकार प्रस्फुटित[45] नहीं होता। □

# दस

**जीवन भर रेस में दौड़ी हो। अब रेस जीतने का अंतिम समय है। हारना नहीं। सब मोह छोड़कर अपने इष्ट में, उसके नाम में रम जाओ। नाम गूँजना चाहिए। मौत को मात देनी है। पूरे जीवन में यही एक मात्र सकारात्मक कदम है।**

जनवरी आते-आते नए साल में मायण ने सत्संग में जाकर रहने की अपनी बात फिर से दोहराई। सारी तैयारी के साथ मायण पिताजी के पास लौट आई। डॉ. वितुल ने कैंसर के एक उनके स्थानीय चिकित्सक मित्र से भी परिचय कराया। डॉ. विजय नाम था उनका। बहुत ही संतुलित सोच रखते थे। अपना प्राइवेट क्लिनिक चलाते थे। वे भी मुंबई इंस्टीट्यूट से कोर्स करके आए थे। लगभग एक माह अच्छा गुजरा।

'ओरल-कीमो' के भी अपने 'साइड-इफेक्ट' होते हैं। हाथ-पाँवों की चमड़ी काली पड़ जाती है। फटने लगती है। उसके लिए एक क्रीम डॉक्टर ने लिखी थी। वही मायण के हाथ-पाँव में लगाते रहते थे। कीमो कोई भी हो, शरीर के विभिन्न तत्त्वों पर प्रभाव तो पड़ता ही है। अब सूजन भी आने लगी थी। सूजन की दवा से सोडियम कम होने का खतरा पहले पैदा हुआ था। उससे ब्लडप्रेशर गड़बड़ा गया था। धीरे-

धीरे हड्डियों पर भी प्रभाव पड़ा। पहले से ही हड्डियाँ कमजोर थीं। पीठ व घुटने जकड़े रहते थे। जोर लगाकर चलती थीं तो हार्ट पर दबाव आता था। सिर घूम जाता था। गैस बनने लगती थी। हड्डियों की जकड़न व हार्ट की कमजोरी की यह हालत कैंसर के इलाज के उपरांत और भी बदतर हो गई थी। अत: एक व्हीलचेयर की व्यवस्था की गई, ताकि सत्संग तो आ-जा सकें। परिचारिकों को भी पूरा ध्यान रखने हेतु बार-बार समझाया गया।

पिताजी अपनी समझ से उत्तम देखभाल करते थे। विनीत को इसी दौरान एक महीने के लिए एक ट्रेनिंग पर लंदन जाने के आदेश मिले। अत: वह दिल्ली जाकर अपनी विदेश यात्रा की औपचारिकताएँ पूर्ण कर रहा था। तभी फोन आया कि मायण को लकवा मार गया है। सब काम छोड़कर वह घर भागा। सुनीत पहले से वहाँ मौजूद थे। उन्होंने पूरी बात बताई। सारे परीक्षण कराए। इलाज कराया, पर लकवे से बायाँ हिस्सा पूरा प्रभावित हो गया जो कि बाद तक ठीक नहीं हो पाया। लकवा मारने के 'कारण' को भी तरह-तरह से आँका गया। पर उसका अब कोई फायदा नहीं था। जो हुआ सो हुआ। कहने को सभी ने अपनी-अपनी सफाई और दुहाई दी। ऐसे मौकों पर लगने लगता है कि दूसरे के जूते में पाँव डालकर उसकी स्थिति समझना वाकई दुरूह है। सब निमित्त मात्र रह जाते हैं। विनीत लंदन नहीं गया। उसने उच्चाधिकारियों से आग्रह करके अपनी ट्रेनिंग कैंसिल करवा ली। मायण के पास ही रहा।

अब मायण की देखभाल करना और मुश्किल हो गया था। कुछ दिन मायण अस्पताल में रही। कुछ नई दवाएँ शुरू हुईं। अस्पताल में ज्यादा दिन रखना ठीक नहीं था। वहाँ का इंफेक्शन और भी जानलेवा हो सकता था। अत: घर पर उसी प्रकार की समानांतर व्यवस्था की गई। फोल्डिंग पलंग, ऑक्सीजन, आई.वी. स्टैंड, नर्सिंग स्टाफ आदि। हालाँकि यह सब

करना मुश्किल था, पर विनीत व सुनीत ने सँभाल ही लिया। सुनीत की पत्नी ने भी बढ़-चढ़कर सेवा की।

बीमारी के साथ-साथ मायण की दिनचर्या ही बदल गई थी। कब क्या हो, पता नहीं। चौबीस घंटे लगातार किसी-न-किसी के सतर्क रूप से मौजूद रहने की जरूरत पड़ने लगी। परिजनों एवं मित्रों ने सहयोग किया। कोई सात दिन तो कोई दस दिन बारी-बारी से आकर रुकता, ताकि मायण की देखभाल ठीक से हो सके।

पिताजी स्वयं 80 वर्ष के हो चले थे। फिर भी हिम्मती थे। हाँ, गुस्सा जरूर आता था, किसी को कुछ भी कह देते थे। लेकिन फिर दीन होकर अच्छे व्यवहार से काम निकाल लेते थे। सब उनके व्यवहार को समझते थे, सो निभ जाता था। हाथ भी थोड़ा खींचकर रखते थे। जो भी हो, मालिक में गहन आस्था थी। अपने मत का पूरा ज्ञान था।

आखिरकार मायण ने बिस्तर पकड़ ही लिया। नहलाने, शौच कराने आदि की समस्या उत्पन्न हुई। गैस, अपचन से भी बौखला जाती थीं। पाचन के लिए वे आयुर्वैदिक चूर्ण लेती थीं। पेट साफ करने का वह चूर्ण तो बाद में रोजमर्रा की जिद का ही हिस्सा बन गया था। दवा के असर से मुँह में छाले भी हो गए। खाना पेट में न जाए और केवल दवाइयाँ उदर को उष्ण करती रहें तो परेशानियाँ होनी ही थीं। बहुत कोशिश की गई पर दवाइयाँ कम नहीं हो सकीं। काफी मर्ज थे। हर मर्ज की एक-एक दवा भी लें तो नौ-दस से तो कम नहीं होंगी। डॉ. वितुल तो हमेशा दवा कम करने में लगे रहते थे। फिर भी जुड़कर उतनी हो ही जाती थीं। इस केस में उनका भी सारा गणित फेल हो गया।

ब्लडप्रेशर, शुगर, फीवर—सभी की चार्टिंग पुनः होने लगी। दिन में एक बार डॉक्टर रिव्यू करते। धीरे-धीरे दर्द बढ़ता गया। बाएँ स्तन में भी परिवर्तन आया। वह तो ठोस होकर पत्थर ही हो गया। सभी चिकित्सक

इस परिवर्तन को समझने में नाकामयाब रहे।

मायण में अब आंतरिक बदलाव आने लगा। उसे अब आभास होने लगा कि उसके ज्यादा दिन शेष नहीं हैं। सत्संग में जा नहीं पाती थीं, अत: लंबे तार से कनेक्शन लेकर कमरे में ही लाउडस्पीकर लगवाया गया।

मायण के अपने पूर्व के आध्यात्मिक अनुभव अच्छे ही रहे थे। बरसों पहले जब अपने ताऊजी के इलाज के समय अस्पताल में थककर मरीज के सिरहाने ही सो गई थी, तब उनके ईष्ट ने दर्शन दिए और बताया था कि उनके ताऊजी को अगले दिन सुबह 8 बजे ले जाएँगे और ठीक ऐसा ही हुआ। बहुत बड़ा अनुभव हुआ था। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि वह अब खुद के बारे में कहने लगी थीं कि एक जुलाई के बाद चली जाएगी।

विनीत मायण को कई तरह से समझाता रहता था—जीवन भर रेस में दौड़ी हो। अब रेस जीतने का अंतिम समय है। हारना नहीं। सब मोह छोड़कर अपने इष्ट में, उसके नाम में रम जाओ। नाम गूँजना चाहिए। मौत को मात देनी है। पूरे जीवन में यही एक मात्र सकारात्मक कदम है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार—ये सब बंधन कटेंगे, तभी महीन होकर तीसरे तिल को पार करोगी। मौका मत चूको। पूरा जीवन उसी क्षण के लिए जिया है, यह मत भूलो।

मायण धीरे से सिर हिला देती थी। लकवे के बाद से बोलने की क्षमता भी कम हो गई थी। आवाज में थोड़ा फर्क आ गया था।

दूसरे को समझाना आसान होता है। पर कई चीजें शाश्वत सत्य होती हैं। कोई माने तो अच्छा, न माने तो भी ठीक।

इसी बीच होली के कुछ समय पूर्व बरेली में दंगे हुए। विनीत को ड्यूटी पर बुला लिया गया। उसने अपने एक परिजन से आग्रह किया कि

मायण के पास आकर दो-तीन दिन उसकी देखभाल कर ले। उनकी शायद मजबूरी थी। उन्होंने असमर्थता व्यक्त की। विनीत को एकबारगी लगा कि नाहक उसने कहा। हर एक को अपना बोझ संभवत: खुद ही ढोना चाहिए। मालिक से प्रार्थना की।

विपरीत परिस्थितियाँ भी बहुत कुछ सिखा जाती हैं। नए बोध कराती हैं। इसी से जीवन के नवीन पट खुलते हैं। भ्रम टूटते हैं।

विनीत कुछ आंतरिक व्यवस्था करके चला गया और दो दिन पश्चात् लौट आया। बाद में सुनीत भी पत्नी सहित आ गए। सुनीत अपनी पत्नी को तदोपरांत लंबी अवधि के लिए मायण की सेवा में छोड़ गया।

बीच-बीच में मायण की पीड़ा बढ़ जाती थी। रोने लगती थी। दर्द के इंजेक्शन भी काम करना बंद कर चुके थे। डॉक्टर ने तय किया कि 'लो-डोज' मॉरफीन के पाउच लगवाएँ। यह संभवत: आखिरी विकल्प था। 'पेन-मैनेजमेंट' के अन्य विकल्प भी ढूँढ़े गए, पर वे कारगर नहीं रहे।

कैंसर की गाँठें निष्क्रिय करने के लिए 'रेडिएशन' प्रयुक्त करने का विकल्प भी सोचा गया। पर उसके लिए वांछित संख्या में 'प्लेटलेट्स' नहीं थे। नौबत यह आ गई कि प्लेटलेट्स की कमी को पूरा करने के लिए दो-तीन बार रक्तदान करवाया गया, तब प्लेटलेट्स मिल पाए। इसमें भी भागा-दौड़ी रही। खून चढ़ाने की नौबत आई तो नसें ही न मिलें। कीमो पोर्ट पहले ही खराब हो गया था और निकाला जा चुका था।

रेडिएशन को लेकर विनीत व उसके पिता के बीच तनिक मतभेद हुआ। पिताजी की यह इच्छा थी कि किसी तरह मायण बच जाएँ। पर वह यह नहीं समझ पाए कि रेडिएशन में भी खतरा बहुत है। विनीत इस बात को समझ रहा था। बाद में जब मायण की हालत बिगड़ी तो पिताजी ने स्वत: ही जिद छोड़ दी।

मायण का दर्द वाकई असहनीय हो चला था। फोन पर चीत्कार कर रोने लगी। विनीत को बोली, ''मैं नहीं रहूँगी, तब तू आएगा?'' बात करते-करते विनीत के आँसू भी आ गए थे। विनीत की बिटिया विदेश में पढ़ रही थी। उसके 'कॉनवोकेशन'[46] में जाने हेतु विनीत ने छुट्टी का आवेदन दिया था। उसी छुट्टी को कैंसिल करवाकर वह झट से मायण के पास आ गया। अपनी बिटिया से फोन पर यह बात बताई तो वह खुद ही बोली, ''पापा, दादी को देखना ज्यादा जरूरी है। आपने ठीक किया। मैं भी आ रही हूँ। 'कॉनवोकेशन' बाद में हो जाएगा।'' विनीत बिटिया के इस दृष्टिकोण से काफी प्रभावित हुआ था।

यही पोती अपनी दादी से अकसर मजाक में कहती रहती थी, 'मैं एक ही पोती हूँ। बाकी सब तो पोते हैं।' तब मायण भी मजे में कहती, ''तेरी दादी भी तो एक ही है।'

विनीत ने मॉरफीन पाउच की व्यवस्था कर ली थी, हालाँकि तनिक मुश्किल से मिले। अब मायण थोड़ा-थोड़ा मॉरफीन के प्रभाव में रहने लगी। दर्द को कम महसूस करती थी। गफलत कम होने पर पाठ करने को कहती थी। विनीत अकसर मायण को एक भजन सुनाता था, जो उसे भी कंठस्थ था। बीच-बीच में मायण बुदबुदा लेती थीं—

अविनाशी दुलहा कब मिलिहौ, भक्तन के रछपाल।
हम तो तुम्हरी दासी सजना, तुम हमरे भरतार॥
दीनदयाल दया करि आओ, समरथ सिरजनहार।
कै हम प्रान तजतु हैं प्यारे, कै अपनी करि लेव।
दास कबीर बिरह अति बाढ़यो, अब तो दरसन देव॥

□

# ग्यारह

**मध्यम मार्ग अपनाती हुई, अपनी जीवन-यात्रा में मायण ने एक लंबा सफर तय किया। अब अपनी मंजिल प्राप्त करनी थी। जीवन भर की आपा-धापी, सभी प्रकार की चालें इसी क्षण काम आती हैं। जो लंबे सफर पर जाते हैं और मंजिल पर पहुँचने की ठान लेते हैं, वे बहुत जल्दी और बहुत पहले से अपनी चालें दुरुस्त रखते हैं।**

मायण ने विनीत को जाने नहीं दिया। दोहराती रही, ''तू मत जाना। पीछे से लोग ध्यान नहीं देते। बीच में फलाने रिश्तेदार आए थे। सबकी छुट्टी कर दी। खुद भी नहीं देखा। मैं टट्टी-पेशाब में पड़ी रहती थी।''

विनीत को सुनकर दु:ख हुआ, पर उसने कोई तहकीकात नहीं की। ऐसा करना उचित भी नहीं था। क्या करे। किसी के चेहरे पर नहीं लिखा है। दुनिया को अलविदा कह रहे व्यक्ति से भी बदला लेने में शायद उन्हें सुकून मिलता हो। परमात्मा ने सभी प्रकार के इनसान बनाए हैं। इसमें भी बंधन कटने थे।

मायण से विनीत ने कहा, ''सब निमित्त मात्र है। उसे भी मालिक ने प्रेरणा दी होगी। आपका उसमें मोह कटना जरूरी था। उसने भी ऐसा करके

आपका भला किया है। और आप तो खुद मुझसे कहती रहीं—शील, क्षमा और संतोष को हमेशा अपने पटल पर रखो।'' मायण कदाचित् समझ गई।

कई ऐसे निमित्त भी थे, जो पहली या दूसरी दफा मिले और मायण के होकर रह गए। विनीत के मित्रों ने भी अपनी ड्यूटी बखूबी निभाई। उनकी पत्नियाँ भी आकर सेवा कर गईं, इस भाव से जैसे कि उनकी अपनी माता हो। मायण ने भी कम प्यार नहीं बाँटा। खुद भी उनके हाथ से खाती थीं, तो उन बेटियों को भी खिलाती थीं। बोल नहीं पाती थीं। लेकिन आँखों के भाव से सबकुछ कह जाती थीं। सारे परिचारक भी अब उन्हें छोड़कर कभी अलग नहीं होते। एक-दो परिचारिकाएँ ऐसी मिलीं जो हर काम कर देती थीं। एक तो लखनऊ से ही चली आई। बड़े-छोटे का कोई भेद ही नहीं रह गया था। लगता था, इन सभी का मायण से कभी कोई संबंध अवश्य रहा होगा।

अब सभी को यह लगने लगा था कि शायद अधिक दिन शेष नहीं हैं। विनीत व अंजली लंबी अवधि के लिए आ गए थे। सुनीत भी अकसर दिल्ली से आ-जा रहा था। मायण का जो बेटा विदेश में रहता था, उसने भी अचानक अपना प्रोग्राम भेजा, वह भी आनेवाला था।

मायण जानेवाली है, यह बात सभी रिश्तेदारों में धीरे-धीरे फैलने लगी। डॉक्टर ने भी परोक्ष रूप से संकेत दे दिए थे। कुछ परिजन आशीर्वाद लेने आए। कुछ इसलिए आए कि औपचारिकता पूर्ण कर लें। ''बाइजी जानेवाली हैं, सोचा, मिल आएँ।'' जाते-जाते पाँच सौ का नोट उस मायण के हाथ में रखना चाहा, जिसे कि अपना ही होश नहीं था। जो व्यक्ति अपने जीवन के चरमोत्कर्ष पर मौत पर फतह पाने की चेष्टा कर रहा हो, उसे फिर से बंधनों का अहसास कराना कदाचित् उचित नहीं। फिर भी सबका अपना-अपना स्तर है। अपने-अपने 'घाट' के मुताबिक प्रतिक्रिया करते हैं। कहते भी हैं, ''कोई व्यक्ति किसी एक तरह का व्यवहार इसलिए करता है, क्योंकि वह दूसरी तरह का व्यवहार कर ही नहीं सकता। वह मजबूर है जब तक

कि उसकी आंतरिक संरचना न बदले।''

मायण के पास वक्त कम था। उसका अपना 'घाट', यानी मन का स्तर बदलना भी जरूरी था। मॉरफीन की गफलत से निकालकर पहले तो मायण को होश में लाना और फिर उसके ध्यान को अलौकिक की ओर केंद्रित करवाना, यह आसान नहीं था। विनीत मायण को तरह-तरह के स्मरण याद दिलाता। वे क्षण जब उसने संतों की सेवा की। जब संत उसके घर आए। मायण एकदम स्फूर्त हो जाती थी। कभी किसी सोच से निढाल होती तो उन्हें जातक कहानियाँ सुनाता। ऐसी ही दो कहानियाँ जो विनीत को याद थीं, उनकी आड़ में विनीत मायण को कई बातें समझाने की कोशिश करता। कथानक के अनुरूप एक सेठ था। वह भगवान् की खोज में निकला। एक ठग ने उसे ठगने के हिसाब से कहा कि भगवान् देखने हैं तो मेरे साथ आओ। एक कुएँ पर ले गया। बोला कि इसके अंदर छलाँग लगा दो, प्रभु के दर्शन होंगे। सेठ इतना अधीर था कि अपना सब सामान ठग को देकर कुएँ में कूद गया। ठग माल लेकर फरार हो गया। इधर जब सेठ कुएँ में गिरा तो उसका सिर अंदर पानी में पत्थर से टकराया। परमात्मा की मेहर। उसे दर्शन हुए। लोगों की मदद से बाहर निकलकर आया और घर चला गया। कुछ दिन बाद उसे वही ठग दिखा। सेठ उसे देखकर उसकी ओर बढ़ा। ठग ने सोचा कि वह अब पकड़ा जाएगा, सो भागने लगा। सेठ पीछे-पीछे, ठग आगे-आगे। जब ठग पकड़ा गया तो पाँव पड़कर माफी माँगने लगा। इस पर सेठ ठग के पाँव पड़ गया और बोला कि आप चोर नहीं हैं। आप तो मेरे गुरु हैं। आपने जो भी सोच के किया, पर मेरे लिए तो आप परमात्मा के माध्यम बने।

मायण बोली, ''वचनों में भी यह कथानक आया है।''

''हाँ माँ, अब आप अपने इष्ट से मिलने जा रही हो। सबका साधुवाद करो। किसी के प्रति कोई बुरा भाव मत रखना। जिससे माफी माँगनी है,

माँग लो। जिसके प्रति रोष है, उसे क्षमा करो। सबने आपको परिमार्जित[47] करने में मदद की है। जिसने सबसे ज्यादा अकाज किया, उसी ने आपकी धुलाई की है। निंदक को सबसे ज्यादा साधुवाद करके जाओ।'' विनीत ने कान में कहा। मायण ने आँख खोली और होंठ हिलाकर प्यार व्यक्त किया।

''मुझसे भी मोह मत रखो। बात की तह तक पहुँचो। छाया-छाया जाने का मतलब मालूम है ना?'' विनीत ने बहुत ही लाड़ से कहा।

मायण ने इस बार पलकें झपकीं और नकारात्मक रूप से सिर हिलाया, जैसे पूछ रही हो, क्या?

''अरे ध्यान नहीं, नानी क्या कहती थी? एक व्यापारी अपने अंतिम समय पर बेटे को यह कहकर गया कि दुकान पर ध्यान देना। कारोबार बढ़ाना। छाया-छाया जाना। उसने अपना पूरा पैसा खर्च करके दुकान से घर तक छप्पर डाला, ताकि छाया-छाया जाए। तब एक ने उस बेवकूफ को समझाया, छाया-छाया का मतलब था कि सुबह तड़के जाना और देर शाम लौटना। दिन भर मेहनत करना। व्यापार पर ध्यान देना।'' विनीत ने यह कहते हुए अपनी बात पूरी की।

मायण मुसकराई, फिर बुदबुदाई, ''बेवकूफ था।''

''हूँ, तो यह बेवकूफी हम लोगों ने नहीं करनी है। कहाँ ध्यान देना है, उसी पर नजर रखो। कबीर का दोहा याद करो—'आँख, कान, मुँह बंद कराओ, अनहद झिंगा शब्द सुनाओ।' मैं अब किसी को नहीं आने दूँगा। ध्यान करो। मैं आपको बीच-बीच में कुछ-न-कुछ सुनाता रहूँगा।''

मायण ने सिर हिलाया।

विनीत धीरे-धीरे कबीर का एक सबद गाकर सुनाता रहा—

''सुकिरत कर ले नाम सुमिरि ले, कौ जाने कल की।
जगत में खबर नहीं पल की॥

झूठ कपट करि माया जोरिन, बात करैं छल की।
पाप की पोट धरे सिर ऊपर, किस विधि है हलकी॥
यह मन तो है हस्ती मस्ती, काया मिट्टी की।
साँस साँस में नाम सुमिरि ले, अवधि घटै तन की॥
काया अंदर हंसा बोले, खुशियाँ कर दिल की।
जब यह हंसा निकरि जाहिंगे, माटी जंगल की॥
काम क्रोध मद लोभ निवारो, याही बात असल की।
ज्ञान, बैराग, दया मन राखो, कहै कबीरा दिल की॥''

पिताजी भी मायण के आध्यात्मिक रुझान में तरह-तरह से इजाफा करने का भरसक प्रत्यन करने लगे। अकसर पाठ की यह कड़ियाँ सुनाते, 'घर को छोड़ अधर को चाली, सुरत हँसिनी आज भई'। वे बार-बार मायण से कहते, 'दु:ख तकलीफ देकर मालिक कर्मों का बोझ हल्का करता है। उसी में उसकी विशेष दया छिपी रहती है ताकि उद्धार की कार्यवाही जल्दी पूरी हो'। मायण धीरे से कहती, 'मुझे भी इसका एहसास है। मैं भी यही प्रार्थना करती हूँ कि मुझे मालिक जो चाहे दु:ख-तकलीफ दे पर साथ-साथ बरदाश्त की ताकत भी बख्शे'।

मायण धीरे-धीरे कष्ट-मुक्त होने लगी। बात करना न के बराबर हो गया। खाना भी कम कर दिया। गले में बंदिश रहने लगी। इधर कैंसर की गाँठें पक रही थीं, उधर मन की गाँठें खुल रही थीं। चेहरे पर सरलता आ रही थी। बालरूप अब स्थायी रूप से मुखरित था। मध्यम मार्ग अपनाती हुई, अपनी जीवन-यात्रा में मायण ने एक लंबा सफर तय किया। अब अपनी मंजिल प्राप्त करनी थी। जीवन भर की आपा-धापी, सभी प्रकार की चालें इसी क्षण काम आती हैं। जो लंबे सफर पर जाते हैं और मंजिल पर पहुँचने की ठान लेते हैं, वे बहुत जल्दी और बहुत पहले से अपनी चालें दुरुस्त रखते हैं।

द्वार तक पहुँचोगे ही नहीं तो उसे खोलोगे कैसे और पहुँच भी गए तो क्या उसे खोलने की ताकत व हुनर सँजोकर लाए हो ? यह चिंतन का विषय है। परिवार में जब कोई ऐसा योग आए तो शुभ योग मानकर सभी को उससे जुड़ना चाहिए। आत्ममंथन का अवसर होता है। जो अंत समय में माँ-बाप के पास नहीं रहे, वे अभागे हैं। माँ-बाप का आशीर्वाद नहीं लिया और आत्मबोध का सुनहरा अवसर भी खोया।

□

# बारह

**अब दुनिया की मौत उसके लिए आध्यात्मिक जन्म का प्रवेश द्वार थी। यह समझ में आने में वक्त लगता है कि किस प्रकार मृत्यु ही एकमात्र ऐसी सार्थक छलाँग है जो कि अर्थपूर्ण हो सकती है। बाकी सब निरर्थक है।**

और पहली जुलाई आ गई, जिसका मायण को इंतजार था। आज उनके गुरुजी की जन्मतिथि थी। मायण ने अपने सतगुरु का जन्मदिन मनाया। व्हील-चेयर से परिजन उन्हें सभी पुनीत स्थलों पर माथा टिकवाने ले गए। संभवत: मायण मन-ही-मन पुकार रही थी, ''मालिक, मुझे अपने चरणों में ले लो। मैं आ रही हूँ।''

मायण कह ही चुकी थी, 'मैं एक जुलाई के बाद चली जाऊँगी।' यह बात और किसी को याद रही हो या नहीं, पिताजी व विनीत को याद थी। दोनों रोज इस पर गौर करते रहे।

विनीत ने अपने प्रयास जारी रखे। वह चाहता था कि उसकी माँ आध्यात्मिक रूप से जितना लाभ कमा सके, उतना ही अच्छा। मायण के कान में बोलता रहता था—

''शक्ति के दो स्वरूप हैं—ध्वनि और प्रकाश। अपने इष्ट के द्वारा

दिए गए नाम का अंदर-ही-अंदर ध्वन्यात्मक उच्चारण करो। गुरु की छवि को अपने स्मृति-पटल पर लाकर परमात्मा के नूरानी-पुंज से नाता जोड़ो। अपनी सुरत यानी आत्मा को विशुद्ध 'राधा' रूप में लाओ। यहाँ के सभी बंधनों व लाग-लपेट से ऊपर उठो। फिर परमात्मा यानी अपने 'स्वामी' में लीन होने की चेष्टा करो। वे ही अब सबकुछ हैं। 'राधास्वामी' सुरत के अपने मालिक में पूर्ण निष्ठा के साथ लीन होने की एक मात्र परम अवस्था है। यही परम अर्थ यानी कि परमार्थ है। नाम और नाम की धुन को पकड़ो। ऊपर के चक्रों पर ध्यान लगाओ। नूरानी स्वरूप का आभास करो।''

मायण ध्यान से सुनती। चेष्टा करती। विनीत हर प्रकार से मायण को दुनिया से विरक्त करना चाहता था। जाते हुए व्यक्ति की यही सबसे बड़ी सेवा है कि उसे आसक्ति से मुक्त करो। वह यहाँ तक मायण को स्मरण कराता रहा—

''बचनों में महाराज ने खुद कहा है—यह हो नहीं सकता कि दुनिया को पकड़े रहें और मालिक भी मिल जाए। दोनों लोक ही सर्वथा अलग-अलग हैं। उनकी रचना का मसाला ही भिन्न-भिन्न है। मालिक से केवल मालिक को माँगो। बाकी सब उसकी मर्यादा के विपरीत है।''

दूसरे मजहबों से भी उदाहरण देकर समझाता—

''दुनिया की तरफ से जब ईसा सूली चढ़े, यहाँ के बंधनों को काटा, तभी वे पवित्र होकर ईश्वर के पुत्र कहलाए। आपके लिए कैंसर सूली के रूप में उभरा है। मौका मत खोओ और याद करो, जब हजरत इब्राहिम खुदा से मुखातिब हुए तो उन्हें प्रेरणा हुई कि तेरे और मेरे इश्क के बीच में यदि कोई और बाधक है तो उसका खात्मा कर। तब हजरत ने अपने पुत्र के प्रति मोह त्यागकर उसकी बलि दी। तोहफे के तौर पर खुदा ने सफेद मेमना भेजा जो कि निर्मलता और भोलेपन का प्रतीक था।

अत: अपनी सृष्टि में जो-जो यहाँ के लगाव हैं, उनका विनाश करो। शिव का तांडव भी यही है। अपनी-अपनी सृष्टि, यानी आसक्तियों का खंडन और मंडन। तीसरा नेत्र तभी खुलेगा। अब सरबस[48] अपने स्वामी की हो जाओ। वही अब पिता, पति व पुत्र हैं। इस दुनिया के घर को फूँकना है, कबीर ने यही कहा है। भटक के मत मरना। बस एक ही नाम अनाम रहेगा। उसी में मीरा जैसी 'दीवानगी' ला। तू तो है भी उसी के देश से। सुन रही है ना!''

विनीत के एक डॉक्टर मित्र ने यूँ ही कभी टिप्पणी की थी, ''अपनी माँ को क्यों मार रहे हो।'' उन्होंने जो भी सोचकर कहा हो। पर अब विनीत के लिए मायण की इस दुनिया से विदाई का कोई और ही मतलब था। 'आर्ट ऑफ लिविंग'[49] से लेकर 'आर्ट ऑफ डाइंग'[50] की इस यात्रा के उसने अपने अर्थ ढूँढ़े। अपनी माँ को वह उसमें सफल होते देखना चाहता था। अब दुनिया की मौत उसके लिए आध्यात्मिक जन्म का प्रवेश-द्वार थी। यह समझ में आने में वक्त लगता है कि किस प्रकार मृत्यु ही एक ऐसी सकारात्मक छलाँग है, जो कि अर्थपूर्ण हो सकती है। बाकी सब निरर्थक है।

दो-तीन दिन लगातार यह मशक्कत होती रही। अब पाँच जुलाई आ गई। आज मायण का जन्मदिन था। धूमधाम से मनाया गया। सभी पारिवारिक सदस्य मौजूद थे। सत्संग हुआ। प्रसाद बँटा। भोग लगा। खाना हुआ। फोटो भी खिंचे। जो उससे जो कराता रहा, निर्मल एवं शांत भाव से पड़ी वह करती रही। मायण के हाथ से गुरुद्वारे पर भेंट कराई गई। गरीबों को दान भी करवाया।

विनीत की छुट्टी खत्म हो रही थी। एक दिन के लिए लखनऊ जाकर वापस आना चाहता था। पाँच जुलाई की शाम वह गया। रात दस बजे लखनऊ पहुँचा। पहुँचते ही अंजलि का फोन आया, ''डॉक्टर आए थे।

उनका कहना है, मायण कभी भी जा सकती हैं।''

विनीत रात ग्यारह बजे अपने 'चीफ' के पास गया। पूरी बात बताई। उन्होंने कहा, ''सुबह क्यों, अभी जाओ। मैं अपनी माँ के अंतिम वक्त में नहीं पहुँच पाया था। आज तक अफसोस है।''

मालिक का शुक्रिया करते हुए तत्काल विनीत चल दिया। छह जुलाई को सुबह होते-होते मायण के सिरहाने जा पहुँचा। मायण ने आँखें खोलीं। आँखों-आँखों में बहुत कुछ कह गई। मौन संप्रेषण को किन्हीं शब्दों की आवश्यकता नहीं थी। विनीत फिर धीरे-धीरे कान में बोलता रहा—अकेले ही यह यात्रा करनी होती है। तू इस पड़ाव पर थोड़ी देर के लिए ही आई थी। अपने असली घर जाना है। खुशी-खुशी जा। 'सूली ऊपर सेज पिया की', चढ़ो और पीछे मुड़कर मत देखना।

दोपहर बाद डॉ. वितुल आये। मायण को खाने में दिक्कत हो रही थी। नलकी लगाने की बात होने लगी। विनीत ने एक बार प्रश्नचिह्न लगाया, पर फिर सभी की सहमति हुई कि नलकी का प्रबंध हो जाने पर कोशिश कर लेते हैं। नलकी का प्रबंध होने में समय लगता अत: डॉ. वितुल यह कह के चले गए कि नलकी आ जाने पर पड़ोस में उपलब्ध डॉ. सतसंगी को बुला लें जो कि बहुत ही वरिष्ठ एवं अनुभवी हैं। डॉ. सतसंगी से फोन पर संपर्क किया गया। उन्होंने तुरंत अपनी सहमति दे दी। वैसे भी पड़ोसी होने के नाते वे मायण से स्नेह रखते थे और यदाकदा इलाज भी कर देते थे।

तभी मायण ने अपने निजी अनुचर को बुलाकर कहा, 'मैं तो अब चली जाऊँगी, बाबूजी (पिताजी) का खयाल रखना'। फिर जितनी शक्ति से पुकार सकती थी, उन्होंने आवाज देकर पिताजी को अपने पास बुलाया। तुरंत ही पिताजी जाकर मायण के पास बैठ गए और धीरे से कान में कहा, 'मैं आ गया हूँ'। मायण ने आँखें खोली। पिताजी की ओर भरपूर नजरों से देखा। फिर आँखें बंद करके ध्यान-मग्न हो गई। □

# तेरह

**शुद्ध रूप में सुरत 'राधा' बनकर अपने 'स्वामी' की ओर खिंची चली गई। वही हर पुनीत आत्मा का अपना निजधाम होता है। एक माने में देखो तो एक पल में सारा जीवन 'जी' गई। कहते हैं, ब्रह्मा की एक साँस में कितने युग निकल जाते हैं। मानव के अपने समय-बोध और इस सृष्टि के कालचक्र में बहुत अंतर है।**

नियत समय पर डॉ. सतसंगी ने आगमन किया। नलकी लगाई जा रही थी। यह इत्तफाक रहा कि मायण का पूरा परिवार मौजूद था। अंजली के पति, मायण के दामाद भी मौजूद थे। खाना खाकर, हाल पूछकर जाने को थे, पर डॉक्टर को देखकर कौतूहलवश रुक गए। अनुज पुत्र भी विदेश से आया हुआ था। सभी का आ जाना एक अच्छा इत्तफाक रहा। विनीत सिर की तरफ खड़ा हो मायण के ललाट के ऊपरी भाग को सहला रहा था। डॉक्टर ने नाक से नलकी लगाने की दो बार चेष्टा की। नलकी बार-बार बाहर निकल जा रही थी। पिताजी डॉक्टर के पीछे खड़े होकर यह प्रक्रिया देख रहे थे। अंजली पाँवों की ओर थी। शेष परिजन आ-जा रहे थे।

मायण ने इसी बीच आँख खोली। केवल पल भर को। विनीत की तरफ देखा। विनीत का सौभाग्य था कि वह मायण की ओर ही देख रहा था। नलकी डालने से जो परेशानी हो रही थी, उस पर वह गाल सहलाता हुआ पुचकार रहा था। विनीत की मायण से आँखें चार हुईं। मायण ने फिर पलकें बंद कीं और अंतिम साँस ली। विनीत ने अपने शरीर से एक प्रकार के 'करेंट' के गुजरने को महसूस किया। डॉक्टर अपना प्रयास करते रहे। विनीत जान गया था कि मायण देह त्याग चुकी है। डॉक्टर भी जान रहे थे। फिर भी सिखलाई के हिसाब से हृदय व साँसें चेक कीं। बोले, ''चरनामृत दे दें।'' पिताजी की ओर मुखातिब होकर बोले, ''भाईसाहब, सुरत खिंच गई है।''

पिताजी बुत से खड़े रहे। आँखें सजल हो उठी थीं। पता नहीं किस मानसिक अवस्था में पहुँच जाएँ। विनीत ने तुरंत उन्हें सँभाला। बोला, ''आप जाएँ। तत्काल महाराज के यहाँ भेंट करें। साधुवाद करें। मालिक ने मायण को अपने पास बुला लिया है। सुरत अपने मालिक के चरनों में खिंची हैं। यही वह पुनीत क्षण है, जिसके लिए आजीवन मायण प्रार्थना करती रही है। आज अत्यंत ही शुभ दिन है।''

महाराज के चित्र की ओर देखकर पिताजी बोले, ''आपकी मेहर है दाता, आप दयालु हैं।'' फिर जल्दी से जूते पहनकर महाराज की कोठी की ओर बढ़े। विनीत ने किसी से कहा कि वह भी साथ जाए। इस अवसर पर प्रत्येक परिजन ने अपने 'स्तर' के हिसाब से प्रतिक्रिया की। कोई सोच में डूब गया, कोई गमगीन था, कोई प्रार्थना में मशगूल हुआ। महाराज के चरणों में भेंट चढ़ाकर ज्यों ही पिताजी मुड़े कि सतसंग प्रारंभ हुआ। जो शब्द उस दिन सिलसिलेवार सबसे पहले निकला वह वही था जो पिताजी मायण को अंतिम समय में अकसर सुनाया करते थे—

'घर को छोड़ अधर को चाली, सुरत हँसिनी आज भई'।

यह एक महज इत्तफाक था या करिश्मा, कहना या समझाना मुश्किल है। यह आत्मबोध का विषय है।

मायण पाँच जुलाई को इस सृष्टि में आई और छह जुलाई को चली गई। एक जुलाई के बाद जाने की उसकी अपनी कही हुई बात सत्य साबित हुई। दिन भी क्या चुना! जन्मदिन के अवसर पर दान-पुण्य करके, सत्संग-प्रसाद की पुनीत कार्यवाही पूर्ण कराकर अगले दिन चुपचाप चली गई। शुद्ध रूप में सुरत 'राधा' बनकर अपने 'स्वामी' की ओर खिंची चली गई। वही हर पुनीत आत्मा का अपना निजधाम होता है। एक मायने में देखो तो एक पल में सारा जीवन 'जी' गई। कहते हैं, ब्रह्मा की एक साँस में कितने युग निकल जाते हैं। मानव के अपने समय-बोध और इस सृष्टि के कालचक्र में बहुत अंतर है।

कबीर ने अपने शब्दों में कहा है, ''साधो यह मुरदन का गाँव''' ।'' इस वक्त धर्मराज युधिष्ठिर के द्वारा कहा गया वह वाक्य भी ध्यान आता है कि मानव की सबसे बड़ी गलतफहमी क्या है। वह रोज दूसरे को मरते देखता है, पर सोचता है कि स्वयं नहीं मरेगा। लेकिन जो भी इस सृष्टि में पैदा होता है, उसे जाना ही होता है। चाहे वह देवपुरुष ही क्यों न हो। स्वयं ईश्वर भी जन्म लें तो भी ऐसा ही होगा।

यदि सोचा जाए तो जब कुछ नहीं था तो केवल 'एक' था। स्वयं में लीन अनंत शक्ति का एक केंद्र। जब केंद्र से विघटन हुआ तो 'सेंट्रीफ्यूगल फोर्स'[51] से कई समूह-दर-समूह बने। विकेंद्रित शक्ति ही चैतन्यता से जड़ता तक अपने न्यूनाकार में पहुँची। मान्यता है कि विभिन्न प्रकार के तत्त्वों की संरचना उसी से हुई। इसमें मानव योनि ही उत्तम जानी जाती है। किसी भी एक समूह स्तर से उसके ऊपर के स्तर पर जाने में भी साधना हेतु मानव योनि में आना अपरिहार्य है। अत: मानव योनि में 'आना' व 'जाना' दोनों महत्त्वपूर्ण हैं। इसमें 'जाने' की प्रक्रिया अधिक महत्त्वपूर्ण एवं सारगर्भित है।

मायण अपना जीवन जी गई। सारे उतार-चढ़ाव देख लिये। अपनी छँटाई कर ली। मायण अपनी 'सासू-माँ' का बड़ा आदर करती थीं। काफी जीवन-मूल्य उन्हीं से मिले थे। उनसे ज्यादा अनन्य भक्त अपने ममिया ससुर की थीं, जिनको वह संतों का दरजा देती थीं। यह आस्था का प्रश्न है। इस पर किसी भी प्रकार से लिखने की चेष्टा करना भी 'बेमानी' होगा। उस योग्य हो तो कोई करे।

मायण ने अपनी माँ को दिया वचन भी पूरा किया। 'सीधी जाना, डोढ़ी आना।' अर्थात् घर की बहू बनकर जा रही हो, अब अरथी पर ही निकलना। भाग्यशाली थी, सुहागिन रहकर देह त्यागी। दुनिया में भी सुहागिन रही और जब अपने निज घर गई तो भी 'अपना ली' गई। जाते समय चेहरा शांत व नूरानी हो चला था। दु:ख या वेदना का भाव ही नहीं था।

पिताजी भेंट करके लौटे तो विनीत ने दूसरा विचार रखा, ''शुभ दिन है। आज रात के सत्संग में प्रसाद बटवाएँ। गरीब-गुरबों को अलग से दान भी करवाएँ। अब वक्त पाठ-पूजा व एकाग्रता का है।'' पिताजी स्वयं अपने मत में पैठ रखते थे। समझाने की जरूरत नहीं थी। स्वत: मशगूल हो गए।

मायण के दिवंगत होने की खबर पर लोग सांत्वना व्यक्त करने आए। गमी मनाने आए। पर यहाँ तो कुछ और ही माहौल था। कइयों ने एतराज किया। कुछ अधिष्ठाता लोग भी थे। दुनियावी तर्क के आगे आध्यात्मिक मान्यताएँ रखी गईं। बोले, ''अजीब हैं? कोंडोलेंस[52] देने आए थे, नहीं ले रहे हैं, तो न लें।''

''कृपया सत्संग में जरूर आइएगा,'' जाते-जाते सभी से पिताजी ने निवेदन किया। विनीत के मन में कई खयाल आए। मायण रोज सुबह नियम से प्रार्थना करती थी। रात सोते समय फिर गुहार करती थी। पुकार से गुहार के मध्य ही उसका जीवन बीता। विनीत को लगने लगा कि यह वक्त एकाग्रता एवं प्रार्थना के लिए उत्तम है। इस समय मन भी इधर-उधर नहीं भागता है।

दैहिक अंत्येष्टि के कार्य-कलाप पूर्ण किए गए। मायण के चोले को पंचतत्त्वों के सुपुर्द किया गया। सभी परिजनों ने यह विदाई की रस्म भी पूरी की।

फिर कई दिनों तक सत्संग व पाठ का सिलसिला चलता रहा। जिसने चाहा, इस परिवेश का लाभ उठाकर मनन, चिंतन व भजन भी किया।

सभी निकट परिजनों ने मिलकर भंडारा किया। हजारों श्रद्धालुओं ने दुआ दी। नेक माँगी। एक युग का समापन हुआ।

□

# चौदह

**मायण कहती थी, ''अरे, कुछ लोग तो मालिक स्वयं भेजता है। वे न तो हमारी माँ के 'जाये' हैं न हमारे परिवार में 'ब्याहे', फिर भी मन को छू जाते हैं, अपने लगते हैं।''**

पिताजी की विनीत से मंत्रणा होती रही कि अब आगे क्या होगा। पिताजी को अकेले रहने की आदत डालनी होगी। शुरू के कुछ महीने महत्त्वपूर्ण होंगे, जब तक कि वे मानसिक रूप से यथार्थ को स्वीकार न कर लें तथा अकेले रहने के अभ्यस्थ न हो जाएँ। विनीत अपने हिसाब से अपना अभिमत पेश करता। खुश रहने का एक ही सिद्धांत अचूक है। शारीरिक एवं मानसिक रूप से व्यस्त रहो। सकारात्मक दृष्टिकोण रखो। पिताजी सत्संग में रहते थे। उन्हें इस बाबत कोई खास प्रयास नहीं करने थे। दिन में कई मरतबा सत्संग में जाना, लोगों से चर्चा करना, चिंतन-मनन में मशगूल रहना इत्यादि उनकी दिनचर्या के स्वाभाविक अंग बन गए थे।

इसी बीच विनीत ने अपना एक अन्य विचार पिताजी के समक्ष रखा, ''आप जिस गाँव से मायण को ब्याहकर लाए थे, वहाँ भी जाकर सत्संग-भोग करें। लोगों को जिमाएँ, वहाँ के कोई ऋण होंगे तो चुकेंगे।''

पिताजी ने सहर्ष स्वीकार किया। तारीख तय होकर वहाँ की व्यवस्था शुरू हो गई। मायण के माता-पिता के देहांत के बाद अगली पीढ़ी ने ज्यादा तवज्जो नहीं दी, पर विनीत के नाना के एक अभिन्न मित्र, जो वैद्यराज के नाम से जाने जाते थे, मायण को बहुत प्यार करते थे। बेटी समान मानते थे। बाद में उन्हीं का आसरा अपने पीहर में मायण के लिए बचा था। जिस घर में शादी के पहले मायण ने बचपन गुजारा और जिस घर के 'पोल', 'श्यालों' व 'झरोखों' से उसकी यादें जुड़ी थीं, उनमें ताले लग गए थे। ताले लगानेवाले उनकी चाभियाँ लेकर विलुप्त हो गए थे। यहाँ तक कि अपनी बीमारी से पहले एक शादी में मायण पीहर गई थी तो अपने ही घर में अंदर जाकर रहने की उसकी ख्वाहिश अधूरी रह गई। ताले को थोड़ी देर मूक निहारने के बाद चली आई थी। विनीत भी साथ में था। उसको तनिक दर्द हुआ था, पर मायण ने उस दिन धारणा करके वैद्यराज के घर को ही अपना घर समझ लिया। बाद में यह लीला देखने में आई कि मायण की अपने गाँव से अंतिम 'रस्म-अदायगी' उन्हीं के प्रांगण से हुई। बहुत अच्छा सत्संग हुआ। मीरा का यह भजन भी गाया गया—

''अब पलक उघाड़ो दीनानाथ, हाजिर-नाजिर कब की खड़ी॥
पत्थर की तो अहिल्या ताड़ी, वन के बीच पड़ी,
कहा बोझ मीरा में कहिये, सौ ऊपर एक धड़ी॥''

गाँव भर के लोग भोजन पर भी आए। ज्यों-ज्यों आनेवालों की संख्या बढ़ रही थी, त्यों-त्यों भोजन भी स्वतः बढ़ता जा रहा था। सभी की दुआ वहाँ भी मिली।

विनीत को अपने ननिहाल में सब बचपन की घटनाओं से याद रखते थे, ''अरे, ये वो ही 'भाणूजी'[53] हैं, जो खिड़की से गिर गए थे!'' विनीत को स्वयं तो याद नहीं पर उसने मायण से सुना था। जब वह

छोटा था, तब बड़े झरोखेवाले कमरे की खिड़की से नीचे गिर गया था। मायण भी वहीं थी। ठीक खिड़की के नीचे मायण की अपनी माँ झुककर कुछ काम कर रही थी। मायण जोर से चीखी, 'बाई बिन्यो आवै, पकड़।' घबराई सी नानी ने सिर ऊपर किया और विनीत नानी के हाथों पर झूलता हुआ नीचे पत्थर से जा टकराया। किस्मत की बात थी। हाथों की आड़ ने झटका न्यून कर दिया। चोट आई पर घातक नहीं थी।

यही नानी पूरे गाँव में अपने व्यवहार से लोकप्रिय थीं। शायद मायण को कई गुण जाने-अनजाने में अपनी माँ से ही मिले। नानी की धार्मिक आस्था पक्की थी। मायण अपनी माँ की एकमात्र संतान थी। नानी के कोई बेटा नहीं था। यह वह वक्त था जब बेटा न होने पर औरत को अपने अधूरेपन के लिए ताने सहने पड़ते थे। पुराने समाज की अपनी कुछ विकृतियाँ रही हैं। नानी ने भी अपने परिजनों से बेटा न होने के ताने सुने। मायण यह सब देखकर ही बड़ी हुई थी। और जब मायण के तीन बेटे हुए तो नानी की तो दुनिया ही बदल गई। कहती थी, 'मेरा कोई बेटा नहीं तो क्या, मेरी बेटी ने तीन-तीन लड़के पैदा किए हैं। अब कोई बोल के तो दिखाए।' अपनी माँ के 'अधूरे' होने के तिरस्कृत एहसास से उसको मुक्ति दिलाकर मायण को अपार खुशी हुई थी। इसका वह अकसर जिक्र करती थी। आज उसी गाँव में मायण के बेटे अपने पिता के साथ सभी का साधुवाद करने और उनसे दिवंगत आत्मा के लिए दुआ बटोरने आए थे।

जीव मुक्ति की सभी दुनियावी कार्यवाहियों के बाद पिताजी के सामने एक और कार्य शेष रह गया था। वह था मायण के सामानों का वितरण। यह कार्य वे मुक्त-हस्त से कर रहे थे। सभी को उनके कपड़े, गहने व अन्य सामान बाँट रहे थे। कुछ भावी पीढ़ी के लेन-देन हेतु रखे। कुछ ने यादगार स्वरूप लिया। कुछ ने मूल्य स्वरूप। विनीत कुछ

सोचने लगा। सोचते-सोचते उसे मायण की बातें याद आने लगीं, 'अरे, कुछ लोग तो मालिक स्वयं भेजता है। वे न तो हमारी माँ के 'जाये' हैं न हमारे परिवार में ब्याहे, फिर भी मन को छू जाते हैं। अपने लगते हैं।' विनीत को उन सबका खयाल रहा। वाकई कई ऐसे लोग मायण को स्नेह व आदर देने लगे थे, जो कि न तो उसके 'जाये' थे, न ही उसके परिवार में 'ब्याहे'। उन सबको भी मायण की स्मृतियों की भेंट मिली। मायण तो तन से विदा हो गई और अलौकिक में जा मिली। अब उसके पीछे छूटा उसका सामान भी कितने हाथों में जा रहा था। उसके घर से अनेक घरों में—स्मृति-चिह्न बनकर, एक 'आभास', एक 'बोध' बनकर।

□

# पंद्रह

**मायण बहुत बार कहती रहती थी, ''सुनो सब की, पर करो मन की। यानी अपना हित-अहित स्वयं निर्धारित करो। भेड़चाल न चलो। कोई बैल की तरह शरीर से काम लेता है, कोई मन की चंचलता से नियंत्रित होता है, कोई बुद्धि या तर्क से चलता है। मैं तो अपने अंदर की आवाज सुनती हूँ। वही मर्म है।''**

मायण अब देहस्वरूप में नहीं है। फिर भी उसके अक्श-नक्श उसके परिजनों के समक्ष सजीव हैं।

मायण के जीवन के कई संस्मरण 'बायाजी' को अभी तक याद हैं। बताया जाता है कि मायण की शादी तय होने में 'हलवे' की बड़ी भूमिका थी, जिससे 'ससुरश्री' प्रभावित हो गए थे। बहुत चटकारे लेकर खाया और रिश्ता तय कर दिया। शादी होकर जब बारात लौटी तो दूल्हा व दुलहन के साथ दोनों भतीजियों को एक लोकल शटल-ट्रेन से यात्रा करने को छोड़ दिया गया। दुलहन अपने मायके को याद करके रो रही थी तो दोनों भतीजियाँ भी रोने लगीं। उस समूह में दूल्हा एकमात्र पुरुष था। घबराकर अलग हो गया। स्टेशन पर यह दृश्य बना कि जो आए

वह तीनों लड़कियों को रोते देखकर सहानुभूति प्रकट करने लगा। तब किसी की नजर दूल्हे पर पड़ी और उसे कहा गया कि वह उनके साथ रहे। जब ट्रेन में बैठे तो भतीजियों को मालूम पड़ा कि उनकी 'काकी' पहली दफा ट्रेन में बैठी हैं। उन्होंने चुटकी ली, 'पकड़ के बैठना, नहीं तो गिर जाओगी।' काकी ने झट जवाब दिया, 'तुम दोनों को पकड़े हूँ। गिरेंगे तो साथ गिरेंगे।'

उस समय के सामाजिक परिवेश के अपने ही नजारे थे। पति-पत्नी सबके सामने एक-दूसरे से सीधे बात नहीं करते थे। इन दोनों भतीजियों के मार्फत बात होती, यद्यपि पति-पत्नी अगल-बगल ही क्यों न खड़े हों। 'अपनी 'काकी' से कह दो कि···।' इससे पहले कि भतीजी दोहराती, ऊधर से आवाज आती 'उनसे कहो कि···।'

मायण को शुरू से ही उनकी सास ने लाड़-प्यार से रखा। यहाँ तक कि खाने में गलत छौंक लगा दिया और स्वाद बदल गया तो भी 'सास' ने गलती अपने सिर ले ली, ताकि बहू को जिल्लत न झेलनी पड़े। शुरू-शुरू में जीरे, हींग व राई में मायण फर्क नहीं कर पाती थी। कम उम्र में मायके में कोई भी लड़की कदाचित् इतना न सीख पाती हो। सच पूछो तो, मायण को घरेलू कामों का ज्ञान ससुराल में आने के बाद ही हो पाया था।

एक बार मायण बीमार पड़ी। कोई नहीं था। पिताजी कहीं बाहर नियुक्त थे। मायण के जेठ देखभाल को आए। बीमारी की प्रकृति देखकर मायण को अकेला छोड़ना ठीक नहीं था। असमंजस में थे कि यदि 'बहू' को कुछ हुआ तो वह उन्हें कैसे बुलाएगी। नाम से बुलाने की प्रथा नहीं थी। अत: जेठजी कमरे के बाहर जमीन पर सोए और अपने पाँव में रस्सी बाँधकर एक छोर मायण को पकड़ा दिया। बोले, 'यदि रात को तकलीफ बढ़ जाए तो रस्सी खींच देना।' यह भी एक उदाहरण है,

औपचारिकताएँ निभाते हुए अपनी जिम्मेदारी के निर्वहन का।

इन्हीं जेठजी के तीन पुत्रियाँ थीं। सासू-माँ को यह मन में टीस थी कि कोई लड़का नहीं हुआ। अत: मायण जब ब्याह करके आई तो उससे उम्मीद जुड़ी। मायण की 'प्रसव-क्षमता' को लेकर भी सासूजी थोड़ी चिंतित थीं। काफी खयाल रख रही थीं। ये खिलाया, फिर वह खिलाया। पुराने लोगों के अपने घरेलू नुस्खे थे। अजवाइन व गोंद से लेकर अरंडी के पत्तों तक सभी विधाएँ अपनाईं। किंतु विधाता की लीला थी। इसके पहले कि मायण का नंबर आता, उसकी जिठानी ने पुत्र को जन्म दिया। इस प्रकार घर में चौथी संतान के रूप में 'पुत्र' की प्राप्ति हुई। सब खुश थे। पर बायाजी ने अपनी दादी की चुटकी ले ही ली, ''यदि मान लो लड़का पैदा नहीं होता तो आप मेरी 'काकी' का आगे क्या हश्र करतीं?''

अपनी जिठानी से भी मायण की खूब पटती थी। चाय से लेकर खाने-पीने तक सब काम साथ-साथ करतीं। विवाह-शादियों में गीत गाने में भी मायण पहल करतीं और सब में घुल-मिल जातीं। मायण की अपनी माँ भी पारिवारिक उत्सवों पर नाच-गाने में सक्रिय रूप से भाग लेती थीं। कदाचित् यह संस्कार वहीं से मायण में जनित हुआ। 'बायाजी' अब भी मायण के संस्मरण याद करके पुलकित हो जाती हैं। उन्होंने भी खूब दोस्ती निभाई। इस अनूठे संबंध को पूरे परिवार में अब भी मिसाल के रूप में लेते हैं।

मायण विरोधाभासों के बीच भी अपना सतूना बिठा लेती थीं। पिताजी प्याज-लहसुन खाने में रुचि रखते थे। सासू-माँ को यह पसंद नहीं था। छुपकर नौकर से पति के लिए पीछे आँगन में कुछ-कुछ पकवा देती थीं। मायण उस दिन की घटना अकसर बताती थी, जबकि सासू-माँ को इस तामसिक खान-पान का पता चल गया था। पिताजी

को गालियाँ निकालते-निकालते उनकी माँ ने एक-एक करके रसोई के सारे बरतन सड़क पर फेंक दिए थे। पूरा मोहल्ला इसका चश्मदीद रहा।

सासू-माँ घर छोड़कर जाने लगी थीं। मायण ने तब बहुत बीच-बचाव किया। डाँट भी खाई, पर सासू-माँ को जाने नहीं दिया। पिताजी के कान में कुछ बोली। फिर पिताजी ने अपनी माँ से माफी माँगी और आइंदा के लिए वादा किया। कुछ भी हो, मायण के मुँह से कभी अपनी सास या पति के लिए अपशब्द नहीं निकले।

जब तक शारीरिक बल पर चल सकी तो दुनिया भर में हर एक का काम किया, घर-परिवार से लेकर जान-पहचान में सभी का। जीवन के उतार-चढ़ाव के साथ जब शारीरिक परेशानियों ने जकड़ा, तो दिमागी ताकत पर गतिशील रही। जब ये दोनों ताकतें भी क्षीण पड़ीं तो पूर्णतया आंतरिक 'आस्था' पर अपनी गाड़ी खीचीं। अपने इष्ट के प्रति आस्था को वह प्रारंभ से ही पुष्ट कर रही थी। उसे मालूम था कि आदमी की अपनी कोई बिसात नहीं है। शुरू से ही सभी के प्रति करुणामयी थी। घर पर कोई भी आए तो बिना पानी पिए, बिना कुछ खाए न जाए। घर पर कुछ विशेष आहार अथवा व्यंजन बने तो चाहे थोड़ा ही भेजे, पर अपने निकट परिजनों अथवा पड़ोसियों को अवश्य भेजती थी। कर्म और उसके भुगतान की गणित अच्छी तरह समझती थी।

यहाँ एक रोचक किस्सा याद आता है। मायण का परिवार राजस्थान के शहर अजमेर में रहता था। किराए का मकान था। राजस्थान में पानी की बहुत किल्लत रहती थी। एक नियत अवधि में ही 'म्यूनिसिपैलिटी' के नलों में नापकर पानी आता था। वह भी धीरे-धीरे। एक बाल्टी भरने में बहुत देर लग जाती थी। उस मकान में तीन किराएदार थे। पानी की लाइन लग जाती थी। विनीत को अच्छी तरह ध्यान है। उस दिन पिताजी को खाना मिलने में देर हो गई थी। समय से ऑफिस नहीं जा पाए थे।

पानी को लेकर कुछ झगड़ा हुआ था। काफी तीक्ष्णता उत्पन्न हो गई थी। जो कुछ भी हुआ, भावावेश में हो गया। पिताजी व मकान मालिक में ठन गई। मायण से यह सहन नहीं हुआ। दिन-रात का उठना-बैठना, साथ खाना-पीना। झट मकान मालिक के यहाँ गई। 'भाई साहब-भाईसाहब' कहकर माफी माँगी और बोली, 'अब मेरा मान रख लें। घर आकर मेरे हाथ की चाय पिएँ। मैं इंतजार कर रही हूँ। भाभीजी, आप इन्हें लेकर आएँ।' फिर पलटकर घर पहुँची। पिताजी से कहा, 'अब गुस्सा थूको। ड्राइंगरूम में उन्हें बिठाओ। मैं झट चाय लाती हूँ।'

चाय तो थी ही, साथ में कटलट व मिठाइयाँ भी थीं। मायण ने अपने हाथों से प्लेट भर-भरकर दोनों को खिलाया और फिर से दोस्ती करवा दी। इस तरह के कई अवसर आए जब मायण को यदि लगा कि किसी का दिल दुखा है तो तत्काल मरहम लगाया और आइंदा के लिए मालिक से दया की गुजारिश की। तुरंत ही माहौल को खुशनुमा कर दिया।

मायण पढ़ी-लिखी नहीं थी, पर 'जीवट' थी। मन में जो ठान लिया सो किया। बच्चों को श्रेष्ठतम बनाया। उसकी मान्यता थी कि छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देने से ही अनुशासन की प्रवृत्ति पनपती है। इस प्रकार अपने बच्चों को कई आयाम दे गई। कैसे जीना, आगे बढ़ना, तंगी में भी प्रफुल्लित रहना, छोटी-छोटी खुशियों से जीवन में सुख की अनुभूति करना, अपने इष्ट को सदैव याद रखना, उनके बल पर दुरूह परिस्थितियों में भी अपना रास्ता खोज लेना इत्यादि।

अपने बच्चों को दृढ़ निश्चय करने, लगातार प्रयासरत रहने का सबक सिखाती रहती थी। परीक्षा के दिनों में तो रात-दिन बच्चों की सुख-सुविधा देखती रहती थी। उसे अपना तो खयाल ही नहीं रहता था। विनीत ने उच्च सरकारी नौकरियों के लिए इम्तहान देने को मना किया

तो नाराज होकर बोली थी, 'क्या अपने माँ-बाप का इतना सा अरमान भी पूरा नहीं कर सकते। मैं तो पढ़ी-लिखी नहीं हूँ। मुझे मेरे माँ-बाप ने अंग्रेजी पढ़ाई होती तो क्या का क्या कर डालती।' विनीत ने जब मायण की बात से इत्तफाक किया तो वह भी उसके साथ जुट गई। खुद उसके साथ नियमित जागती रही। विनीत के खाने-पीने का ध्यान रखती। कभी हाथ-पाँव दबा जाती। कभी सिर सहला जाती। उसकी आँखों में सपने तैरने लगते थे। अपने बच्चों के माध्यम से खुद ऊँची उड़ान भरना चाहती थी और वह सफल भी हुई।

थोड़ा-बहुत अंग्रेजी भी सुन-सुनकर बोल लेती थी। 'येस', 'नो' से शुरू कर 'प्लीज' व 'थैंक्यू' तक पहुँच गई थी। एक दिन तो सभी को चकित कर दिया। घर में हँसी के फुहारे छूट गए। पिताजी ने जब अपने नातियों को उस दिन डाँटा था तो जाकर बोली, ''आप बहुत 'ओवर लोड'[54] हो गए हो। मेरे बच्चों को आइंदा टोकेंगे नहीं। नीठ[55] तो घर में हो-हल्ला करने को कोई आया है। अपने जैसे सभी को 'सीरियस' न बनाओ।'' 'ओवर-लोड' के प्रयोग पर सभी नाती चटकारे लेकर मायण से कई दिन तक चुहल करते रहे। ''नानी, देखो अब आप मुझे 'ओवर-लोड' कर रही हो। थोड़ा 'लोड' उतारो।'' फिर सब ठहाका लगा देते थे। यह था मायण का निर्मल और हँसमुख स्वभाव। वैसे यह गौरतलब है कि जिंदगी में सब समस्या 'ओवरलोड' से ही होती है। चाहे वह भौतिकवाद से जुड़ी हो अथवा मानवीय संवेदनाओं अथवा संरचना से।

दीनता व मृदुल व्यवहार उसके जीवन का आधारभूत नजरिया था। कुछ चालाक लोगों के साथ वह कभी-कभी चालाकी भी करती थी, किंतु अपवाद स्वरूप। शायद और कोई विकल्प शेष न रहा होगा, तब बड़ी बुराई को दूर करने के लिए छोटी बुराई का सहारा लिया होगा।

एक बार तो, जब विनीत बड़ा हो गया था, पिताजी के डाँटने पर उसके कंधे पर जाकर रोई थी। जोश में विनीत जाकर अपने पिता से जिरह करने लगा और मायण की तरफदारी की। तभी मायण पलटकर आई और विनीत को चपत रसीद की, 'अपने पिता से बात करने का शऊर नहीं है तुम्हें।'

''शऊर उनको भी तो होना चाहिए। आपको इस तरह से झिड़क देते हैं।'' विनीत ने जवाब दिया था।

''वे कुछ भी करें, तू कौन होता है उनसे प्रश्न करनेवाला, जाओ माफी माँगो।'' मायण ने जोर से कहा।

विनीत बड़बड़ाता हुआ अपने कमरे में चला गया, ''पहले तो आकर मेरे सामने रोती हैं, पिताजी को कोसती हैं और फिर उनकी मदद करो तो उलटा मुझे ही दोषी करार देती हैं।''

मायण का यह पतिप्रेम शायद उस समय विनीत की समझ के परे था। मायण हर माने में प्यार निभाना जानती थी।

मायण के अक्श-नक्श इस बात को दोहराते रहते हैं कि बाहर कुछ नहीं है। जो है, अंदर है। बस एक पथिक, एक राह। अपना रास्ता काटते व खोदते रहो। उस राह पर सबको अपना बोझ खुद ढोना है।

'मालिक की मौज' के सिद्धांत पर अडिग थी। जो हो रहा है, उसकी मरजी से हो रहा है। अत: सहर्ष स्वीकार करती चली गई। विनीत को रह-रहकर याद आता है। दोपहर गेहूँ बीनते-बीनते मायण किस तरह भजन गाती रहती थी··· ''ढाई अक्षर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।'' झठ कोई गुजरा तो मुसकराकर स्वागत किया और मीठा बोलकर अगले के चेहरे पर खुशी ले आई। सबसे बड़ी भेंट आप किसी को और क्या दे सकते हैं कि कुछ समय के लिए राही अपनी सभी व्यथाएँ भूल जाए और नई उमंग सँजोकर आगे बढ़े। मायण के बच्चे भी अकसर उसे

घेरकर बैठ जाते। गेहूँ बीनने की होड़ होती थी। फिर अमरूद या मूली या भुट्ठे या गुड़-चना, जो मिल जाए उसकी 'दोपहरी' होती थी। इस दावत में जब सभी का मूड अच्छा होता था तो वह बहुत कुछ सिखला जाती थी। कहती थी, 'वर्तमान में जियो, भविष्य में नहीं। जो कुछ करना है, अभी करो। जो बोओगे, वही काटोगे।' कभी-कभी कोई दुविधा होती थी तो झट गुरुजी द्वारा लिखी 'अतीत की स्मृतियाँ' नामक पुस्तक कहीं से भी खोल लेती थी। फिर जो भी प्रस्तर निकले, उसमें लिखे शब्दों के मर्म को भाँपकर अपना निर्णय दे देती थी। दिमागी सोच के भी कई गुना आगे जाकर 'आस्था' के पटल पर स्वयं को छोड़ देती थी।

''आप बात को तो समझती नहीं हो, ऐसे कोई तय करता है क्या?'' कई बार विनीत मायण के इस तरह के निर्णयों को अनदेखा करने की चेष्टा करता था।

''देख, आगा-पीछा सोच। और जब बुद्धि साथ न दे, तो अंदर से प्रेरणा ले। यदि आंतरिक अनुभव सुखद है, तो आगे बढ़ जा। सब ठीक होगा।'' मायण इतना कहकर छोड़ देती थी। फिर आगे जिसकी जो समझ।

मायण बहुत बार कहती रहती थी, ''सुनो सबकी, पर करो मन की। यानी अपना हित-अहित स्वयं निर्धारित करो। भेड़चाल न चलो। कोई बैल की तरह शरीर से काम लेता है, कोई मन की चंचलता से नियंत्रित होता है, कोई बुद्धि या तर्क से चलता है। मैं तो अपने अंदर की आवाज सुनती हूँ। वही मर्म है।''

मायण के चले जाने के बाद अंजली भी अकसर विनीत से चर्चा करती थी, ''वह क्या हँसमुख थी। बड़े-बड़े दुःखों को हँसकर झेल जाती थी। विपरीत अवस्था में भी कोई-न-कोई रोशनी तलाश लेती

थी।''

हर विपरीत अवस्था कोई-न-कोई अवसर लेकर आती है, यह मायण का दृढ़ विश्वास था। यदि फिर भी कुछ संदेह रह जाता था तो कहने लग जाती थी, ''महाराज ने कहा है, 'तुम्हरी चिंता मैं मन धारी, तुम अंचित रह धरो पियारा।' जो होगा वे देखेंगे। मैं क्यों चिंता करूँ? मुझे भरोसा है।''

कुछ 'बोल' तो उसके अपने बनकर रह गए थे। उसी के मुँह से अच्छे लगते थे, ''लक्खण[56] देख अपने, दूसरे का जी छोटा करने में तुझे क्या मिलेगा। तू भी सोरा[57] रह, दूजे को भी सोरा रख।'' शायद संत मत से ही उसने यह सीख ली थी। मूल सार यह है कि निरंतर अपने लक्षणों को देखते रहो, दूसरे को हमेशा सुख दो। सुख न दे सको तो दुख भी न दो।

''घर का 'बाइंडिंग फोर्स'[58] थी वह'', उसके देहावसान के बाद उसके दामाद के मुँह से ये शब्द निकले। इससे बड़ी प्रशंसा मार्मिक रूप से संभवत: उस स्तर से नहीं दी जा सकती है।

विनीत ने जब गाँव के एक छोटे हिस्से में अपना मकान बनवाना शुरू किया था तो मायण उसकी योजना बनाती थी। कई सपने देखती थी। विनीत ने उस कुटीर का नाम मायण के नाम पर ही रखा है। मायण की पुण्यतिथि पर विनीत ने उसके लिए अपनी अंतिम श्रद्धांजलि लिखी—

**अब भी आराध्य हो तुम**

एक अनजाना सा चेहरा रह गई हो अब।
परिचय तो बस इतना

कि मेरी माँ बनी थी कभी
जिसकी पीड़ा के अहसास भर से
रीतता है एक संसार मुझ में।।

एक अचीन्हा रूप हो तुम।
तुम्हारे आभास मात्र से
कौंधती है बिजली सी
मेरे भीतर
गूँजती है तेरी हर पुकार
अंदर तक॥

महसूस करता हूँ मैं तुझे।
अकसर देर रात जागते
अपने दुखते हाथ-पाँवों से
जिन्हें सहलाती थी तुम
हर करवट पर॥

तुम जो एकटक निहारती थीं मुझे कभी।
आज लगता है शायद कुछ और चाहती थी जीना
उसी करीने से
पर कभी कुछ कहा नहीं
न कभी उफ, न कोई शिकायत
सारे घर को समेटे रही
सरकंडों के गट्ठर की तरह
और खुद बनी रही
गट्ठर बाँधने का कपड़ा॥

आज तेरे न रहने पर।
याद आते हैं वो शब्द
जब कहा था तुमने—
'याद करेगा जब मैं नहीं रहूँगी
जब कोई नहीं रहेगा यह कहने को—
कब आ रहे हो'॥

सच तो यह है कि—
आस्था के पुंज रूप में
तुम आराध्य हो अब भी
अब मैं भी विलीन हो जाऊँगा उसी में
जहाँ कर चुकी हो तुम
समर्पित अपना अस्तित्व
जो है सर्वथा—
अनंत, अरूप, अनामी॥

□

# सामान्य शब्दावली

(शब्दों के सांख्यकी क्रम में)

1. हड्डियों के क्षीण होने पर दर्द एवं जकड़न
2. विशेषज्ञ द्वारा उपचार
3. सुई के माध्यम से दवा शरीर में पहुँचाना
4. पुष्टिजनक
5. नकारात्मक
6. शारीरिक परीक्षण
7. गाँठें
8. सफाई
9. प्रतिपूर्ति, भुगतान
10. परामर्श
11. उपस्थित रहने का क्रम
12. शोध पर आधारित
13. प्रयोग एवं त्रुटि करके सीखना
14. निर्धारित सूचांक, मापदंड
15. कीटाणु रहित
16. स्वच्छता

17. द्रव्यों का बहाव
18. सामंजस्य, तालमेल
19. दुष्प्रभाव
20. छुटकारा
21. खतरा
22. मियाद पूरी होना
23. परंपरागत
24. प्रमाण-पत्र
25. लालची
26. पुनः समीक्षा
27. खाने की दवा
28. गड़बड़
29. हालत
30. कम मात्रा में
31. प्रतिरोध क्षमता
32. दवा लेने की विधि
33. अम्लीय
34. हलका
35. क्षारीय तत्त्वों का आधार
36. रस, निचोड़
37. गेहूँ की घास, जवारा
38. खाद्य सामग्री के संरक्षण हेतु प्रयुक्त रसायन
39. निरोधात्मक उपचार
40. नसों के जरिए कीमो देना
41. नकारात्मक अनुमान

42. नैतिकता
43. कई काम एक साथ करना
44. यांत्रिक मानव
45. फलता–फूलता
46. दीक्षांत समारोह
47. परिष्कृत, मँजा हुआ, बेहतर
48. पूर्णरूपेण, पूरी तरह से
49. जीने की कला
50. दिवंगत होने की कला
51. केंद्र से विघटित करके दूर ले जानेवाला बल
52. सांत्वना
53. भानजा
54. क्षमता से अधिक ढुलाई
55. मुश्किल से
56. लक्षण, करतूत
57. खुश
58. बाँधकर रखनेवाला बल

□

# तकनीकी शब्दों पर सूक्ष्म नोट

(हिंदी वर्णमाला के क्रम में)

1. अकाय बेरी : यह एक खाद्य पदार्थ है जो कि कैंसर निरोधन के रूप में उपयोगी पाया गया है। यह एक 'एंटीऑक्सीडेंट' तत्त्व है।
2. आटोप्सी : मृत्यु का कारण पता लगाने के लिए शरीर के अंदरूनी अंगों की जाँच।
3. आई.एच.सी. : 'इम्यूनो हिस्टो केमेस्ट्री' एक विशेष प्रकार की स्टेनिंग का तरीका है, जिससे कैंसर की प्रवृत्ति एवं उस पर पाए जाने वाले ई.आर., पी.आर., हरटीन्यू आदि की उपस्थिति का पता लगाते हैं।
4. इमेजिंग : विकिरण जाँच की विधियाँ, जिसमें शरीर के अंदर के अंगों का चित्र लेकर उनके आकार-प्रकार व बीमारियों का निर्धारण करते हैं, यथा—एक्सरे, अल्ट्रा साउंड, सी.टी. स्कैन, एन.आर.आई. आदि।
5. इस्ट्रोजन : एक प्रकार का हारमोन, जो स्तन कैंसर के

फैलने/विकास में सहायक होता है।

6. ई.आर. : इस्ट्रोजिन रिसेप्टर, जो कैंसर की कोशिकाओं के ऊपर पाया जाता है। इसके पॉजिटिव होने पर हारमोन थेरैपी की जाती है।

7. इम्यून सिस्टम : शरीर का विशेष सिस्टम, जो रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिए जिम्मेदार है। यह लिंफो साइट्स (कोशिकाओं) तथा एंटी-बॉडी (रोग प्रतिकारक) दोनों द्वारा होता है।

8. इंजाइम : शरीर की ग्रंथियों से निकलनेवाला विशेष स्राव, जो पाचन में सहायक होता है।

9. एसपेरेगस : यह पौधा जड़ रूप में प्रयुक्त किया जाता है। शरीर की आंतरिक क्षमता बढ़ाने, पाचन तंत्र को दुरुस्त करने तथा शरीर को साफ करने की विशेषताएँ इसमें विद्यमान हैं। कैंसर निरोधन में भी इसे सहायक होना बताया जाता है।

10. एंटेसिड : दवाएँ जो आमाशय के अम्ल को न्यूट्रलाइज (शमन) करती हैं।

11. एंटीऑक्सीडेंट : शरीर में 'ऑक्सीडेटिव' पदार्थ, जो हानिकारक होते हैं, का विनाश करनेवाले पदार्थ।

12. एफ.एन.ए.सी. : कैंसर की जाँच के लिए पतली सुई ट्यूमर के अंदर डालकर सीरिंज द्वारा एक बूँद कोशिकायुक्त मैटेरियल खींचकर माइक्रोस्कोपिक जाँच कराना। इससे गाँठ

के कैंसरयुक्त होने का पता लगाते हैं।

13. ऐसियेक-टी : चार जड़ी-बूटियों के मिक्स्चर से बनी चाय, जो कैंसर के उपचार में दी जाती है।

14. कीमो पोर्ट : कीमोथैरैपी लगाने के लिए चमड़ी के नीचे एक विशेष उपकरण ऑपरेशन के द्वारा लगा दिया जाता है। इसके बाद नसों में बार-बार सुई या इंट्राकैथ लगाने के बजाय कीमो पोर्ट में सुई लगाई जाती है।

15. टॉक्सिक : हानिकारक तत्त्व।

16. टार्गेटेड थैरैपी : कैंसर के इलाज की नवीन पद्धति, जिसमें कैंसर के मोलेक्यूलर कारणों पर केंद्रित इलाज किया जाता है। कम साइड इफेक्ट होता है।

17. पी.आर. : प्रोजेस्ट्रोन रिसेप्टर, जो कैंसर कोशिकाओं के ऊपर पाया जाता है। पी.आर. पॉजिटिव मरीजों में यह हारमोन इलाज में कारगर होता है।

18. प्रोजेस्ट्रॉन : एक प्रकार का हारमोन, जो स्तन कैंसर के फैलने/विकास में सहायक होता है।

19. पी.ई.टी. : पॉजीट्रॉन इमिशन टोमोग्राफी एक प्रकार की इमेजिंग जाँच है, जिससे कैंसर की वृद्धि और उसके शरीर के अन्य भागों में फैलने का पता लगाया जाता है।

20. बायप्सी : ट्यूमर की गाँठों को ऑपरेशन द्वारा निकालकर उसकी जाँच की प्रक्रिया। कैंसर

की पुष्टि करने के लिए यह जाँच की जाती है।

21. फिश टेस्ट : फ्लोरीसेंस इन सीटू हाइब्रिडाइजेशन (FISH) एक कैंसर कोशिका की जाँच की विशेष पद्धति है, जिससे कैंसर की प्रवृत्ति के बारे में पता लगाते हैं। हरटीन्यू की जाँच में प्रयोग होता है।

22. बोनडेंसिटी टेस्ट : हड्डी में कैल्शियम की मात्रा का आकलन, जिससे 'आस्टियोपोरोसिस' (हड्डी का कमजोर होना) का पता लगाते हैं।

23. ब्ल्यू बेरी : यह एक फल है, जो कि कैंसर निरोधन में सहायक होता है।

24. मैमोग्राफी : स्तन का एक खास प्रकार का एक्सरे, जिसके द्वारा उसमें ट्यूमर या कैंसर की गाँठ का पता लगाते हैं।

25. रिसेप्टर : कोशिका के सतह पर पाया जानेवाला यह उपांग सिग्नल्स को ले जाने और कोशिका वृद्धि एवं कैंसर के बढ़ने में मदद करता है।

26. रेडिएशन थैरैपी : विकिरण चिकित्सा की विधि, जिसके द्वारा कैंसर का इलाज करते हैं।

27. लिंफ सिस्टम : वसिका तंत्र, जो शरीर में लिंफ का संचार करता है। इसके माध्यम से कैंसर की कोशिकाएँ लिंफ ग्लैंड में पहुँचती हैं।

28. लिंफ नोड : वसिका ग्रंथि, जहाँ लिंफ प्रवाहित होता है।

कैंसर के इन ग्रंथियों में पहुँचने पर ये बढ़ जाती हैं।

29. हरटीन्यू : कैंसर की कोशिकाओं पर पाया जानेवाला एक रिसेप्टर, जो उसकी घातक प्रवृत्ति को बताता है। इसके पॉजिटिव होने पर हरसेप्टिन नामक एंटीबॉडी (इम्यूनोथेरैपी) द्वारा इलाज करने से फायदा होता है।

30. हार्ट इजेक्शन रेश्यो : हृदय की जाँच, जिससे दिल की पंपिंग शक्ति का आकलन करते हैं। यह रेश्यो 50 प्रतिशत से अधिक होने पर कैंसर की दवाएँ दी जाती हैं।

31. हार्मोनल थेरैपी: हारमोन द्वारा कैंसर के इलाज की प्रक्रिया।

□□□

## About the Author

डॉ. आनंद प्रकाश माहेश्वरी ने श्रीराम कालेज ऑफ कामर्स से स्नातक की डिग्री के उपरांत पोद्दार इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट से एम.बी.ए. पूर्ण किया। पुलिस सेवा में आने के बाद सांप्रदायिक दंगों के प्रबंधन विषय पर अभिनव शोध करते हुए पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

अपने अनुभवों के आधार पर वे हिंदी तथा अंग्रेजी भाषाओं में रचनात्मक लेखन-कार्य करते रहे हैं। अभी तक उनकी आठ पुस्तकें तथा चालीस से अधिक लेख प्रकाशित हुए हैं। उन्हें 'गोविंद बल्लभ पंत' पुरस्कार भी मिला है।

डॉ. माहेश्वरी 1984 बैच के भारतीय पुलिस सेवा के अनुभवी अधिकारी हैं। उत्तर प्रदेश के विभिन्न महानगरों में पुलिस प्रमुख के पदों पर कार्य करने के साथ-साथ उन्होंने कानून व्यवस्था, अभिसूचना, अन्वेषण, सतर्कता एवं सुरक्षा के क्षेत्रों में भी कार्य करके अपनी योग्यता प्रमाणित की है। अति विशिष्ट सेवाओं हेतु उन्हें राष्ट्रपति पदक, वीरता एवं कठिन सेवाओं हेतु पुलिस पदकों से अलंकृत किया गया है। समाज-सेवा के क्षेत्र में भी कई संगठनों से जुड़े हैं।

**संपर्क :** anand.maheshwari21@gmail.com
एनडब्ल्यू-118, स्वामी बाग, आगरा-5

## About the Book

'मायण' मात्र एक कथानक नहीं है। यथार्थ के तानों-बानों पर आधारित यह मार्मिक अभिव्यक्ति जहाँ एक ओर कैंसर के उपचार से जुड़े विभिन्न आयामों पर प्रकाश डालती है, वहीं दूसरी ओर जीवन के उतार-चढ़ाव में निहित मानवीय एवं आध्यात्मिक दर्शन में अपनी पैठ बनाती है। बंधनों की अवस्था से गुजरती हुई यह कथा अपने मूल पात्र को उन्मुक्तता के उस मुकाम पर ले जाती है जहाँ सब अकथ हो जाता है।

कैंसर के साथ भी जीवन को सकारात्मक विचारों और बिना पीड़ा के जिया जा सकता है। यह पुस्तक कैंसर-पीड़ित के परिवार-जनों का भी भरपूर मार्गदर्शन करती है। चिकित्सा क्षेत्र में सक्रिय, स्वास्थ्य-सेवी ही नहीं, कैंसर के बारे में अधिकाधिक जानने की इच्छा रखनेवाले आम जन के लिए भी एक पठनीय उपन्यास।

प्रभात प्रकाशन
ISO 9001 : 2008 प्रकाशक